आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

वर्ष : 63 मूल्य 10 रु. अंक : 9

15 सितम्बर, 2006 भाद्रपद, 2063

अनगिनत व्हरायटीज्,
शुद्धता और
वाजिब हिसाब का
सुनहरा संगम

त्यौहार, शुभ प्रसंग
के आनंद को
द्विगुणीत करनेवाले
मंगल आभूषण

भारतवर्ष का

स्वर्णतीर्थ

३५ वर्षोंसे तत्पर
एवं विनम्र सेवा
ग्राहकों की जिज्ञासा को
पूरा समाधान

ऑन्टीक, ऑक्साइड
जी बी, कास्टींग, कुंदन
पोलकी इ. गहनों के
अनेकों प्रकार

कॅरेटोमीटर
की उपलब्धता

जलगावमें विशेष
निवास व्यवस्था

औरंगाबाद :
आकाशवाणी चौक,
जालना रोड,
☎ ०२४०-३०९७९७९

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

सोना • चांदी • हिरा • मोती

जलगांव :
नयनतारा,
सुभाष चौक
☎ ०२५७-२२२५९०३

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 2636763

संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक
प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182–183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141–2575997, फैक्स–0141–2570753

सम्पादक
डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.
3 K 24–25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291–2730081

सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. RJ/JPC/M-018/2006-08

सदस्यता
स्तम्भ सदस्यता-रू.11000/– संरक्षक सदस्यता-रू.5000/–
वार्षिक सदस्यता- रू. 50/– त्रिवर्षीय सदस्यता- रू.120/–
आजीवन सदस्यता देश में - रू. 500/–
विदेश में- 100$ (डॉलर)
इस अंक का मूल्य रू. 10/–

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

एए परीसहा सव्वे, कासवेण पवेइआ।
जे भिक्खू ण विहण्णेज्जा, पुट्ठो केणइ कयहुई।।
- उत्तराध्ययन सूत्र २.४६

ये सभी परीषह काश्यप ने, दुःख सहने को हैं बतलाए।
जिनमें से कोई कहीं लगे, मुनि कभी पराजय नहीं पाए।।४६।।

सितम्बर २००६
वीर निर्वाण संवत् २५३२
भाद्रपद २०६३

वर्ष ६३ अंक ०९

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	८
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	९
प्रवचन-	समय निकालें अपने लिए	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	१०
	भिखारी एवं भिक्षु में भेद	-महान्अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	१८
	प्रतिकूलता के काँटों में खिलते हैं सफलता के फूल	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.	२०
संघ-समर्पण-	संघ एवं समाज में श्रावक का उत्तरदायित्व	-डॉ. मंजुला बंब	२८
अध्यात्म-	हम दुःखी क्यों होते हैं?	-श्री सम्पतराज डोसी	३२
तत्त्वज्ञान-	दशवैकालिक सूत्र का जानें हम मर्म(१२)	- संकलित	३४
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (३२)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	३७
वैचारिक लेख-	अहंकार के शमन से पवित्र होता मन	-डॉ. श्वेता जैन	४१
चिन्तन-	तीर्थ स्थान और पावन धाम कहाँ	-श्री लालचन्द नाहटा	६३
	भ्रूणहत्या के लिए भोगवाद दोषी	-डॉ. दिलीप धींग	६५
नारी-स्तम्भ-	सामायिक व्रत शुद्ध आराधें	-श्रीमती अकलकंवर मोदी	४४
युवा-स्तम्भ-	जैसे विचार, वैसा व्यक्तित्व	-प्राणिमित्र नितेश नागोता 'जैन'	४६
उपन्यास-	सिद्धगिरि का यात्री (३)	-उपाध्याय श्री केवलमुनिजी म.सा.	४९
बाल-स्तम्भ-	कपिल मुनि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	५३
प्रेरक प्रसंग-	दान हो तो ऐसा	-श्री अभयकुमार जैन	३६
	यथार्थपरक गुणदृष्टि	-श्री जशकरण डागा	४५
	अपनी जड़ों की ओर लौटने का प्रयास	-श्री राजेश मूथा	६२
विचार-	कुछ करें, कुछ न करें	-श्री महेश नाहटा	४३
कविता/गीत-	नर नारायण बन जायेगा(२)	-श्री सुमतिमुनि जी म.सा.	६१
	विग्रह से हैं हानियाँ : अष्टक	-डॉ. महेन्द्रसागर प्रचंडिया	५२
प्रेरक जीवन-	तपस्वी सेवाभावी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा.	-संकलित	६६
सम्पादकीय -	डॉ. धर्मचन्द जैन		५
शिक्षण -	आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड परिणाम	-श्रीमती विमला मेहता	७३
स्वाध्यायी परिचय-	श्री राकेश जी जैन	-श्रीमती मोहनकौर जैन	८३
युवक पृष्ठ-	युवक परिषद् : बढ़ते कदम	-संकलित	७८
नूतन साहित्य-	डॉ. धर्मचन्द जैन		८२
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन		८५
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		१०३

वैराग्य

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

राग को त्याज्य समझकर उसके त्याग के लिए प्रवृत्त होना वैराग्य है अथवा यों कहें कि रागवर्धक सांसारिक प्रवृत्तियों का त्याग करना वैराग्य है। यह राग पर विजय का उपक्रम है। वैराग्य से ही वीतरागता का मार्ग प्रशस्त होता है। बिना वैराग्य के वीतरागता की प्राप्ति असंभव है। वैराग्य में राग को जीतने अर्थात् उससे रहित होने का प्रयत्न होता है वहाँ वीतरागता में राग का पूर्ण अभाव रहता है। जो राग से रहित होता है वह द्वेष से भी रहित होता है। राग-द्वेष का पूर्ण अभाव होने पर ही कोई वीतराग बनता है।

राग और द्वेष ऐसे सूक्ष्मभाव हैं जो दिन-रात हमें घेरे रहते हैं, फिर भी हम उनसे उसी प्रकार अनभिज्ञ बने रहते हैं, जैसे हम हमारे श्वास के आवागमन से अनभिज्ञ होते हैं। एकाग्र होकर श्वास को बिना किसी प्रतिक्रिया के देखने लगें तो हमें श्वास के आने एवं जाने का अथवा उसके तीव्र या मन्द होने का पता चलने लगता है। श्वास की ऐसी प्रेक्षा करने पर श्वास स्वतः सामान्य हो जाता है और हमें शान्ति का अनुभव होता है। इसी प्रकार राग एवं द्वेष के भाव सदैव प्रकट होते रहते हैं, किन्तु हमें बोध ही नहीं होता कि कब राग हो गया और कब द्वेष। हमें अपने अनुकूल वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थिति के प्रति राग होता है तथा प्रतिकूल वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थिति के प्रति द्वेष होता है। राग अथवा द्वेष की प्रवृत्ति सतत चलती रहती है। यह ही हमारे बंधन की एवं दुःखों की मूल कारण है। जिसे बंधन रहित एवं पूर्णतः दुःखमुक्त होना है, उसे राग एवं द्वेष का त्याग करना होता है।

राग वह भाव है जो हमें विषयों में अथवा पर में रंग देता है, फिर असली स्वरूप या सत्य ढक जाता है। राग का रंग वास्तविक सत्य का बोध नहीं होने देता। इसलिए वास्तविक सत्य का बोध करने के लिए वैराग्य का पथ अपनाया जाता है।

व्यक्ति को वैराग्य कभी भी एवं किसी भी कारण से उत्पन्न हो सकता है। आचार्यों ने वैराग्य तीन प्रकार का प्रतिपादित किया है- दुःखगर्भित वैराग्य, मोहगर्भित वैराग्य एवं ज्ञानगर्भित वैराग्य। संसार के दुःखों को देखकर संसार से विरक्ति का भाव दुःखगर्भित वैराग्य के अन्तर्गत आता है। अपने किसी परिजन के मोह में पड़कर दीक्षा या प्रव्रज्या अंगीकार करना मोहगर्भित वैराग्य है। किसी साधु-

साध्वी के मोह से भी दीक्षा लेना मोहगर्भित वैराग्य में सम्मिलित होता है। ज्ञानगर्भित वैराग्य सबसे उत्कृष्ट है। यह वैराग्य ज्ञानपूर्वक होता है। संसार के विनश्वर एवं दुःखरूप स्वरूप को समझकर उसको त्यागना ज्ञानगर्भित वैराग्य है। ज्ञानगर्भित वैराग्य होने पर ही दशवैकालिक सूत्र की निम्नांकित गाथा खरी उतरती है-

जे य कंते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठीकुव्वइ।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चइ॥ -दशवैकालिक २.३

जो अभीष्ट एवं प्रिय भोगों के प्राप्त होने पर भी उनसे पीठ मोड़ लेता है और स्वाधीन होकर भोगों का त्याग कर देता है, वह त्यागी कहलाता है। ऐसा त्याग तभी संभव है जब ज्ञानगर्भित वैराग्य हो। ज्ञान होने पर भोगों के प्रति आकर्षण नहीं होता। उनकी नश्वरता एवं सुखाभासता उसे दुःखरूप प्रतीत होती है और वह उसे आकर्षित नहीं कर पाती।

जो संसार में आसक्त है वह तो राग और द्वेष में ही जीता है। राग में वह इतना बेभान होता है कि उसे अपनी इष्ट वस्तु, अभीष्ट व्यक्ति एवं अभिलषित परिस्थिति में दोष नजर नहीं आता-**'रागी दोषान् न पश्यति।'** वह समत्वदृष्टि से वंचित हो जाता है। मेरा यदि धन से राग है तो मुझे धन के दोष दिखाई नहीं पड़ते। पुत्र में राग है तो उसकी कमियों पर नजर नहीं जाती। मेरा राग पुत्र को बिगाड़ने में कैसे साधन बन रहा है, यह मुझे ज्ञात नहीं होता। राग का आवेश व्यक्ति के विवेक को आच्छादित कर देता है। यही कार्य द्वेष भी करता है। उससे भी विवेक धूमिल हो जाता है। ये दोनों कर्म-बंधन के मूल कारण हैं- **''रागो य दोसो बिय कम्मबीयं।''** राग एवं द्वेष का मूल मोह है। मोह अथवा मूढता होने पर ही राग-द्वेष होते हैं। मोह व्यक्ति को मूढ बनाता है। मूढता में सही प्रतिक्रिया नहीं होती। जो भी प्रतिक्रिया होती है वह या तो रागात्मक होती है या फिर द्वेषात्मक। इसलिए राग-द्वेष को जीतने के लिए समत्व की साधना पर बल दिया गया है। समत्व में रहकर ही मोह को जीता जा सकता है। समत्व में ही विवेक का उदय होता है। वह किसी बहाव में नहीं बहता, अपितु तटस्थ रहकर अपने आपको राग-द्वेषात्मक प्रवृत्तियों से पृथक् कर लेता है। इस साधना के अभ्यास का प्रतिपादन उत्तराध्ययन सूत्र के ३२ वें अध्ययन में करते हुए कहा गया है-

सोयस्स सद्दं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो॥

शब्द श्रोत्रेन्द्रिय का विषय है वह मनोज्ञ (अभीष्ट) प्रतीत होने पर राग का हेतु बनता है तथा अमनोज्ञ (अप्रिय) प्रतीत होने पर द्वेष का हेतु होता है जो इनमें

समत्व रखता है अर्थात् राग एवं द्वेष नहीं रखता वह वीतराग होता है। वीतरागता की साधना का यह अभ्यास सभी इन्द्रियों के विषयों के प्रति हमारी प्रतिक्रिया के निरीक्षण से प्रारम्भ किया जा सकता है। हम अमनोज्ञ व्यक्ति, वस्तु एवं परिस्थिति से उद्वेलित होते हैं तो हम समता में नहीं हैं, वैराग्य का प्रभाव हमारे पर नहीं है तथा इसी प्रकार मनोज्ञ स्थितियों में हम अधिक हर्षित एवं उत्साहित होते हैं तो भी हम समता में नहीं है।

द्वेष की अवस्था का बोध राग की अवस्था के बोध की अपेक्षा सरल है। अपने ही राग एवं द्वेष को जब हम निरीक्षण करने लगेंगे तो द्वेष पहले पकड़ में आएगा। राग उससे सूक्ष्म है वह विलम्ब से पकड़ में आता है। किन्तु जहाँ द्वेष है वहाँ किसी अन्य से राग अवश्य है। इसी प्रकार किसी से राग होने पर किसी से द्वेष भी अवश्य होता है।

वैराग्य के पथ पर कदम बढ़ाने का अर्थ है राग एवं द्वेष पर विजय के लिए तत्पर होना। प्रारम्भ में वैराग्य किसी भी कारण से आया हो, किन्तु वैराग्य को स्वीकार कर लेने पर सजगतापूर्वक राग-द्वेष के निकन्दन का अभ्यास आवश्यक है। संयम की साधना का यही सुफल है।

जैनमुनि की साधना समस्त प्राणियों के प्रति अनुकम्पाभाव पूर्वक अभयदान एवं आत्मीयता प्रदान करने के साथ, मन, वचन एवं काया तीनों की प्रवृत्तियों पर संयम रखते हुए राग-द्वेष के उच्छेदन की साधना है। अनुकूल एवं प्रतिकूल परीषहों के उपस्थित होने पर भी मुनि-धर्म की साधना से विचलित न होना इसी बात का संकेत है कि हम राग-द्वेष के भावों से ऊपर उठ रहे हैं। राग-द्वेष को जीतने के लिए आचारांग में साधु को सदैव अप्रमत्त या सजग रहने की शिक्षा दी गई है। उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें अध्ययन में भगवान् महावीर ने गौतम गणधर से कहा- **"समयं गोयम! मा पमायए।"** जो प्रवृत्तियाँ एवं कार्य संसार की ओर ले जाने वाले हैं, उन्हें छोड़कर साधक स्वाध्याय, ध्यान एवं साधना में ही अपना समय लगाये तो उसमें राग-द्वेष पर विजय की शक्ति का अभिवर्द्धन होना सुनिश्चित है। फिर वैराग्य में वह आनन्द आएगा जो संसार के किसी पदार्थ में नहीं है। जैसे कीचड़ में किए गए स्नान एवं जल के स्नान में भेद है उसी प्रकार सांसारिक भोगों में गृद्ध व्यक्ति एवं वैराग्य के रंग में रंगे साधक में महान् भेद है। वैराग्य किसी से घृणा नहीं अपितु विषयों से विरक्ति है। घृणा को वैराग्य कहना एवं समझना उसका विकृत रूप है, वैराग्य में तो आत्मजय, आत्मानन्द एवं आत्मज्ञान का महानद प्रवाहित होता है।

आगम-वाणी

अधुवं जीवियं णच्चा, सिद्धिमग्गं वियाणिया।
विणियट्टिज्ज भोएसु, आउं परिमियमप्पणो।।
बलं थामं च पेहाए, सद्धमारोग्गमप्पणो।
खित्तं कालं च विण्णाय, तहप्पाणं निजुंजए।।
जरा जाव न पीलेइ, वाही जाव न वड्ढइ।
जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे।।
कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं।
वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हियमप्पणो।।
कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयणासणो।
माया मित्ताणि णासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।
उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।
मायं चज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे।।
कोहो य माणो य अणिग्गहीया, माया य लोहो य पवड्ढमाणा।
चत्तारि एए कसिणा कसाया, सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स।।

-दशवैकालिक सूत्र, अध्ययन ८, गाथा ३४ से ४०

जान विनश्वर जीवन मुनि, और मोक्ष मार्ग का निश्चय कर।
परिमित अपनी आयु को जान, जीए मुनि भोग विरत बन कर।।
देख स्वयं के तन मन बल को, श्रद्धा और स्वास्थ्य श्रमण तोले।
कर ज्ञान क्षेत्र कालादिक का, अपने को उसी तरह जोड़े।।
जब तक न बुढ़ापा पीड़ा दे, और रोग नहीं बढ़ता तन में।
जब तक इन्द्रिय बल क्षीण न हो, तब तक रमण कर लो धर्म में।।
क्रोध मान माया एवं, है लोभ पापवर्द्धक जग में।
जो चाहते हैं अपने हित को, ये चार दोष तज दें भव में।।
क्रोध प्रीति का नाशक है, और मान विनय का है नाशक।
मित्रता की माया नाशक है, और लोभ सभी का है नाशक।।
उपशम से क्रोध भाव जीते, मृदुता से जीते मान सदा।
ऋजुता से माया को जीते, संतोष भाव से लोभ सदा।।
हैं क्रोध मान अविजित जिसके, और माया लोभ बढ़े जिसके।
चारों कषाय ये सींच रहे, जगती में मूल पुनर्भव उसके।।

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- यदि मानव में सच्चरित्रता का बल नहीं हो तो शास्त्रों का ज्ञान, वक्तृत्व-कला, निपुणता और प्रगाढ़ पाण्डित्य व्यर्थ हैं।
- आचार का मूल विवेक है। चाहे कोई श्रमण हो अथवा श्रमणोपासक, उसकी प्रत्येक क्रिया विवेकयुक्त होनी चाहिए।
- समभाव वह लोकोत्तर रसायन है जिसके सेवन से समस्त आन्तरिक व्याधियाँ एवं वैभाविक परिणतियाँ नष्ट हो जाती हैं।
- धर्म उसी के मन में रहता है जो निर्मल हो। माया और दम्भ से परिपूर्ण हृदय में धर्म का प्रवेश हो ही नहीं सकता।
- जिसका वियोग होता है, वह सब पर-पदार्थ है, जिसे आत्मा राग-भाव के कारण अपना समझ लेती है।
- निज गुणों को प्रकट करने में परमात्मस्वरूप का चिन्तन एवं गुणगान निमित्त होता है।
- सामायिक की अवस्था में मन, वचन और काया का व्यापार अप्रशस्त नहीं होना चाहिए।
- योगसाधना का सबसे बड़ा विघ्न लोकैषणा है।
- नाना प्रकार की लब्धियाँ योग का प्रधान फल नहीं हैं। अध्यात्मनिष्ठ योगी इन्हें प्राप्त करने के लिये योग की साधना नहीं करता। ये तो आनुषंगिक फल हैं।
- जब तक अन्तःकरण में पूर्णरूपेण मैत्री और करुणा की भावना उदित नहीं होती तब तक आत्मा में कुविचारों की कालिमा बनी रहती है और शुद्ध आत्मस्वरूप प्रकट नहीं होता।
- राग-द्वेष की परिणति निमित्त पाकर उभर आती है। अतएव जब तक मन पूर्ण रूप से संयत न बन जाए, मन पर पूरा काबू न पा लिया जाय, तब तक साधक के लिये यह आवश्यक है कि वह राग-द्वेष आदि विकारों को उत्पन्न करने वाले निमित्तों से भी बचे। – ***'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार***

प्रवचन

समय निकालें अपने लिए

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्यपाद श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा बंगारपेट में २०,२१ एवं २२ अगस्त २००६ को फरमाए गए प्रवचनों के सारांश श्री जगदीश जी जैन ने लिपिबद्ध किए हैं। -*सम्पादक*

२० अगस्त २००६ के प्रवचन का अंश

अविनाशी, अविकार, अनन्त ज्ञानी, सर्वज्ञ, अरिहन्त-सिद्ध भगवन्तों को नमन, साधु शिरोमणि सन्त-भगवन्तों के चरणों में वन्दन।

देवा विसयपसत्था, नेरइया विविह-संसत्ता।
तिरिया विवेगविगला मणुयाणं धम्म-सामग्गी॥

गति चार हैं, लेकिन श्रेष्ठ धर्म आराधना की सामग्री मनुष्य गति के जीव में है। वैक्रिय व सुन्दर शरीर होते हुए भी देव व्रत-नियम की आराधना नहीं कर सकते। नरक के जीव कितने दुःखी? प्रत्येक श्वास में अनन्त दुःखी। एक-एक पल असह्य वेदना में निकलता है तो तिर्यंचों को धर्म-अधर्म का विवेक प्राप्त नहीं है। जाति-स्मरण ज्ञान वाले को छोड़ वे भी धर्मसाधना नहीं कर सकते। धर्म की सारी साधना करने की गति एकमात्र मनुष्य ही है। मनुष्य गति में भी आयुष्य का बंध करने के बाद अपर्याप्ता व सम्मूर्छिम ऐसे जीव हैं जो अन्तर्मुहूर्त मात्र में काल कर जाते हैं। कई गर्भ में आते हैं, चले जाते हैं, उन्हें जन्म लेने से पूर्व ही मार दिया जाता है। एकेन्द्रिय की मर्यादा वाले धर्मी लोग स्वार्थ व सुख के लिए पंचेन्द्रिय का वध करवाते हैं। उनका वध करवाने के पश्चात् रुदन करते हैं, विलाप करते हैं, पश्चात्ताप करते हैं। कई ऐसे भी हैं जो मनुष्य जन्म पाकर इस संसार में आकर कुछ नहीं करते, जैसे आते हैं, वैसे ही चले जाते हैं।

मनुष्य-भव अनन्य पुण्यशालिता से मिलता है। अनेक रूपों को प्राप्त करता है। एक-एक बोल मिलने में, अनन्त भव करने पड़ते हैं। आर्य क्षेत्र तथा उत्तम कुल वाले कितने हैं? उनमें भी अधिकतर तेल-लून-लकड़ी के चक्कर में हैं, कई अकरणीय कार्य कर रहे हैं, तब इस अनन्त पुण्योदय का क्या यही उपयोग है? आपको क्षेत्र, कुल के साथ पूर्ण इन्द्रियाँ व नीरोग शरीर भी मिल गया, मिलने में कमी नहीं रही, दस के दस बोल मिल गये। पर इस जैसा टेढ़ा

जीव भी देखने को नहीं मिलेगा। यह दुर्लभ बोलों की प्राप्ति करके भी धर्मकरणी से कतराता है। तीर्थंकर के पास जाकर मनुष्य भव माँगों, तब भी नहीं मिलेगा।

यह मानव तन पाकर भी व्यक्ति धन का संचय कर रहा है। लेकिन ध्यान दीजिए यह शरीर, हाथ, पैर, आँख, कान तथा दिमाग ये सब आत्मा के पीछे हैं। एक मिनट पहले जिसे आओ सा, आओ सा कहा, उसी शरीर से प्राण निकलने पर एक मिनट बाद कहने लगोगे- निकालो सा, निकालो सा। हम इस आत्मा का चिन्तन गुणवृद्धि के लिये करते हैं। भगवन्त (आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.) कहा करते थे- दिन में २४ घंटे हैं, उनका बँटवारा करो। यदि शरीर व आत्मा की दृष्टि से बंटवारा करेंगे तो आत्मा के लिये १२ घंटे देना चाहिये, कौन दे रहा है आत्मा के लिये १२ घंटे...? यदि परिवार मिलाकर तीन हिस्से करो तब भी आत्मा के लिये ८ घंटे का समय कौन भाग्यशाली निकाल रहा है? है कोई..... यदि व्यवसाय को और मिला दें तो चार बँटवारा करने पर भी आत्मा के लिए ६ घंटे का समय आ रहा है। क्या आपने समझने का प्रयास किया है? **मूल एवं प्रमुख प्रवृत्ति के लिये ४८ मिनट का समय नहीं, सारा समय शरीर व व्यवसाय में बीत रहा है। जीवन के लिये, परिवार के लिये जो चक्र चल रहा है, वह चलता रहेगा।**

आज आपकी अनन्त पुण्यवानी है। सभी सुन्दर प्रकृति सुलभ है। कर्म की प्रकृति १४८ तरह की है यदि एक भी अशुभ प्रकृति का उदय हो जाय, यों कहिये इस दिमाग में ही कमी हो जाय तो क्या करोगे? कुम्भकर्ण माँगना चाहता था छः महीने जागना और एक दिन सोना। माँगते समय माँग बैठा- छः महीने सोना एवं एक दिन जागना। यहाँ भी ऐसी ही स्थिति है। घर में जागते हैं, व्याख्यान में सोते हैं। जहाँ बंधन का कारण है वहाँ जाग रहे हैं, बंधन काटने के स्थान पर सो रहे हैं। यह तीव्र असाता का उदय है, इसमें सैकड़ों पाप कर लेते हो। जिनके दमा, श्वास या हार्ट की बीमारी है वे एक घंटे में २० बार मार्ग में बैठकर धर्मस्थल पर पहुँचते हैं, वे सामायिक साधना कैसे कर पायेंगे ? कितनी पुण्यवानी है, जिसके बल से सुन्दर एवं नीरोग शरीर मिला है, साधना करलो। यदि यहाँ फुर्सत नहीं है तो फिर तिर्यंच में जाना पड़ेगा।

आपने धर्म का महत्त्व नहीं समझा। क्या कभी समझने का प्रयास किया है। अब नहीं करोगे तो कब करोगे, इसका भरोसा नहीं- आप सभी को आता

है -

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगो कब॥

ये बीत रहे अनमोल क्षण भगवान् से माँगने जाओगे तब भी नहीं मिलेंगे। समय का सदुपयोग करें, कल से पर्युषण आ रहे हैं। मंगल पर्व है, ८ कर्मो का क्षय कर कषायों का छेदन-भेदन कर संवर-निर्जरा में रहें। जो व्यक्ति साधना करना चाहते हैं वे उलझे हुए हैं, जो नहीं करना चाहते उनके पास अनेक बहाने हैं। खुद करे नहीं, करने वालों के बाधक बने हुए हैं। कर्म काटने का आपको जो संयोग मिला है,उसे साधना के द्वारा सार्थक करें। अष्टदिवसीय साधना कर कर्म दलों का विवर्जन करते हुए सिद्धत्व की ओर कदम बढ़े, इन्हीं भावों के साथ....

२१ अगस्त २००६ के प्रवचन का अंश

तीर्थंकर भगवान की अन्तिम वाणी उत्तराध्ययन में भव्य जीवों को समझाने की दृष्टि से बताया है कि- इस संसार में प्राणी के अटकना, भटकना, रूलना इन सबका कारण अज्ञान है। जितने भी अविद्यावान हैं, अज्ञानी हैं उनके लिये जितने भी दुःख हैं, उसका एक मात्र कारण अज्ञान है। अज्ञानी के लिए दुःख तो दुःख रूप है ही, पर सुख भी दुःख रूप हैं। इतने दुःख क्यों? क्योंकि **व्यक्ति स्वयं दुःखों को आमंत्रित कर रहा है।** भोजन छोड़ गुटखा खा रहा है, शीतल जल को छोड़ शराब का सेवन कर रहा है। जो जिसको अच्छा मान रहा है, उसे पकड़ रहा है, लेकिन उस अज्ञानी प्राणी को यह भान नहीं है कि ये सारे कारण आयु क्षीण करने के हैं। उम्र घटाने के हैं, रोग को आमंत्रित करने के हैं। फिर भी वह अज्ञानतावश समझ नहीं रहा। उसका जीवन अंधकारमय एवं दुःखी बनता जा रहा है। वह अपने मानव जीवन की कीमत अज्ञानी बन्दर के समान नहीं पहचान रहा है। रानी का कीमती हार एक बन्दर ले गया। बंदर क्या जाने यह कीमती वस्तु है? रानी ने डण्डे आदि से छुड़ाने का प्रयास किया। बंदर एक से दूसरी डाल पर चला गया, हार छोड़ा नहीं। दासियाँ यह सब देख रही थीं। एक दासी ने कहा- इन नादानों को समझाने का काम हम नादानों का है। वह नीचे गई, बोर फल लाई तथा दो-चार बोर फेंके, बन्दर हार को छोड़ बोरों की तरफ गया, हार सहज छोड़ दिया। बंदर की दृष्टि में बोर कीमती है, हार नहीं। घर में एक छोटा बच्चा हजार का नोट पकड़कर भींचकर फाड़ देता है-

छोटा बालक हजार के नोट की कीमत नहीं जानता? यदि आपके हाथ में वह नोट हो तो.....?

एक ग्वाले को चन्द्रकान्त मणि जंगल में मिली। ग्वाले ने मणि को बकरी के गले में बाँध दिया। एक सेठ ने मणि देखी। ग्वाले से कहा- इस भाटे को दोगे? ग्वाले ने कहा- आप इसका क्या देंगे? सेठ ने कहा- एक पंसेरी गुड़। ग्वाले ने सहर्ष दे दी। वह उस मणि का मूल्य नहीं जानता था। वही मणि आगे जाकर हजार, लाख एवं फिर एक करोड़ में बिक गई। करोड़ रुपये में खरीदने वाले के पिता ने कहा- मूर्ख इसके एक करोड़ क्यों दे दिये? पुत्र ने कहा- पूर्णिमा आने दो, इसका चमत्कार बता दूँगा। पूर्णिमा के दिन जितना भी लोहा था, चन्द्रकान्त मणि के स्पर्श से सोना बना दिया। वह कीमत जानता था। आप कहते हैं अमुक व्याधि दूर हो जाये तो तेला कर लूँगा। तेले की कीमत है- रोग दूर करने की इच्छा। यदि मेरे पोता हो जाय तो अठाई की तपस्या कर लूँगा। हे पुण्यवान्, धर्मानुरागी बन्धु! तुझे क्या कहूँ- तूने कितनी माला फेरी? कितनी सामायिक की? कितनी साधना की? विचार कर **तू ऐसा कर्त्तव्यशील है कि तूने माँ-बाप को दुःख नहीं दिया। तेरे मरने के बाद पुत्रों को कोई तकलीफ न हो- इसलिये तूने पढ़ा-लिखाकर होशियार बनाया। खून के रिश्ते वालों तथा संबंधियों के लिये तूने क्या नहीं किया? तूने सबके लिये सब कुछ किया, लेकिन जीव तू यह तो बता, कि तूने अपने स्वयं के लिये क्या किया? इसलिये इस आत्मा के लिये भी कुछ करने की सोच-** आज आँख बंद हो जाये तो कहाँ जाएगा? आज तक आपके परिवार के, यहाँ तक कि चक्रवर्ती सम्राट के भी काम पूरे हुए? पर थांरो काम कब पूरो होसी। माँ अपने बेटे का पूरा खयाल रखती है, उसे गीले से सूखे में सुलाती है, हवा से बचाने के लिये अच्छा ओढ़ाती है, इतना कर देने से क्या बच्चे की तकलीफ मिट गई। उसके लिये अब चिन्ता की जरूरत नहीं है? सबके लिये करने की सोच रहे हो, लेकिन अपने लिये क्या किया।

धर्मध्यान करने इसलिये आते हो कि हमारे जीवन में भी परिवर्तन आये। **हम दूसरों को सुधारना चाहते हैं। दूसरों को गुस्सा करते देख समझाते हैं, भाई गुस्सा मत करो। दूसरों की गलती का बराबर ध्यान रखते हैं, पर स्वयं का पता नहीं।** दूसरों के घर मरने पर समझाने जाते हो, आपके घर मरने पर मुँह फाड़-फाड़कर रोते हो, क्या प्रवृत्ति बना रखी है? आदमी दूसरों को देखकर चल रहा

है, दूसरों को रास्ता बताने का ढोंग कर रहा है। स्वयं जगे नहीं, जगने की चाह भी नहीं है। दूसरों की राई जैसी गलती सुमेरु नजर आती है। दूसरों की दलाली करते हो, उन्हें हिम्मत बँधाते हो, लेकिन स्वयं जगने का प्रयास क्यों नहीं करते? कमी कुछ भी नहीं है, पर पीढ़ियों की सोच रहती है।

जगाने के लिये यह मंगल पर्व आया है। यह पर्व सार्वभौमिक, सार्वकालिक और सार्वजनीन है, इसी की आराधना करने वाला सिद्धगति प्राप्त करेगा। ऐसा कोई स्थान नहीं है, जहाँ से जीव सिद्ध गति को प्राप्त नहीं हुए हों। सभी कालों में सिद्ध हुए हैं, सभी जगह से मुक्ति होती है। **यदि भीतर में धर्म की साधना हुई है तो मुक्ति हो सकती है।** कई कहते हैं- शरीर की शुद्धि के पश्चात् ही साधना करनी चाहिये। भाई तुम्हारा मुख ५० बार कुल्ले करने पर तो शुद्ध हो जायेगा ना? जब शुद्ध ही नहीं होगा तो इसकी इतनी शुद्धि क्यों करते हो? पाप के प्रत्याख्यान क्यों नहीं करते हो? जहाँ जीवन में जितना अधिक अंधेरा है, उतनी ही इस जीवन की कीमत नहीं। **अज्ञान के कारण से अपना, पराया व पराया अपना नजर आ रहा है।** जब जाओगे किसे साथ ले जाओगे? आये थे तब क्या साथ लाये थे? किसान जब अनाज तैयार कर लाता है तो उसमें से खाता भी है, बेचता भी है, बाँटता भी है, किन्तु बीज के लिए अलग अनाज निकालकर सुरक्षित रखता है।

आपकी प्रवृत्ति है- सुननी सबकी, करनी मन की। आप सब जानते हैं, हाँ में हाँ मिला रहे हैं, २४ घंटे में से ४८ मिनट निकालें। पर्व में ज्यादा निकालें यही ज्ञान है, यही समझ है, यही सही दिशा है। जिन्होंने ८ कर्मों का बंधन तोड़कर, ८ प्रवचन माता का पालन कर मोह दशा को त्यागा है वे ही मुक्तिगामी बने हैं। दान-शील-तप-भावना, ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप रूपी धर्म की आराधना ही मोक्ष मार्ग है। जो पढ़ा-लिखा है वही ज्ञानी नहीं। राम-रावण, कृष्ण-कंस ये भी पढ़े-लिखे थे, लेकिन **जो जितना जानकर जीवन में उतारता है वही ज्ञानी है।** शीलरतन जानकर कुशील में पड़ा है, दया धर्म जानकर हिंसा करता है। करने के लिये, जीवन में उतारने के लिये दया, धर्म जानिये, लड्डू का पूरा अंश नहीं तो दाना व उस दाने का अंश तो खाओ। तीर्थंकर भगवान् ने कहा यह आत्मा थी, है और रहेगी। क्या करनी कर रहे हो? क्या करने की सोची? दूसरों पर उतारने की बजाय स्वयं पर उतार कर **ज्ञानाराधना की ओर सभी के चरण बढ़ें**, इन्हीं भावों के साथ.....

णाणं च दसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एस मग्गुत्ति पण्णत्तो, जिणेहिं वरदंसीहि॥

केवलज्ञानी-केवलदर्शी सर्वज्ञ जिनेन्द्र भगवन्तों ने बताया कि ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप इन चार कारणों से मोक्षगति मिलती है। सभी प्राणी मोक्ष जाने के इच्छुक हैं। इन मोक्ष जाने के साधनों में आज पर्वाधिराज पर्युषण का दूसरा दिवस-दर्शन साधना करने का दिवस है। सम्यग्दर्शन का तात्पर्य शुद्ध श्रद्धा व विश्वास है। लेकिन हमारी स्थिति विचित्र है। जहाँ चमत्कार सुनते हैं, जाने की कोशिश करते हैं, **किन्तु यह प्रवृत्ति संसार बढ़ाने का कारण है। पहले स्वयं को जानो। जिसने स्वयं को जान लिया वह मोक्षगामी हो सकता है। अहिंसा पाप है, सब जानते हैं, झूठ बोलने वाले का कोई विश्वास नहीं करता; मैथुन में आसक्ति वाला जीव नरकगामी होता है। परिग्रह-संसार बढ़ाने का कारण है, जानते हुए भी आचरण कर रहे हैं।** बिना विश्वास के इस संसार में कोई काम नहीं होता। भगवन्त कहते- बस में साथी यात्री शरबत पिला रहा है, रेलगाड़ी में सफर कर रहा साथी मिठाई दे रहा है, मनवार कर रहा है, लेकिन आप गर्दन हिला रहे हैं क्योंकि वह अनजान है, उस पर आपका विश्वास नहीं है। विश्वास वाले को लाखों रुपये दिये जा रहे हैं, अविश्वासी को ५ रुपये की छोटी राशि भी नहीं मिल रही। विश्वास होने पर कुत्ते के भरोसे घर छोड़ देते हैं, अंगजात पुत्र पर विश्वास नहीं है, पता नहीं वह क्या हेराफेरी कर दे। पुत्र की अपेक्षा कुत्ते की विश्वसनीयता अधिक है। विश्वास होने पर लड़की एक घर से दूसरे घर जाती है, जबकि अविश्वास की जगह ५ मिनट के लिये भी भेजना पसन्द नहीं करेंगे। हमारी दृष्टि विश्वास में परिवर्तित होने पर ही ये सारे कार्य हो रहे हैं। जैसा राजा वैसी प्रजा, जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। तात्पर्य- जीव का स्वभाव, विश्वास वाला है। **मिथ्यात्व क्या है- विश्वास करने योग्य पर विश्वास न करना।** विनाशी पर विश्वास करने के कारण भटक रहे हैं, चाहे साधु ही क्यों न हो।

संसार में दुःख देने वाले कई- जहर, रोग व पाप कार्य हैं, उन पर आचरण कर मिथ्यात्व का पोषण कर रहे हैं, यह मिथ्यात्व भयंकर दुःख देने वाला है। आप सभा स्थल से सामायिक कर कपड़े पहनने नीचे जाओ, वहाँ पहले से मौजूद भाई कहे कि आपके कुर्ते में टाटियाँ है तो आप कुर्ते को पहले

अच्छी तरह झड़कारोगे। यदि वह कहे कि इसमें बिच्छू है, तो डण्डे की सहायता से कुर्ते को बाहर ले जाकर, अच्छी तरह झड़कार, पहनने से पहले अच्छी तरह देखोगे। अगर भाई कह दे कि इसमें साँप है तो फिर कुर्ते को हाथ ही नहीं लगाओगे। लेकिन मिथ्यात्व साँप से भी भयंकर है, साँप का काटा हुआ तो महीने भर में ठीक हो जायेगा, किन्तु मिथ्यात्व ने काट लिया तो जन्म-जन्म भटकोगे। मिथ्यात्वी नरक व तिर्यंच में जाता है, सम्यग्दृष्टि जीव नरक-तिर्यंच में नहीं जाता। मिथ्यात्वी असंख्य काल भटकता है। **बड़े आश्चर्य की बात है आपको टॉटिया, बिच्छू व सर्प इन सबसे डर लग रहा है, पर मिथ्यात्व से डर नहीं लग रहा।** घर में गणेश-कुलदेवी की पूजा हो रही है, दुकान में लक्ष्मी की। सांई बाबा, अम्बेडकर, दुर्गा के फोटो दुकान में लग रहे हैं, न जाने आपके कितने भगवान् व देवी-देवता हैं। सात मामा का भानजा भूखा सोता है, गली का कुत्ता भूखा रहता है, एक का कुत्ता डबलरोटी खाता है। अब आप ही निर्णय कर लें आपकी क्या स्थिति होगी।

अरिहंतो मह देवो' कहते हो पर अपने आराध्य के प्रति कितना समर्पण है, कितना विश्वास है। एक प्रसंग आपके पहले से ध्यान में है। एक भाई जो चोर था, प्यास के मारे तड़फ रहा था। सेठ पास से गुजर रहा थां। प्यासे पर अनुकम्पा भाव आया। कहा- मैं तेरे लिये पानी लेकर आ रहा हूँ, तब तक तुम नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं बोलते रहना। प्यास से पीड़ित भाई- सेठ के बताये शब्द भूल गया, वह बोलने लगा 'आणु ताणु कुछ नहीं जाणूं, सेठ वचन परिमाणुं' श्रद्धा व विश्वास से वह बोलता रहा। सेठ के पानी लेकर आने के पहले ही वह आणु ताणु शब्दों को श्रद्धा से उच्चारण करते-करते काल कर देव बन गया। कोटा में एक मुसलमान भाई ने दिवाकर जी म.सा. से नवकार मंत्र सीखा, उसने कई जैनियों के जहर उतार दिये। श्रद्धा से सुदर्शन की शूली सिंहासन में परिवर्तित हो गई। मंत्र वही है लेकिन श्रद्धा में फरक है। मंत्र-तंत्र सब श्रद्धा से काम करेंगे। कान्हड़ कठियारा ने एक दिन पूनम के शीलव्रत के पालन से ही मानव जन्म सिद्ध कर लिया। सत्य पर हरिश्चन्द्र अडिग रहा। पूनिया की एक सामायिक कितनी अमूल्य थी जिसे श्रेणिक नहीं खरीद पाया। अरे भाई त्याग कीजिये, त्याग की ही कीमत है।

आपकी जिस दिन एक धर्म के प्रति श्रद्धा जग जायेगी तो इस पंचम आरे के अन्तिम दिन तक एक भव कर मोक्ष जाने की बात भगवान ने कही है।

भगवान् व धर्म के प्रति श्रद्धाभाव जगे। अरिहन्त सिद्ध की साक्षी से कहते हैं, गीता, बाइबिल, कुरान पर हाथ रख सौगन्ध खाकर कहते हैं- फिर भी झूठ के सिवा कुछ नहीं बोलते हैं। कहाँ है धर्म की महिमा। प्रसंग है एक शारदा नाम की हरिजन बहिन का। उसका स्वभाव कुछ मजाकिया था, उसके चारित्र पर लांछन वाली बात एक मनचले युवक ने लगा दी। उसे अपने शीलव्रत पर लांछन के कारण दोषारोपण के परीक्षण से गुजरना पड़ा। चौपाल पर भरी सभा में उसके हाथ की हथेली पर पीपल के पत्ते के ऊपर लोहे का गरम हथौड़ा रखा गया। शारदा बहिन ने भरी सभा में कहा कि यदि मैंने अपने पति के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष को कभी विकार भाव से देखा हो या स्पर्श किया हो तो मेरा हाथ जल जाये तथा यदि मैं सच्ची हूँ तो यह अग्नि शीतल बन जाये। आपको आश्चर्य होगा वह पीपल का पत्ता भी नहीं जला। यह २०० वर्ष पूर्व की सच्ची घटना है, शारदा को अपने शील पालन पर विश्वास था। **आपको अपने शरीर, घर, परिवार की ममता है एवं सबकी चिन्ता है पर खुद की नहीं।** घंटी बज जायेगी तब क्या करोगे? किस-किस के पास अमर पट्टा है? पाप करते जा रहे हैं, रक्षक कौन है? कौन बचायेगा। कमर बाँधकर पाप कर रहे हो। ओट में चोट, धर्मस्थान में पाप। परमात्मा को ठग रहे हो, किस-किस की आँखों में धूल झोंकोगे? रूई लपेटी आग है। घड़ा जिस दिन भरेगा, तन का कपड़ा भी बेरी हो जायेगा। लाख पुण्यवानी के बाद भी सीता के पाप का उदय आया, रावण उसे लंका ले गया। नल नील ने पुल बाँधा, राम लंका पहुँच गये। हमें भी सुनील-अनिल बंगारपेट ले आये। राम, सीता को अयोध्या लाये, पुनः पाप का उदय, धोबी के शब्द कहने पर फिर वनवास। तो ये साथ लगे कर्म तुम्हें कभी नहीं छोड़ेंगे। **जैसे लाख गायों में बछड़ा अपनी माँ को पहचान लेता है, वैसे ही करोड़ों में भी कर्म आपका पीछा नहीं छोड़ते। भूखे और आश्रितों पर अनिष्ट मत करो।** सबसे पहले धर्म पर विश्वास करो, जिस दिन जग जाओगे, फिर निमित्त की जरूरत नहीं। जैसे नट का डोरी पर, माँ का बछड़े पर ध्यान रहता है, ऐसे ही धर्मी व सम्यग्दृष्टि का धर्म भुलाई में नहीं पड़ता, उसे विवेक हमेशा रहता है। मुँह में मिर्ची रख मुँह नहीं जले ऐसी चाहना, पाप कर सुख चाहने के समान है। दृढ़ श्रद्धा के साथ समस्त व्यवहार करें, धर्म पर श्रद्धा उत्पन्न होगी तभी बन्धु बन्धन नजर आयेंगे। धर्म साधना में श्रद्धा व विश्वास के साथ चरण बढ़ायें। इन्हीं भावों के साथ....

प्रवचन

भिखारी एवं भिक्षु में भेद

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.

संसार के समस्त कलिमल का अन्त करने वाले अरिहन्त भगवन्तों को नमन। इस जगत के जीवों को कल्याण के मार्ग की ओर प्रेरित करने वाले, संयम की साधना में निरन्तर गतिशील रहने वाले जीवन निर्माता आचार्य भगवन्त को नमन....

आहारी से अनाहारी, योगी से अयोगी, रागी से वीतरागी बनाने वाली जिनवाणी में दशवैकालिक सूत्र के माध्यम से धर्म का स्वरूप समझाया जा रहा है। ठाणांग सूत्र के अनुसार धर्म दो प्रकार का है - १. श्रुत धर्म २. चारित्र धर्म। चारित्र धर्म के भी दो भेद बताये हैं- १. आगार धर्म और २. अणगार धर्म। जो श्रावकों के द्वारा पालित है, वह आगार धर्म है। आगार का अर्थ है छूट। इस व्रत पालन में छूट होती है, इसी कारण इसे आगार धर्म कहा गया है। आप अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार जितने समय तक के लिए पालन कर सकने की भावना रखते हैं, उतने समय के लिए त्याग-प्रत्याख्यान कर सकते है। 'गंट्ठिसहियं, मुट्ठिसहियं' आदि शब्द इसी की पुष्टि कर रहे हैं।

अणगार धर्म साधुओं व श्रमणों द्वारा सम्पूर्ण रूप से पालन किया जाता है। इसमें (व्रत पालन में) किसी प्रकार की छूट (आगार) नहीं है। अहिंसा आदि पाँच महाव्रतों का तीन करण तीन योग से यावज्जीवन परिपालन किया जाता है। बारह भेदे तपस्या करने वाला गृहत्यागी साधक अणगार कहलाता है। अणगार को ही भिक्षु कहते हैं। भिक्षु किस प्रकार भिक्षावृत्ति करते हैं, भिक्षु का आहार कैसा होता है, उसके बारे में चिन्तन किया जा रहा है। सयोगी अवस्था तक अणगार को आहार करना पड़ता है। साधु को अन्य सब कुछ मिल जायेगा, लेकिन आहार पानी समय पर मिले या नहीं, यह निश्चित नहीं है। भिक्षा के द्वारा जीवन चलाने वाले को प्रायः भिक्षु कहा जाता है। शास्त्र के अनुसार जो महान् कार्य वृत्ति-प्रवृत्ति में ८ कर्मो का वेदन करता है, वह भिक्षु है। प्रायः माँगने वालों को भिखारी कहते हैं, किन्तु भिक्षु और भिखारी में भेद होता है। भिखारी की भिक्षावृत्ति में तीन वृत्ति या तीन बातें पाई जाती हैं। भिखारी जो माँगता है वहाँ १. पाने की इच्छा होती है २. मिलने पर

अहंकार बढ़ाने वाली होती है। ३. नहीं मिलने पर दुःख का अनुभव होता है, हीनता के भाव आते हैं। इस तरह भिखारी के भीख माँगने में दीनता-हीनता के भाव होते हैं। एक भिखारी ने सोचा माँगते-माँगते जीवन निकल गया, आज तो बादशाह के यहाँ चलना चाहिए। उम्मीद लिये बादशाह के यहाँ पहुँचा। वहाँ भिखारी ने देखा कि बादशाह ही खुद दोनों हाथ फैलाकर भगवान् से स्वयं माँग रहा है। भिखारी ने सोचा- बादशाह ही खुद भिखारी है, वह मुझे क्या देगा यह सोच वापस लौट आया। आप में से कई ऐसे हैं जो माँगने की या अपेक्षा की दृष्टि से यहाँ आ रहे हैं, बाधा से मुक्ति के लिये, लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए मांगलिक चाहते हैं।

भिक्षु अणगार की भिक्षा **'सर्वसम्पन्नचरिय'** होती है। उसमें पाने की लालसा नहीं है, मिल जाये तो ठीक, मिलने पर अहंकार नहीं, नहीं मिलने पर शोक नहीं। अपितु न मिलने पर यह सोचता है कि आज सहज ही तपस्या का अवसर आया है। अणगार की भिक्षावृत्ति नौ कोटि की होती है- वह संरम्भ, समारम्भ एवं आरम्भ करता नहीं, करवाता नहीं और करने वालों की अनुमोदना भी नहीं करता। साधु की आहार वृत्ति भँवरे के समान बतलाई है- जैसे भँवरा फूलों पर जाता है, वह फूलों को बिना कष्ट पहुँचाये अपनी तृप्ति कर लेता है। थोड़ा-थोड़ा आहार फूलों से ले लेता है, उसी प्रकार साधु भी गृहस्थों के घर से थोड़ा-थोड़ा आहार लेकर जीवन निर्वाह करते हैं। साधु स्वाद लेकर आहार ग्रहण नहीं करता। एक तरफ की दाढ़ का भोजन दूसरी ओर की दाढ़ की तरफ नहीं ले जाकर आहार ग्रहण करता है। जैसे सर्प बिल में सीधा जाता है उसी सदृश दाढ़ से भोजन, भोजन-नली से अन्दर तक सीधा पहुँचाता है। साधु का आहार गोचरी बताया है। जैसे-गाय घास के ऊपरी हिस्से का थोड़ा सा भाग ही लेती है, उसी तरह साधु भी गृहस्थों के घर से थोड़ी-थोड़ी मात्रा में आहार लेते हैं। सरस-नीरस, रूखा-सूखा जैसा मिलता है, ग्रहण करते हैं। आगार व अणगार चारित्र धर्म को श्रवण कर आप भी अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार त्याग-प्रत्याख्यान करें। कल से पर्युषण पर्व का पावन प्रसंग उपस्थित हो रहा है। आठ दिन तक हरी-लिलोती का त्याग रखें। ब्रह्मचर्य का पालन करें, कच्चे पानी का प्रयोग नहीं करें, साथ ही आवागमन भी न करें। अष्ट दिवसीय साधना कर आगे बढ़ें। इन्हीं भावों के साथ....

प्रतिकूलता के काँटों में खिलते हैं सफलता के फूल

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

काँटे फूलों के रक्षक होते हैं, वैसे ही प्रतिकूलता सफलता की सर्जक बनती है। इस बात को विभिन्न उदाहरणों से पुष्ट करते हुए मुनिश्री ने जयपुर में २ अक्टूबर २००४ को केन्द्रीय कारागार में जो प्रवचन फरमाया था, उसका लिपिबद्ध रूप यहाँ प्रस्तुत है।

-सम्पादक

आज हम सभी प्रभु महावीर की पावन दिव्य देशना सुनने के लिए धर्मसभा रूप में एकत्रित हुए हैं, जिसे हम धार्मिक संगोष्ठी भी कह सकते हैं। प्रभु की पावन प्रेरणा की विशेषता यह है कि हेय क्या है, ज्ञेय क्या है और उपादेय क्या है, इसे हम समझें। प्रभु ने जन-जन को सत्य से जुड़ने के लिए सच्चे समाधान को प्राप्त करने के लिए समस्यामुक्त जीवन जीने के लिए, जीवन जीने की कला का जो हार्द बताया उसको हमें समझना है। वैसे आज २ अक्टूबर होने के नाते गाँधीजी का जन्मदिन है। वे भी प्रभु महावीर के मूल्यवान उपदेश को आत्मसात् कर महात्मा पद से विश्वविश्रुत हुए।

सच ही है कि व्यक्ति जन्म से नहीं, कर्म से महान् बनता है। यह बात गाँधीजी ने जीवन जीकर चरितार्थ की। अहिंसा की चर्चा करना और उसकी सूक्ष्म व्याख्या करना अलग बात है, मगर अहिंसक जीवन जीना विशेष बात है। जैन सिद्धान्त का प्राण अहिंसा है। प्रभु ने अहिंसा से संबंधित जो प्रेरणा प्राणिमात्र को दी उसमें विश्वशांति का उपाय निहित है। व्यक्तिशः जीवन की प्रसन्नता, पारिवारिक और सामाजिक जीवन की समरस शैली है। अहिंसा एक सशक्त साधन है। कुल मिलाकर अहिंसा एक सर्वोत्कृष्ट सार्वकालिक, सार्वभौमिक समाधान है। गाँधीजी ने उस अहिंसक जीवन शैली को अपनाकर प्रयोगात्मक दृष्टि से देश की आजादी में अहिंसा को माध्यम बनाया।

यह धर्मसभा एक ऐसे स्थान पर हो रही है, जिसे हम कृष्ण मंदिर भी कह

सकते हैं। कृष्ण मंदिर इसलिए कह रहा हूँ कि श्रीकृष्ण का जन्म जेल में ही हुआ। मगर आप देखिए जन्म भले ही जेल में लिया, परन्तु वे भाग्य के भरोसे नहीं रहे, पुरुषार्थ के बल पर तीन खण्ड के अधिपति बने। जेल में जन्म लेने वाले श्रीकृष्ण के जीवन की विशिष्टताओं पर विचार करेंगे तो पायेंगे कि उनकी करुणा और मैत्रीभाव जगप्रसिद्ध रहा। शान्तिदूत के रूप में भी उनकी भूमिका आदर्श व प्रेरक रही।

आज हम कहाँ बैठे हैं या कहाँ जीवन की घड़ियाँ गुजार रहे हैं, इससे हताश और निराश होने की जरूरत नहीं। उदासी का जीवन एक सफल पुरुष की पहचान नहीं है। एक मिट्टी का ढेला भी गिरता है और एक गेंद भी गिरती है, लेकिन दोनों के गिरने में बड़ा अन्तर है। समझ गए होंगे आप अन्तर। मिट्टी का ढेला गिरकर वहीं ठस हो जाता है, मगर गेंद गिरकर भी पुनः अधिक वेग से उछलती है। भूल इंसान से हो सकती है, मगर भूल को भूल न मानना विकृति है और भूल मानना संस्कृति है और भूल सुधारना प्रगति है।

सत्य और हकीकत तो यह है कि भूल के परिमार्जन का और अन्तर के निरीक्षण का एक सुन्दर अवसर उपलब्ध हुआ है। हर घटना गुरु बन सकती है, हर प्रसंग दिशाबोध दे सकता है, बशर्ते हमारा चिन्तन सकारात्मक हो, आशावादी हो, पुरुषार्थवादी हो और तदनुकूल सफल बनने की मन में ललक हो। आप सबको ध्यान ही है श्रीराम का, जो कि पूरी अयोध्या के लाडले थे, जन-जन के हृदय के हार थे, जो सुख-सुविधाओं में पले थे, किन्तु पिताश्री के वचन को निभाने के लिए उन्होंने १४ वर्ष के वनवास को भी सहर्ष स्वीकार किया। बीहड़ वन का नाम सुनते ही, जहाँ हिंसक जन्तुओं का बोलबाला हो, सुख-सुविधाओं का अत्यन्त अभाव हो, कहाँ सोना, क्या खाना इन सबकी जहाँ पूर्ण सुविधाएँ नहीं, वहाँ जाने में व्यक्ति काँप जाता है, मन सिहर उठता है मगर इन सबकी भी श्रीराम ने अनदेखी कर १४ वर्ष के वनवास को भी प्रसन्नता से स्वीकार ही नहीं किया, बल्कि जीवन-इतिहास का एक आदर्श प्रस्तुत किया। क्योंकि उनके पास थी जीवन जीने की कला, पुरुषार्थ पर भरोसा और सकारात्मक चिन्तन।

श्रीराम कोई आकाश से टपके नहीं, वे भी हम सभी की तरह मानव के रूप में जन्में, लेकिन अपने संयम, सदाचार, विनय, विवेक, सत्पुरुषार्थ के बल पर भगवान् के रूप में पूजे गए। कष्टों में आशावादी बनकर जीने वाला संवरता है,

निखरता है, सफलता को प्राप्त कर मूल्यवान बन जाता है। आप और हम अच्छी तरह से जानते हैं कि सोना कुन्दन बनकर कब दमकता है, आटा रोटी बन कर कब सुपाच्य और शक्तिवर्द्धक बनता है, दूध कब पककर मावा बनता है, सीधा सा उत्तर है- आग में तपकर।

जीवन की मूल्यवत्ता कष्टों में से निकलकर और निखरती है। ये कष्ट कष्ट नहीं हैं, जीवन के वरदान हैं। जीवन के अमूल्य उपहार हैं। काव्यपंक्ति में कहें तो-

यदि चाहो कष्टों से मुक्ति, कष्टों का मानो उपकार।
कष्टों से क्या घबराना, ये जीवन के सच्चे उपहार॥
दुःख से दुःखी बनेंगे तो, नहीं मिलती दुःखों से मुक्ति,
भागो न, समता से भोगो, यही समाधि की युक्ति।
घर आए मेहमान यदि, तो नहीं करना रोते सत्कार॥

काव्य पंक्तियों का आशय और हार्द शायद आप समझ गए होंगे। घर आए हुए मेहमान को कोई भी विवेकशील व्यक्ति रोते-रोते भोजन नहीं खिलाएगा, बल्कि जब भोजन कराना ही है तो हँसते-हँसते ही खिलाएगा। बस इसी तरह **कष्टों को मेहमान समझकर हँसते-हँसते जीना है और सहते-सहते हँसना है।** इस पंक्ति को हृदयंगम कर सकारात्मक चिन्तन के साथ शेष समय गुजारेंगे तो यह समय भी और यहाँ रहना भी जीवन के लिए वरदान साबित हो सकता है।

बन्धुओ! मैंने सुना है कि जेल में रहकर ही गाँधीजी, नेहरूजी आदि महामानवों ने विशिष्ट चिन्तनपरक लेखनकार्य कर आर्त्तध्यान से बचते हुए समय का सदुपयोग तो किया ही, आने वाली पीढ़ी को भी एक अनमोल विरासत के रूप में माँ भारती के भण्डार को समृद्ध किया।

जैन इतिहास का एक उज्ज्वल पृष्ठ जो 'चन्दना' के जीवन का एक प्रेरक उदाहरण है कि जो राजघराने में पली थी, सुकोमल थी, जिसने कभी पीड़ा नहीं सही थी, वह एक दिन बाजार में बिक गई। एक सहृदय सेठ का जिसने आश्रय भी पाया, पर वहाँ भी उत्पीड़न का दौर कम नहीं रहा। मूला सेठानी ने मस्तक को मुंडित कर दिया, हाथों में हथकड़ी व पाँवों में बेड़ियाँ डाल दीं और तलघर में भी बंद कर दिया। उन भयंकर प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उसने अपना धैर्य नहीं खोया। निर्भय, निर्द्वन्द्व बन कर आर्त्तध्यान से बचकर उस स्थिति में भी उसने परमात्मा की

भक्ति का, आराधना का अनुकूल वातावरण समझा और जब भविष्य में सब कुछ अनुकूल वातावरण निर्मित हुआ, तो उसमें भी मूला सेठानी का ही उपकार समझा। अर्थात् अपकारी पर भी उपकार की भावना को विकसित किया। हम हमारी सोच को, हमारे विचारों के रूख को मोड़ दें। भविष्य उज्ज्वल बने, उसके अनुरूप पुरुषार्थ का परिचय दें ताकि यह स्थान हमारे लिए वरदान साबित हो सके।

आज हमें इस बात का संकल्प लेना है कि जो क्रोध और अहंकार जीवन के सबसे बड़े खतरनाक शत्रु हैं, वातावरण को विषाक्त बना देते हैं, टकराव व तकरार की स्थितियाँ पैदा करने वाले हैं और तो क्या, भीतर में शत्रुभाव जागृत करने वाले हैं, वैर की गाँठ को मजबूत कर देते हैं, ऐसे अहितकर क्रोध व अहंकार पर नियंत्रण का संकल्प लेना कोई बड़ी बात नहीं है। जैन इतिहास बोलता है खूंखार और खून करने वाला, नित्यप्रति सात व्यक्तियों की घात करने वाला अर्जुनमाली भी सत्संग के प्रभाव से व सुविचारों के संकल्प से जीवन की दिशा को सत्यमार्ग से जोड़ गया व आगे चल कर जन-जन का पूज्य बन गया। इसके अतिरिक्त जगप्रसिद्ध वाल्मीकि का उदाहरण भी इन्हीं बातों को पुष्ट करता है। **आदमी जब शुद्ध संकल्प से प्रेरित होकर सत्य से जुड़ता है तो जीवन में कितना अपूर्व परिवर्तन आ जाता है।** जो वाल्मीकि' रत्नाकर' डाकू के नाम से प्रसिद्ध था और सरे राह लोगों को लूटते हुए भी दयाभाव नहीं लाता था। वह निर्दयता, कठोरता, क्रूरता का पर्याय बन चुका था। लेकिन कहा जाता है ऋषि के इन प्रेरक वचनों से कि "जो कुछ पापार्जन कर रहे हो, वह तुम्हें स्वयं को भुगतना होगा, परिजन की इसमें कोई हिस्सेदारी नहीं होगी" उसके जीवन की धारा बदल गई और भविष्य में कल का डाकू रत्नाकर इतिहास में रामायण का रचयिता आदिकवि वाल्मीकि के रूप में जग विश्रुत हो गया।

बंधुओं! **"बीति ताहि विसार दे, आगे की सुधि लेहि"** इस उक्ति पर जरा गहनता से विचार करें, अतीत को याद कर अश्रु बहाने, उसमें खोये रहने व संकल्प-विकल्पों में समय व्यतीत करने में बुद्धिमत्ता नहीं। **आवश्यकता है अतीत से शिक्षा लेकर वर्तमान में प्रशांतचित्त रहने की व भविष्य को संवारने की।** महावीर का सिद्धान्त है कर्मो को शांतचित्त रहकर भुगतने से उनकी निर्जरा यानी क्षय होता है व संकल्प-विकल्प तथा आर्त्त भाव से इनमें वृद्धि होती है। जरा चिन्तन करें, यहाँ किस कारण से पहुँचे हैं। अधिकांशतः जर, जमीन व जोरू के निमित्त से

अहंकार में ग्रसित हो आवेश में अकृत्य कर बैठने या कुछ न कर पाने की कुंठा में या अन्यथा कारणों से व्यसनों का आश्रय लेकर बेभान होकर किये गये कृत्यों से। पर सोचना है कि जिन निमित्तों की खातिर आप यहाँ पहुँचे हैं वे स्वयं क्षणिक हैं, अस्थायी हैं, निश्चय ही छूटने वाले हैं। जो स्वयं नाशवान हैं, जो स्वयं साथ छोड़ने वाले हैं, वे भला आपका क्या हित करने वाले हैं।

जर या सम्पत्ति यानी लक्ष्मी तो चंचला है, झूले के समान एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे स्थान पर जाने वाली है। धरती तो अखण्ड कुमारिका है, जिसके लिए न जाने कितने हिन्दू कट मरे, कितने मुसलमान गड़ गये।

तन की नारी (नाड़ी)ही न जाने कब रुक जाये, साथ छोड़ दे तो भला घर की नारी (जोरू) आपका कब तक साथ निभायेगी ? क्रोध व अहंकार में अंधा होकर व्यक्ति हत्या, मारपीट, संघर्ष करते वक्त परिणामों का ध्यान रख पाया है, पर याद रखें दुष्कृत्य चाहे याद रहे न रहे पर उसका दुष्परिणाम इस जन्म में ही नहीं जन्म-जन्मान्तर में भी आपका पीछा छोड़ने वाला नहीं है। इसी प्रकार व्यसन सबल नहीं दुर्बल करने वाले हैं। तन-मन व आत्मगुणों को भी निर्बल करने वाले हैं। अनेक साम्राज्य व्यसनों से ढह गये, रावण की लंका व श्रीकृष्ण की द्वारिका जैसे स्वर्णनगर भी दुर्व्यसनों की अग्नि में स्वाहा हो गये।

अहंकार व क्रोध की वृत्ति में न जाने कितने घर बरबाद हो गये। भला रक्त से सना कपड़ा कभी रक्त से साफ हो पाया है? क्या गर्म लोहा भी लोहे को काट पाया है? **वैर से वैर की परम्परा कभी समाप्त नहीं हो पाई है। यह तो ब्याज के समान सदैव बढ़ने वाली है। प्रेम व क्षमा में ही इसे समाप्त करने की शक्ति है। गर्म लोहा, ठंडे लोहे से कट पाता है, रक्त से सना वस्त्र स्वच्छ जल से ही धुल पाता है। कठोर से कठोर पत्थर भी जलधारा के प्रयोग से कट जाता है। अन्तर्हृदय में प्रेम व मैत्री संजोकर धैर्य से सामने वाले को जीतने का प्रयास करें तो निश्चय ही सफलता मिलेगी।** असफलता व कार्यसिद्धि में समय लगने से घबराने व अधीर होने के बजाय धीर-वीर-गंभीर बने रहना है।

गुरु ने शिष्य को धैर्य का उपदेश देते हुए कहा- "बेटा धैर्य रख! धैर्य से सफलता निश्चित है। शिष्य ने पूछा- क्या धैर्य से कुँए में से चलनी द्वारा जल निकाला जा सकता है। गुरु ने कहा- निश्चय ही। शिष्य ने पुनः पूछा- भगवन्! कब तक व कैसे? गुरु ने समाधान दिया- जब तक जल जम कर बर्फ न बन जाय।

विचार करना है कि यह जेल तो एक समयावधि बाद छूट जायेगी पर हमें इस संसाररूपी जेल से भी मुक्त होना है, जन्म-मरण की बेड़ियों से छूट जाना है। इसके लिए आवश्यकता है मर्यादा में स्थिर होकर क्षमा व प्रेम का आचरण करने की। आप सब मर्यादा का महत्त्व जानते हैं। मर्यादा के उल्लंघन का परिणाम कितना भयंकर है। लक्ष्मण द्वारा खींची गई लक्ष्मण रेखा के उल्लंघन का परिणाम सीता जैसी महासती के स्वयं के लिए व उनके निमित्त से परिजनों के लिए कितना कष्टकारी बना। मर्यादा में सुरक्षा है। मर्यादा में सुन्दर भविष्य का निर्माण है। नदी के प्रति मर्यादा में रहने का विश्वास न होने से नदी किनारे कोई मकान नहीं बनाता, किन्तु समुद्र के किनारे विशाल अट्टालिकाएँ मिल जायेंगी। कारण क्या? सागर से गम्भीरता की अपेक्षा की जाती है, सागर सहज ही मर्यादा नहीं खोता। इस जेल में भी आपको किसी न किसी मर्यादा के उल्लंघन के निमित्त से पहुँचना पड़ा है। कारागार की मर्यादा का उल्लंघन करने वाले की कारागार अवधि और बढ़ जाती है, यह भी आप जानते हैं। अब संकल्प लें कि न तो यहाँ की मर्यादा का उल्लंघन करेंगे, न बाहर आने के बाद किसी के प्रति दुर्भावना, दुर्व्यवहार करेंगे। न ही किसी प्रकार का व्यसन सेवन करेंगे। **दूसरों के प्रति बुरा सोचने, बुरा करने पर सामने वाले का बिगाड़ होगा कि नहीं, स्वयं का तो अवश्य ही बिगाड़ हो जायेगा, यह जन्म ही नहीं परभव भी बिगड़ जायेगा।** आज संकल्प ले-

यदि भला किसी का कर ना सको, तो बुरा किसी का मत करना।
अमृत न पिलाने को घर में, तो जहर पिलाते भी डरना॥

आप लोगों के साथ हमारी पूर्ण संवेदना है। आप कारागार के दुःखों से मुक्त बनें, आप व आपके परिजन सुखी व धर्मनिष्ठ बनें, संस्कारशील बनकर आप अपना व अपने परिजनों का भविष्य संवारें व अतीत की कालिमा से मुक्त बन कर ऐसा सुन्दर जीवन जियें कि आपका जीवन दूसरों को यहाँ आने से रोकने का निमित्त बन जाय। कबीरदास जी के शब्दों में-

कबीरा जब तुम जन्मे, जग हँसा तुम रोए।
ऐसी करणी कर चलो, तुम हँसो जग रोए॥

यह तन भी एक कारागृह है तो मन भी एक कारागृह है। हमारे चिन्तनशील मनीषियों ने विचारों के बोझ को भी कारागृह की संज्ञा दी है। वे कारागृह इस कारागृह से भी अधिक खतरनाक हैं। क्योंकि जब-जब मनुष्य अहंकार और क्रोध

से ग्रस्त होता है, भूल जाता है आदमी अहंकार में कि मेरे अलावा भी कोई और है, उन्हें भी जीने का मेरे समान ही अधिकार है और आदमी तब और अधिक भूल कर बैठता है, जिनके लिए मैं लड़ रहा हूँ, क्रोध में बेभान हुआ हूँ, वह सब क्षणिक है, नश्वर है, सब छूटने वाले हैं, क्या लेकर आये साथ में और क्या लेकर जायेंगे।

जिन्दगी भर का कमाया, साथ में क्या जायेगा,
इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जायेगा।
बीतने वाली घड़ी को कौन लौटा पाएगा,
यह सुअवसर खो दिया तो अंत में पछताएगा॥

कहते हैं कि सिकन्दर जब अपनी अन्तिम अवस्था में था तब उसने मन्त्रियों को यह हिदायत दी कि जो धन मैंने संग्रह किया है, उसकी मेरे सामने ढेरी लगा दी जाए और मेरे जनाजे को कंधा वैद्य लोग दें और ताबूत से मेरे दोनों हाथ बाहर रखें। इस तरह दिए गए निर्देश पर एक मंत्री ने पूछा- हुजूर! ऐसा क्यों? तब विश्व विजेता सिकन्दर ने कहा कि-" मैं दुनियाँ को यह बता देना चाहता हूँ कि जिस सिकन्दर ने धन, सत्ता और सम्पत्ति के लिए न जाने कितनी औरतों की माँग का सिन्दूर पोंछ डाला, न जाने कितनी हत्याएँ कर रक्तपात किया और न जाने कितनों को अनाथ बना दिया, घर-बेघर कर दिया, न जाने कितनों को विकलांग कर दिया। आज वही सिकन्दर जिसको वैद्य लोग भी औषध आदि से मृत्यु के मुख से बचा नहीं पाए, इसलिए कंधा दे रहे हैं। धन की ढेरी यहाँ ही धरा पर धरी रह गई और दोनों खाली हाथ लिए इस दुनिया से विदा हो रहा है।" मैं समझता हूँ यह उदाहरण ही पर्याप्त है हमारी मानसिकता और सोच को बदलने के लिए।

जिस इज्जत को आज हम महत्त्व देते हैं और इतना महत्त्व देते हैं कि जरा सा प्रतिष्ठा के प्रतिकूल व्यवहार हुआ नहीं कि हम क्रोध में बेभान हो जाते हैं और अकृत्य कर बैठते हैं बाद में हम समझते हैं कि मैंने ठीक ही तो किया। यह हमारी अज्ञानता की पराकाष्ठा है कि भूल को भी भूल नहीं स्वीकार करके भूल को ही सत्य समझ लेते हैं। कभी प्रतिष्ठा के कारण, कभी धनहानि के कारण, तो कभी परिजन के कारण हम विवादों से घिर जाते हैं और कुछ अपराध कर बैठते हैं, परिणामस्वरूप इस जीवन के लिए भी और अगले जीवन के लिए भी समस्याएँ बढ़ा देते हैं। जरा सोचें, जीवन किसी का भी सदा रहने वाला नहीं है, संसार में जो भी आया है, एक दिन उसे जाना है, किन्तु मनुष्य यह समझता है कि मरने वाले तो दूसरे

हैं, मैं तो सदा शाश्वत रहने वाला हूँ। महाभारत में कहा है-

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यममन्दिरम्।
शेषाः स्थायित्वमिच्छन्ति, किमाश्चर्यमतः परम्॥

कोई भी दिन ऐसा नहीं होता, जिस दिन कोई मृत्यु नहीं होती। प्रतिदिन सैकड़ों, हजारों लोग मर रहे हैं, किन्तु धरती पर जो बाकी बचे रहते हैं, वे समझते हैं कि हम तो सदा रहेंगे, इससे बढ़कर दुनिया में अन्य कोई आश्चर्य नहीं। **आँखों के सामने देखकर भी हम सच को सच नहीं मानते, यह सबसे बड़ा आश्चर्य है।**

'पल की खबर नहीं, सामान सौ बरस का।' उक्ति का आशय समझ गए होंगे। एक दिन मरना है, सब कुछ यहाँ ही धरा रह जाएगा। मृत्यु का दिन भी निश्चित नहीं। अगले पल क्या होगा, कह नहीं सकते। **हमारी सबसे बड़ी भूल यही है कि क्षणिक नाशवान के लिए मर मिट रहे हैं। अपराध कर बैठते हैं, एक दूसरे के प्रति वैर बाँध लेते हैं। बदला लेने की भावना से ग्रस्त हो जाते हैं, क्रूर और हिंसक विचारों से आक्रान्त हो जाते हैं, मर्यादा को भूल बैठते हैं, भविष्य की सोच अँधी हो जाती है।** भूल का अहसास तक नहीं कर पाते हैं और फिर कानून की गिरफ्त में आ जाते हैं। यह हमारी अज्ञानता जन्म-जन्मान्तरों से चल रही है।

बन्धुओं! मनुष्य जन्म की संतों ने, सभी पंथों ने और ग्रन्थों ने एक स्वर से महिमा गाई है। प्रभु महावीर ने कहा है- **'दुल्लहे खलु माणुसे भवे।'** तो तुलसीदासजी ने भी इसी बात को पुष्ट करते हुए कहा- **'बड़े भाग मानुष तन पावा।' ऐसा दुर्लभ मनुष्य जन्म हिंसक क्रूर विचारों से ग्रस्त रहने के लिए नहीं मिला, एक-दूसरे के प्रति विद्वेष की भावना रखने के लिए नहीं मिला, क्षणिक, नश्वर सत्ता, सम्पत्ति एवं समृद्धि के लिए मर-मिटने हेतु नहीं मिला।** यह मनुष्य जन्म तो मिला है परमात्मा की भक्ति करने के लिए, मैत्री-करुणा-सेवा और परोपकार का कार्य करने के लिए। इन पाँच इन्द्रियों का दुरुपयोग न हो, सदुपयोग कर भविष्य को सेवा से और निखारने के लिए यह जन्म मिला है।

हमें नश्वर में नहीं ईश्वर में आस्था रखनी है। यह तन तूफान करने के लिए नहीं, तिरने के लिए मिला है। यह शरीर सजाने के लिए नहीं सर्वज्ञ बनने के लिए मिला है। यह भव भोगने के लिए नहीं भगवान् बनने के लिए मिला है।

इन्हीं मंगलमयी भावनाओं व आप तथा आपके माध्यम से जगत् में प्राणिमात्र की कल्याण कामना के साथ मैं अपनी बात को विराम देता हूँ। ✦

संघ एवं समाज में श्रावक का उत्तरदायित्व

डॉ. मंजुला बम्ब

महान् श्रुतधर आचार्य भद्रबाहु के शब्दों में समस्त जैन वाङ्मय का सार सद्प्रवृत्ति है। **सारो परूवणाए चरणं**- प्ररूपणा (जिन प्रवचन) का सार है आचार। भावना की पवित्रता, उद्देश्य की उच्चता और प्रवृत्ति की निर्दोषता। इन्हीं तीन सूत्रों में समस्त जैन दर्शन का सार समाया हुआ है और यही हमारी आध्यात्मिकता का मूल आधार है। यदि कोई आचार्य अपने शिष्य में इन सूत्रों में से किसी भी सूत्र की शिथिलता देखता है तो उनका यह उत्तरदायित्व बन जाता है कि यथासंभव शिष्य में उक्त तीनों सूत्र प्रस्फुटित हों, इसके लिए वे शिष्य को बार-बार सचेत और सजग करते रहते हैं। मगर जब गुरु शिष्य को मानवता के साधारण गुणों से भी रिक्त देखता है, बाहर में कुछ और अन्दर में कुछ और ही पाता है तब आवश्यकता पड़ जाती है उसे अनुशासन की भट्टी में तपाकर सोना बनाने की। विरले ही होते हैं जो उस अनुशासन की भट्टी में तपकर खरे सोने का रूप ले पाते हैं।

अनुशासन, संगठन की स्थिरता, सुव्यवस्था, संघ-संरक्षण, संवर्द्धन एवं सर्वतोन्मुखी विकास व अभ्युत्थान का सामूहिक एवं मुख्य उत्तरदायित्व आचार्य पर रहता है। वे अनुशासन द्वारा संघ और शिष्य दोनों को सुन्दर एवं श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि **"आमकुम्भा इव वारिगर्भाः"** कच्चे घड़े में यदि अमृत भर दिया जाए तो घड़ा भी नष्ट हो जाता है और अमृत भी। हम लोग भी यह सुनते आए हैं कि सिंहनी का दूध सोने के पात्र में टिकता है, योग्य में योग्य का संगम ही सुन्दर एवं श्रेष्ठ होता है- **"चकास्ति योग्येन हि योग्य-संगमः।"**

यदि शिष्य को अयोग्य से योग्य बनाने के लिए प्रायश्चित्त एवं अनुशासन का पाठ पढ़ाया जाये और वह शिष्य गुरु द्वारा प्रदत्त प्रायश्चित्त एवं अनुशासन की अवहेलना करता हुआ स्वच्छन्द रूप से साधुचर्या का पालन करे तो उसे संघ से निष्कासित कर दिया जाता है, क्योंकि घाव छोटा-सा

मालूम पड़ता है, मगर लापरवाही हो जाए तो सड़कर नासूर बन जाता है और जिस हिस्से में हो जाता है वह उस हिस्से को नष्ट कर देता है।

अग्नि की चिंगारी जरा सी दिखाई देती है।अगर वह चिंगारी किसी महल में लग जाए तो सारे महल को जलाकर नष्ट कर देती है। इसी तरह श्रमण का शिथिलाचार श्रावक वर्ग को चाहे थोड़ा सा दिखाई देता है पर धीरे-धीरे उसका असर बढ़ता जाता है। इसलिए आचार्य अनुशासन के अंकुश से शिष्य को समझाने का प्रयत्न करते हैं, बार-बार पिता तुल्य प्यार से समझाते हैं। गुरु-शिष्य का संबंध पिता-पुत्रवत् होता है। गुरु की हार्दिक अभिलाषा होती है कि उसका शिष्य सजगतापूर्वक श्रमणाचार का पालन करते हुए संघ व समाज में आदर्श प्रस्तुत करे। मगर जब कोई शिष्य लम्बे समय से अपनी प्रवृत्ति में बदलाव के लिए बार-बार अवसर दिये जाने पर भी सुधार का प्रयत्न नहीं करता ,तो गुरु उन्हें प्रायश्चित्त एवं अनुशासन के अंकुश से समझाने का प्रयत्न करते हैं लेकिन वह श्रमण आचार्य द्वारा प्रदत्त प्रायश्चित्त की अवहेलना करता है, व्यवहार में कठोरता लाता है तो उसे संघ से निष्कासित कर दिया जाता है।

इसके विपरीत संघ के ही प्रबुद्ध श्रावकों द्वारा शिथिलाचार को बढ़ावा देने हेतु समर्थन किया जाता है तो वह महामोहनीय कर्मबंध का कारण है। इससे संघ में अशान्ति एवं वैमनस्य होने की संभावना रहती है। इससे संघ का विकास एवं उत्थान अवरुद्ध हो जाता है।

चतुर्विध संघ का ही अंग 'श्रावक' यदि सच्चा श्रावक है तो हितबुद्धि से संघ को जोड़ने का कार्य करेगा तोड़ने का नहीं। आज के युग में संघ को समर्पण भाव से सुदृढ़ स्थिति में, आध्यात्मिक उन्नति के सोपान पर ले जाने वाले श्रावक थोड़े हैं और शिथिलाचार को प्रोत्साहन देने वाले अधिक मिलते हैं। वे इस बात को भूल जाते हैं कि शिथिलाचार एवं संघ से निष्कासित संत को प्रोत्साहन देने से संघ व समाज में विघटन, अशान्ति, विरोध, वैमनस्य एवं कलह का वातावरण होने की संभावना रहती है।

यदि किसी संत के निष्कासन से पूर्व या पश्चात् समाज का कोई भी घटक उसका पक्षधर बनता है तो निश्चित रूप से वह घटक साधना पथ से भटके हुए विनय-विवेकहीन उस साधु की विपरीत प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है।

साथ ही आगमानुसार महामोहनीय कर्मबंध का भागी भी बनता है।

धर्मरत्न प्रकरण गाथा ३३ में श्रावक के छह गुणों में से एक गुण बताया है कि **"श्रावक गुरु की शुश्रूषा करने वाला होता है।"** इस गुण पर गहनता से विचार करें कि क्या हम गुरु-सेवा और गुरु-आज्ञा को शिरोधार्य कर अपने उत्तरदायित्व का समर्पण भाव से भलीभाँति निर्वाह कर रहे हैं? गुरु द्वारा आज्ञा से बाहर विनयहीन साधु का पक्ष लेना, इस अपेक्षा से श्रावक के गुणों का घात करता है। सच्चा श्रावक भगवान् महावीर द्वारा बताए गए श्रावक धर्म का दृढ़ता से पालन करता है। जहाँ शास्त्रों में एकल विहार के अनेक दोष बताए गये हैं तो इस स्थिति में एकल विहारी साधु को बढ़ावा देना उचित नहीं। ठाणांग सूत्र के आठवें ठाणे में एकल विहार प्रतिमा के आठ स्थान बतलाए गए हैं, वर्तमान में वे समस्त स्थान एक साधु में होना असंभव हैं, क्योंकि उसमें चौथे स्थान में बतलाया है कि वह कुछ कम दस पूर्व तथा जघन्य नवमें पूर्व की तीसरी वस्तु को जानने वाला होता है। ऐसी स्थिति में एकल विहारी साधु को प्रोत्साहित करना कहाँ तक उचित है?आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. ने श्रावकों को उनके कर्त्तव्य याद दिलाते हुए फरमाया है-**"श्रावक-श्राविकाओं को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उनका अनुराग किसी भी दिशा में धर्मानुराग की सीमा का उल्लंघन न करने पावे।"** विवेकशील श्रावक-श्राविकाओं को साधु-साध्वियों का चरित्र निर्मल रखने में पूर्ण सहयोग देना चाहिए। श्रावक-श्राविकाओं में यदि विवेक नहीं होगा तो साधु-साध्वियों का संयम भी उच्च और निर्मल नहीं रह सकेगा। इसलिए श्रावक-श्राविकाओं में विवेक का होना तथा उनका अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रहना परमावश्यक है।

शिथिलाचार को बढ़ावा देकर विपरीत वातावरण का निर्माण करने वाले भी हम स्वयं ही हैं और प्रशस्त परम्पराओं की प्रतिष्ठा करने वाले भी स्वयं ही हैं। विपरीत वातावरण बनाने में यदि हम स्वयं ही अग्रगामी बनते हैं तो दूसरों को भी प्रोत्साहन मिलता है। इसके बदले यदि हम संघ-समर्पण और गुरुसेवा को अपने जीवन का चरम लक्ष्य बनाकर चलें तो हमारा भी भला होगा और दूसरों का भी भला हो सकता है।

संघ मुख्य है व्यक्ति मुख्य नहीं। संघ सदा रहेगा, व्यक्ति सदा नहीं

रहेगा। व्यक्ति चाहे साधु हो, साध्वी हो या श्रावक-श्राविका। व्यक्ति का रक्षण संघ द्वारा होता है। नन्दीसूत्र की स्थिरावली में तीर्थंकर भगवान् की स्तुति रूप गाथा तो तीन बताई, पर संघ की महिमा आठ उपमाओं से पन्द्रह गाथाओं में बतायी गयी है, संघ मेरु है, संघ नगर है आदि-आदि।

भगवती सूत्र में संघ को तीर्थ कहा है- **"तित्थं खलु चाउवण्णे समणसंघे"** श्रमण प्रधान चतुर्वर्ण संघ ही तीर्थ है, तारने वाला है। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. ने श्रावक को संघ-रक्षक बतलाते हुए कहा है कि श्रावक संघ का रक्षक होता है और रक्षक का कर्त्तव्य है कि वह साधु-साध्वी के आहार-विहार, शिक्षा-दीक्षा और ज्ञान-ध्यान में निर्दोष मार्ग का सहयोगी बने। साथ ही साधु-साध्वी के संदर्भ में निर्णय का अधिकारी आचार्य को मानते हुए आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. ने फरमाया है कि - **"संघ में कोई साधु गलती कर जाय तो संघाधिकारी आचार्य यथोचित प्रायश्चित्त देकर शुद्धि करता है। कभी किसी को अलग भी करना होता है तो यह आचार्य के अधिकार की बात है। श्रावकगण का कर्त्तव्य इस आदेश की यथोचित पालना करना मात्र है, इसमें दखल देना श्रावक के अधिकार की बात नहीं है।"** (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ ४५३)

अतः पूर्वोक्त समस्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम संघाचार्य के द्वारा लिए गए निर्णय को शिरोधार्य कर स्वयं संघ-सेवा को अपने जीवन का मूल ध्येय मानते हुए श्रावकाचार का निरतिचार रूप से पालन कर साध्वाचार में भी सक्रिय सहयोगी बनें। मन, वचन, काया के द्वारा समर्पण भाव से संघ-सेवा एवं गुरुभक्ति को हृदयंगम करके जीवन को पवित्र एवं निर्मल बनाया जा सकता है। क्योंकि संघ-सेवा कर्म निर्जरा का महान् कारण है। *-३, हेममंजुल, रामसिंह रोड़, होटल मेरुपैलेस के पास, जयपुर (राज.)*

आवश्यक सूचना

जिनवाणी का आगामी अक्टूबर एवं नवम्बर अंक "प्रतिक्रमण विशेषाङ्क" के रूप में संयुक्तरूपेण प्रकाशित होगा। नियमित अंक दिसम्बर २००६ में आपके करकमलों में पहुँचेगा।

-प्रेमचन्द जैन, मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

हम दुःखी क्यों होते हैं?

श्री सम्पतराज डोसी

जीवन में जितने भी कार्य किये जाते हैं वे प्रायः सुख के लिये ही किये जाते हैं, परन्तु सुखी बहुत विरले ही होते हैं। साधु, वीतरागी ही सुखी होते हैं, अतः कहा है-

नहि सुही देवया देवलोए,
नहि सुही पुढवीपई राया।
नहि सुही, सेट्ठि सेणावई य,
एगन्त सुही, साहू वीयरागी॥

न तो देवलोक में देवता सुखी है, न पृथ्वीपति राजा सुखी है, न सेठ और न सेनापति सुखी हैं, एकान्त रूप से वीतरागी साधु ही सुखी होते हैं।

आज के युग में संसार में पैसा बढ़ा है। बुद्धि भी पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ी है और सुखों के साधन तो सबसे ज्यादा बढ़े हैं। फिर भी अशान्ति और उसके फलस्वरूप दुःख ही बढ़ा है, इसीलिये ज्ञानियों ने तो इस भौतिक सुख को सुखाभास ही कहा है।

चढ उतंग जहाँ से पतन, शिखर नहीं वो कूप।
जिस सुख अन्दर दुःख बसे, वो सुख भी दुःख रूप॥

संसार में मुख्य तौर पर चार प्रकार के दुःख होते हैं- आर्थिक, शारीरिक, पारिवारिक और मानसिक। इन चारों में से जब जिसकी अनुकूलता होती है हम राजी या प्रसन्न होते हैं। जिसे ज्ञानियों ने राग कहा है और जब-जब भी अनुकूलता में कमी होती है या प्रतिकूलता होती है तब-तब हम दुःखी एवं अशान्त होते हैं।

दुःख चाहे किसी भी प्रकार का हो वह असाता वेदनीय का फल माना गया है तथा सुख भी चाहे आर्थिक हो, पारिवारिक हो, शारीरिक हो या मानसिक हो सभी भौतिक सुखों को साता वेदनीय के उदय का फल माना गया है। आम व्यक्ति तो दुःख में दुःखी एवं अशान्त होता है।

गहराई से देखने पर मालूम होता है कि वर्तमान में जिसको जिस व्यक्ति या वस्तु से राग या ममत्व होता है उसको उस वस्तु या व्यक्ति के न मिलने पर बहुत दुःख होता है। यह दुःख अधिक राग होने पर अधिक और कम राग होने पर कम होता है।

गजसुकुमाल मुनि को वेदना (शारीरिक कष्ट) तो जबरदस्त थी, फिर भी वे अशान्त नहीं हुए। अगर अशान्त हो जाते तो उनको केवलज्ञान नहीं हो सकता था। जैसे-जैसे शरीर के मोह को क्षय करते गये त्यों-त्यों उनकी शान्ति भी घटने के बजाय बढ़ती गई।

मुनि गजसुकुमाल के सिर पर अंगारे रखे जाने पर भगवान अरिष्टनेमिनाथ तो दुःखी नहीं हुए, क्योंकि वे राग-द्वेष एवं मोह को जीत चुके थे और गजसुकुमाल मुनि वर्तमान में मोह को जीत रहे थे। परन्तु श्रीकृष्ण मोह के कारण दुःखी हुए तभी तो उनको सोमिल पर क्रोध आया।

सारांश यह निकलता है कि सुख-दुःख वेदनीय कर्म के उदय से होते हैं। राग-द्वेष एवं मोह को कम करते-करते समूल नष्ट करना ही सच्ची साधना है। राग-द्वेष एवं मोह की जैसे-जैसे कमी होती है वैसे-वैसे वर्तमान जीवन में सुख और शांति बढ़ती जाती है। अगर व्यक्ति इस रहस्य को समझ ले तो वह दुःख की परिस्थितियों में भी दुःखी नहीं हो सकता है।

दुःख की घड़ियों में व्यक्ति स्वयं के विचारों को बदलने के बजाय प्रायः परिस्थितियों को सुधारने का प्रयास करता है। जो उसके हाथ की या वश की बात नहीं है। परन्तु विचारों की दशा को बदल कर दुःखी नहीं होना यह उसके हाथ की बात है और यही सच्चा धर्म एवं सही साधना है। हम भी ऐसी साधना कर दुःखी होने से बच सकते हैं।

-संगीता साड़ीज, डागा बाजार, जोधपुर

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जा के हृदयै साँच है, ताके हृदयै आप॥
जहाँ दया तहाँ धर्म है, जहाँ लोभ तहाँ पाप।
जहाँ क्रोध तहाँ पाप है, जहाँ क्षमा तहाँ आप॥

दशवैकालिक सूत्र का जानें हम मर्म(१२)

प्रश्न२३.साधनापरक वाक्यों को इंगित करने वाले सूत्र, गाथा(कहीं गाथा, कहीं उसका चरण)लिखकर व्याख्या कीजिये-

(९) उदय के प्रवाह में प्रवाहित नहीं होना संवर है।

उत्तर- दशवैकालिक सूत्र ४/१९ में कहा गया है कि जब साधक बाह्य आभ्यन्तर संयोगों का त्याग कर मुण्डित होकर अणगार धर्म में प्रव्रजित होता है तथा आने वाले कष्टों को समभाव से सहन करता है, तभी वह उत्कृष्ट संवर रूप अनुत्तर धर्म का स्पर्श करता है। दशवैकालिक सूत्र १०वें अध्ययन की ५वीं गाथा- **'पंच य फासे महव्वयाइं पंचासवसंवरे जे स भिक्खू'** अर्थात् जो पाँच महाव्रतों का पालन करता है तथा पाँच आस्रवों का निरोध करता है, वह सद् भिक्षु है। उदय के प्रवाह में प्रवाहित होना आस्रव है। आस्रव का निरोध ही संवर है।

उत्तराध्ययन सूत्र के १५वें अध्ययन की गाथा १४ में कहा है- जो साधक इस लोक में देवों, मनुष्यों और तिर्यंचों के अनेक प्रकार के भयंकर, महाभयोत्पादक और महान् शब्दों को सुनकर भी भयभीत नहीं होता, मोक्षमार्ग से च्युत नहीं होता, वही भिक्षु है।

दूसरे परीषह अध्ययन में भगवान् ने कहा- धर्म पालन करते समय कदाचित् पूर्व संचित कर्मों के उदय से भूख, प्यास, रोगादि कष्ट उत्पन्न हो जाएं तो साधक धर्मपथ से विचलित न होते हुए, निर्जरा के लिये उन्हें समभावपूर्वक सहन करे। परीषह सहन का अर्थ- शरीर, मन इन्द्रियों को मारना या व्यर्थ कष्ट देना नहीं है, न ही आये हुए कष्टों को लाचारी से सहना है और न प्रतिकूलताओं से घबराकर इधर-उधर भागना है, न वातावरण के प्रभाव में बहना है और न संयम मर्यादाओं को भंग करके उनका प्रतिकार करना है, न ही कष्टों से बचने का कोई गलत दोषपूर्ण मार्ग अपनाना है। किन्तु कर्मों के उदय से जो भी अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति प्राप्त हुई है, उसमें प्रवाहित न होते हुए समभाव रखना है, क्योंकि किए हुए कर्म के फलस्वरूप ही परिस्थिति का निर्माण होता है, उदय भाव में सहज रहना ही निश्चय धर्म है। दशवैकालिक सूत्र चूलिका २ गाथा २/३-

अनुस्रोत गमन...अर्थात् स्रोतों के अनुकूल गमन संसार का कारण है और प्रतिस्रोत गमन....अर्थात् स्रोत से प्रतिकूल गमन मुक्ति का कारण है। अनुकूलता की दासता राग और प्रतिकूलता का भय-द्वेष है, आर्त्तध्यान है, दोनों में सम रहना ही संवर और धर्म है।

(१०) आत्मा को आत्मा के द्वारा जाना जा सकता है।

उत्तर- **सव्वे सरा नियट्टंति, तक्का तत्थ न विज्जइ।**
मई तत्थ न गाहिया, ओए अप्पइट्ठाणस्स खेयण्णे। -आचारांग १/५/६

अपनी आत्मा से अपनी आत्मा को जानना ही सम्यग्दर्शन है। आत्मा को मात्र आत्मा द्वारा ही जाना जा सकता है। **'बियाणिया अप्पगमप्पएणं.....'** दशवैकालिक सूत्र ९/३/११ तथा **'संपेहए अप्पगमप्पएणं'** चूलिका गाथा १२ में अपनी आत्मा को अपनी आत्मा द्वारा सम्प्रेषण की प्रेरणा प्रदान की गई है। मन, बुद्धि, वाणी आदि सभी पौद्गलिक हैं तथा आत्मा शुद्ध चेतन है। पुद्गल के साधनों से चौफरसी पुद्गलों को भी देखना संभव नहीं तो अरूपी को तो त्रिकाल में भी पुद्गल द्वारा नहीं जाना जा सकता। आत्मा सत् है, अन्य सभी साधन असत् हैं। सत् के द्वारा ही सत् को जाना जा सकता है। चेतन वही है जो स्वयं अपने को प्रकाशित करे।

(११) शरीर की ममता के त्याग से साधना होती है।

उत्तर- **'अवि अप्पणो वि देहम्मि णायरंति ममाइयं'** दशवैकालिक अध्ययन ६ की २२वीं गाथा में ममत्व त्याग की प्रेरणा दी गई है। जिनशासन के ज्ञाता मुनि सर्वत्र रजोहरणादि उपकरणों को संयम की रक्षा के लिए ही ग्रहण करते हैं। स्थविर कल्पी ही नहीं कम से कम दो उपकरण, रजोहरण व मुखवस्त्रिका जिनकल्पी मुनि भी रखते हैं। किन्तु उन पर ममत्व नहीं होता। उपकरण की क्या बात, ज्ञानवान मुनि अपने शरीर पर भी मूर्च्छा भाव तथा ममताभाव नहीं रखते।

'न सरीरं चाभिकंखए जे स भिक्खू' दशवैकालिक अध्ययन १० की १२वीं गाथा में भी ममत्व परित्याग के विषय में उपर्युक्त पंक्तियाँ वर्णित हैं। घोरातिघोर उपसर्ग होने पर भी साधक शरीर पर ममत्व नहीं रखता। श्मशान भूमि में ध्यान लगाकर खड़ा हो और यदि वहाँ बेताल आदि देवों के अतीव भयानक रूपों को देखे तो उसे चित्त में अणुमात्र भी

भय नहीं करना चाहिए। यही शरीर की ममता का त्याग है। भिक्षु शरीर के प्रति निस्पृह होता है।

'न शरीरमभिकाङ्क्षते निस्पृहतया वार्तमानिकं भावि च' दशवैकालिक अध्ययन ८ की गाथा २७ **देहदुक्खं महाफलं** दूसरी चूलिका ८ **ममत्तं भावं...** कभी भी यह नहीं सोचे कि मेरा शरीर उपसर्गों से बच निकले व इसे दुःख न हो।

'अप्पाणममोहदंसिणो...' दशवैकालिक अध्ययन ६ की ६८वीं गाथा में भी ममत्व त्याग की प्रेरणा की गई है। निर्मोह भाव से तत्त्व दर्शन करने वाले मुनि की साधना ही वास्तविक साधना होती है तथा वह कषायों को क्षीण करके योगों का निरोध कर चरम लक्ष्य को प्राप्त करता है।

(क्रमशः)

दान हो तो ऐसा

श्री अभयकुमार जैन

अविभाजित भारत की बात है। जमशेद जी मेहता नामक पारसी सज्जन कराची के एक बड़े समाजसेवी नेता थे। कराची शहर के निर्माण में उनका बड़ा भारी योगदान था। वहाँ सार्वजनिक चिकित्सालय की सहायता के लिए निधि एकत्रित करने का निश्चय किया गया। जो दाता दस हजार रुपये का दान देंगे उनके नाम की संगमरमर पट्टिकाएँ चिकित्सालय की दीवार में लगा दी जायेंगी। अनेक सज्जनों ने अच्छा दान दिया। प्रबंध समिति के पदाधिकारियों ने जमशेदजी मेहता के पास चिकित्सालय को अधिकाधिक अनुदान देने का निवेदन किया। श्री जमशेद जी ने ९९९० का चैक भेंट किया। इस संबंध में दान माँगने आए कार्यकर्ताओं ने दस हजार पूरे करने पर नाम पट्टिका लगाने वाली बात याद दिलाई, किन्तु जमशेदजी ने स्पष्ट किया कि मैंने दस रुपये इसलिए कम कर दिए हैं कि मैं अपना नाम पट्टिका पर लिखवाकर दान की महत्ता को कम नहीं करना चाहता। यह देखकर एक सज्जन ने आश्चर्यपूर्वक पूछा- "मेहता जी आपने ऐसा क्यों किया?" जमशेद जी नम्रतापूर्वक बोले- "प्रभु ने मुझे जो कुछ दिया है, उसका उपयोग लोक सेवा में हो, मेरे लिए यही विशेष और आनन्द की बात है। नाम पट्टिका लगवाने में नहीं।"

- तृप्ति बंदा रोड़, भवानीमण्डी (राज.)

धारावाहिक (क्रमशः ३२)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- पद्मश्री के दृष्टान्त को स्वतः दोषपूर्ण बतलाकर जम्बूस्वामी लकड़हारे अंगालक की स्थिति के सदृश विषयलोलुप जीव के स्वरूप को समझाते हैं। पद्मश्री कल्याणमार्ग की ओर अग्रसर करने वाले प्रेरक वचनों को सुनकर दीक्षा लेने हेतु तत्पर हो जाती है। अब आगे-

---

पद्मश्री द्वारा भी वैराग्य की स्वीकृति का दृश्य देखकर शेष छह स्त्रियों को अत्यन्त निराशा हुई, उन्होंने सोचा- पद्मश्री दृढ़ संकल्प करके गई थी, पर स्वयं ही स्वामी की बात पर राजी हो गई। अब प्राणनाथ को अपने पथ से विचलित करना अत्यन्त कठिन है। फिर भी जब तक श्वास है तब तक आस रखनी चाहिए।

इस प्रकार विचार-विनिमय के पश्चात् **पद्मसेना** नाम की तीसरी स्त्री जम्बूकुमार को उनके पथ से विचलित करने का उद्देश्य लेकर सामने आई। जम्बूकुमार से कहने लगी-

प्राणनाथ! स्त्रियाँ स्वभाव से भोली-भाली होती हैं। उनके भोलेपन से लाभ उठाकर आपने मेरी दो सखियों को बहका दिया है। पर आपको मैं यह बतला देना चाहती हूँ कि सब धान बाईस पंसेरी नहीं होता। सब स्त्रियाँ एक-सी भोली नहीं होतीं। मैं आपकी बहका देने वाली बातों में नहीं आऊँगी। आपको मैं किसी भी प्रकार जाने नहीं दूँगी। सुख के सुन्दर समय को वृथा व्यतीत क्यों करना चाहते हैं आप? क्या हमें सहसा ठुकरा देना इतना आसान काम है, जितना आप समझ रहे हैं? हमारे स्नेह में शक्ति है। हमारा स्नेहपाश बहुत मजबूत है। उसे तोड़ फेंकने का इन्द्र में भी सामर्थ्य नहीं है। सारा संसार महिलाओं की अंगुली के इशारे पर कठपुतली की तरह नाच रहा है। आप हमें अबला न समझिए। आपने स्वयं पद्मश्री को समझाते हुए हमें सबला कहा है। आप उस बगुले की तरह मत बनिए, जिसने मुँह में आई हुई मछली को भूलकर दूसरी मछली पकड़ने का प्रयत्न किया और दोनों ही हाथ से गँवाई। इस कथा

को जरा सावचेत होकर सुनिए।

पूर्वीय देश में राजगृही नगरी थी। उसमें एक स्वर्णकार रहता था। उसके एक पुत्र था और उस पुत्र की स्त्री थी। घर में तीन ही मनुष्य रहते थे। पुत्रवधू अत्यन्त कुलटा थी और वह अपने पापों को छिपाने में अत्यन्त कुशल थी। पर पाप कब तक छिपा रह सकता है?

पाप छिपाये नहिं छिपे, छिपे तो मोटा भाग।
दाबी-दूबी नहिं रहे, रूई लपेटी आग॥

एक दिन पुत्रवधू के दुराचार को देखकर पिता ने अपने पुत्र से कहा- बेटा! बहू को जरा अंकुश में रखो। नीतिकार कहते है-

पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने।
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा, न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति॥-मनुस्मृति, ९.३

अर्थात् स्त्री की कुमार अवस्था में पिता रक्षा करता है, यौवन में पति रक्षा करता है और वृद्धावस्था में पुत्र रक्षा करता है। स्त्री स्वतंत्रता की पात्र नहीं है।

स्त्री को जितनी स्वाधीनता दी जाय, उसके चरित्र में उतनी ही खराबी आ जाती है। अतएव कुल की मर्यादा कायम रखने के लिए लोक निन्दा से बचने के लिए एवं नीति और धर्म का मूल सुदृढ़ रखने के लिए स्त्री पर अंकुश रखना चाहिए। इस कथन में अनेक अपवाद हो सकते हैं। अनेक महिलाएँ संसार में सदाचार का आदर्श स्थापित कर गई हैं। सीता जैसी अनेक सतियों ने भयंकर कष्ट सहन करके भी अपने शील रत्न की रक्षा की है। पर अधिकांश महिलाएँ अपने मृदुल हृदय के कारण, उच्च, शुद्ध और सात्त्विक शिक्षा के अभाव में नीति की मर्यादा का उल्लंघन कर जाती हैं।

पद्मसेना कहने लगी- स्वर्णकार का पुत्र अपनी पत्नी का दास था। वह अपनी स्त्री के इशारे पर नाचता था। पिता के हित-वचन सुनकर वह कड़क कर बोला- "पिताजी! जान पड़ता है तुम सठिया गए हो। शरीर के बुढ़ापे के साथ बुद्धि भी बूढ़ी हो गई है। इस उम्र में भी तुम्हारी कुटिलता न गई। वह बेचारी सीधी-साधी, भोली-भाली पतिव्रता और सदाचार-शील महिला है। उसके विषय में तुम्हें निर्मूल भ्रम हो रहा है। किसी भी सती-साध्वी महिला के विषय में ऐसा घृणित विचार करना उसका घोर अपमान करना है। इससे उस महिला का ही अपमान नहीं किन्तु समस्त नारी जाति का अपमान है। यह मुझे

भी अपना अपमान जान पड़ता है।

"पिताजी! आज तो आपने कहा सो कह लिया, पर आगे इस प्रकार की बात मुँह से न निकालें। इसी में आपकी भलाई है।"

पिता-"बेटा! तू नासमझी भरी बातें कर रहा है। तुझे विवेक-बुद्धि से काम लेना चाहिए। स्त्री के प्रति अनुराग होना अच्छा है पर अंधश्रद्धा होना भयानक है। मुझे संसार का तुझसे अधिक अनुभव है। तेरी आँखों पर जो चश्मा चढ़ा है वह यथार्थ वस्तु नहीं देखने देता। मेरे दो-चार पुत्रवधुएँ तो हैं नहीं कि उनसे ईर्ष्या करता। तू ही अकेला पुत्र है और वही अकेली पुत्रवधू है। मैंने अपनी इन बूढ़ी आँखों से जो कुछ देखा है उसी के आधार पर मैंने संकेत किया है। मेरी बात पर तुझे विश्वास नहीं होता है तो तनिक ठहर जा। अबकी बार ऐसा प्रयत्न करूँगा कि तुझे संशय ही न रह जाय।"

पुत्र- "अच्छी बात है। जब आप प्रमाण उपस्थित करेंगे तब विचार करूँगा।"

एक दिन पुत्रवधू को परपुरुष के साथ शयन करते देखकर स्वर्णकार किसी प्रकार उसके पैर में से नेवर (एक गहना) खोल लाया। जैसे ही पुत्रवधू की नींद खुली तो उसे समझने में देर न लगी कि श्वसुर ने नेवर खोल लिया है। प्रातःकाल होते ही वह मेरे पापों का भंडाफोड़ कर देगा।

इस प्रकार विचार कर उसने अपने प्रेमी को जगाकर उसके घर रवाना कर दिया और स्वयं अपने सोये हुए पति के पास जा पहुँची। बड़ा स्नेह प्रदर्शित करके बोली- प्राणनाथ! मुझ दासी को आपसे अलग होकर अकेले में नींद नहीं आती। आप भी कृपा कर शयनगृह में पधारें। इस प्रकार कहकर वह अपने पति को शयनगृह में ले गई। थोड़ी देर चुपचाप पड़ी रहने के बाद अचानक चिल्लाने लगी-प्राणनाथ! प्राणनाथ! देखो, जागो, कोई मेरे पैर का नेवर उतार कर लिए भागा जाता है।

स्वर्णकार का लड़का चौंक कर उठा। बोला- कौन है यहाँ? कौन तेरा नेवर ले जा रहा है?

स्त्री धीमे से बोली- "मैंने पहचान लिया है चोर कोई बाहर का नहीं, घर का है और वह है- आपके पिताजी, मेरे श्वसुरराज।

स्त्री पति को उत्तेजित करने के लिए कहने लगी- "जीवनधन!

आपको इनकी करतूतों का पता नहीं है। न जाने कब से यह मेरे साथ छेड़छाड़ कर रहे हैं। यह तो मैं ही थी कि इतने दिनों तक शान्त रही और परमात्मा से उन्हें सुबुद्धि देने की कामना करती रही। मैंने पिता-पुत्र के बीच क्लेश उत्पन्न करना उचित नहीं समझा। कुलीन स्त्री का यह कर्तव्य नहीं कि वह कुटुम्ब में विग्रह पैदा करे। इसके अतिरिक्त मुझे लज्जा भी मालूम होती थी। परन्तु अब तो हद हो चुकी है। अब उनका व्यवहार सहन करना मेरी शक्ति से बाहर हो गया है। आज तो सब कुछ प्रत्यक्ष हो गया है। अब तो किसी प्रकार की शंका आपके हृदय में नहीं रह गई है? पत्नी की लाज बचाना पति का धर्म है। अब आपकी जो इच्छा हो, कीजिए।''

पत्नी का कथन सुन कर वह आग-बबूला हो गया। उसे अपने पिता की लम्पटता का खयाल कर घोर व्यथा होने लगी। प्रातःकाल होने के साथ ही वह पिता के पास पहुँचा। पिता अपने पुत्र को बिना बुलाए आया देख नेवर बताने का उपक्रम कर ही रहा था कि पुत्र गुस्से से काँपता हुआ, लाल-लाल आँखे निकाल कर कहने लगा- ''अरे बूढ़े! तुम्हारे सामने बात कहने में भी मुझे लज्जा आती है। तुम्हारे हृदय में इतनी लम्पटता भरी हुई है, यह मुझे स्वप्न में भी पता न था। तुम्हारा इतना अधिक पतन हो चुका है। तुम्हारी नीयत इस कदर बिगड़ी हुई है। लोग ठीक कहते हैं- 'साठी और बुद्धि नाठी।' मैं सोया हुआ था फिर भी तुमने इतना साहस किया कि नेवर उतार कर ले आए? कदाचित् मैं वहाँ न होता तो उस बेचारी की न जाने क्या दशा होती? उसके सिर जन्म भर के लिए कलंक का टीका लग जाता। उस सीधी और भली औरत की इज्जत धूल में मिल जाती।''

अपने मूढ़ पुत्र की बात सुन कर स्वर्णकार ने माथा ठोका और 'होनहार बलवान्' कहकर किसी प्रकार चुप्पी साधी।

इसी समय पुत्रवधू रोती-रोती आई और कहने लगी- ''प्राणनाथ! मुझे भयंकर कलंक लगाया गया है। इस कलंक से कलंकित मुँह दिखाना मेरे लिए असंभव हो गया। मुझे किसी प्रकार यह कलंक मिटाना होगा। इसे मिटाने के लिए मैं 'धिज'(एक प्रकार का दिव्यपरीक्षण) करूँगी।'' पति ने उसकी बात तत्काल स्वीकार कर ली। (क्रमशः)

(सुनार सच्चा होने पर भी अपनी पुत्रवधू द्वारा लज्जित हो रहा है, उसके साथ अन्य क्या घटनाएँ घटित होती हैं, पढ़िए अगले अंक में)

अहंकार के शमन से पवित्र होता मन

डॉ. श्वेता जैन

मन को असत् आचरण की ओर प्रवृत्तिशील करने वाले दो कारक हैं- १. बाह्य २. आन्तरिक। वस्तु, व्यक्ति आदि बाह्य कारक हैं तथा क्रोध-मान-माया-लोभ आदि कषाय आन्तरिक या भीतरी कारक हैं। मान-कषाय मन को मलिन कर मानव को अनेक विकृतियों से संवृत्त कर देता है। मान प्रत्यक्ष रूप से दिखाई नहीं पड़ता, किन्तु व्यक्ति के व्यवहार से, आचरण से, वक्तव्य से प्रकट होता है।

मान व्यक्ति की सहनशीलता को कम कर देता है, जिससे वह थोड़ी सी प्रतिकूलता में क्रुद्ध और हताश हो जाता है। यह हताशा और क्रोध व्यक्ति के जीवन में नई-नई विकृतियों एवं बुराइयों के अंकुर प्रस्फुटित कर देता है और उसे पतन के मार्ग की ओर अग्रसर करता है।

'मान' के लिए अहंकार, अभिमान, घमण्ड आदि शब्द भी व्यवहृत होते हैं। अभिमान स्व विचारों की कैद है जिसमें व्यक्ति की सोचने की शक्ति बन्द होकर रह जाती है। वह प्रतिबंधित विचारों के इर्द-गिर्द ही सोचता है, उससे बाहर निकलकर सोचने का सामर्थ्य खो देता है। जैसे-धनी व्यक्ति को धनी होने का अभिमान होता है तब वह अपने को ही सबसे धनी और श्रेष्ठ समझने लगता है। ऐसे में दूसरों की बात को सुनना भी पसंद नहीं करता, क्योंकि स्वयं को सर्वश्रेष्ठ समझने के विचार ने उसके विवेक-विनय या सही सोचने के सामर्थ्य को नष्ट कर दिया है। इसी अभिप्राय से आगम में कहा है- **''माणो विणयणासणो''** अर्थात् मान विनय का नाशक है।

कुछ लोग अभिमान और स्वाभिमान को एक ही समझ लेते हैं जबकि दोनों के अभिप्राय में भेद है। स्वाभिमान गुण है और अभिमान दुर्गुण है। स्वाभिमान व्यक्ति के लिए हितकर है और अभिमान अहितकर है। स्वाभिमान सकारात्मक है और अभिमान नकारात्मक है। स्वाभिमान में स्व के समान सबको समझा जाता है और अभिमान में 'स्व' को ही सब कुछ मान लिया जाता है। स्व केन्द्रित अभिमान पाप का जनक है। अतः अंग्रेजी लेखक Apocrypha कहते हैं- 'Pride is the begining of sin'

स्वाभिमानी व्यक्ति अपने स्वाभिमान की रक्षा करता हुआ दूसरों के

स्वाभिमान का भी खयाल रखता है। ऐसा स्वाभिमान सबके लिए अनुकरणीय है। स्वाभिमान का सही स्वरूप नहीं समझने के कारण आजकल स्वाभिमान का रूप विकृत होकर अभिमान में परिणत होता जा रहा है। फलस्वरूप व्यक्ति दूसरों की उपेक्षा कर अपने स्वाभिमान को ही सब कुछ मान रहा है और दूसरों को तुच्छ समझने लगा है।

अहंकार का बीज सभी जीवों में है, क्योंकि सभी संसारी जीव कषाय युक्त हैं। अब यह बीज विकसित होता है तब महसूस होता है कि यह अहंकारी व्यक्ति है। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी में अहंकार मन्द होता है, किसी में मंदतर तो किसी में तीव्र और किसी में तीव्रतर। अतः सभी जीवों के अहं की सत्ता को समझकर व्यवहार करने वाला व्यवहारकुशल होता है। निश्चय से तो अहं आत्मगुणों का करने वाला है इसलिए मान की तीव्रता को समझकर उसकी मंदता के लिए प्रयत्न करना पुरुषार्थ है, मानव-जीवन को सफल बनाना है, मोक्ष की ओर गमन करना है। मान-मर्दन के विभिन्न उपाय किये जा सकते हैं-

१. आगम में मान को जीतने का उपाय बताते हुए सूत्र दिया गया है- "माणं मद्दवया जिणे" अर्थात् मान को मृदुता से जीतें।
२. प्रतिदिन सूर्योदय की शुभ वेला में प्रभु से प्रार्थना करें कि मेरे भीतर के मान आदि कषाय मंद से मंदतर होते जाएँ। साथ में 'मम मनः निर्विकारं स्यात्' का १०८ बार स्मरण करें।
३. अपने जीवन के वे अवसर पहचानने का प्रयास करें जहाँ आप मान से युक्त हो जाते हैं। जैसे- कोई प्रशंसा करे, कोई सत्कार-सम्मान करे, सत्ता मिले, किसी को वस्तु आदि देने पर, कीमती वस्तुओं का उपयोग करने पर आदि विभिन्न अवस्थाओं में मान का अवसर आने पर कुछ देर के लिए रुककर अपने मन को देखने का प्रयास करें और सोचें मैं गलत दिशा में जा रहा हूँ। मेरे जीवन में यह भटकाव नहीं आना चाहिए।
४. चिन्तन करें इन पंक्तियों पर-

घमण्ड करने से तीन नुकसान, घटता है खुद का मान।
मिलता है उसको अपमान, खो देता है स्व का भान॥

अहंकार-शमन के कुछ बाह्य उपाय आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी पुस्तक

''तुम स्वस्थ रह सकते हो'' में बताए हैं, वे निम्न हैं-

- पीनियल ग्रन्थि का हारमोन 'मेलाटोनिन' भावनात्मक परिवर्तन के लिए उत्तरदायी है। पीनियल ग्रन्थि (ज्योति केन्द्र) पर सफेद रंग का ध्यान करने से अहंकार पर नियंत्रण किया जा सकता है।
- अहंकार की उत्तेजना एड्रीनल ग्लैण्ड के माध्यम से व्यक्त होती है। शशांकासन एड्रीनल के स्राव का नियमन करता है। इसलिए शशांकासन अहंकार के आवेश पर नियन्त्रण पाने का एक उत्तम उपाय है। शशांकासन के लिए वज्रासन की स्थिति में पंजों के बल पर बैठकर श्वास भरते हुए हाथों को आकाश की ओर उठाएँ। श्वास को छोड़ते हुए नीचे झुकें और हाथ व ललाट को भूमि से लगाएँ। भुजा कानों के पार्श्व से सटकर जाते हुए सिर के आगे की भूमि पर स्पर्श करती रहें। सुविधानुसार कुछ देर इसी स्थिति में रुकें। श्वास भरते हुए धीरे-धीरे ऊपर उठें और श्वास छोड़ते हुए हाथों को पूर्व स्थिति में लाएँ।
- दीर्घ या लम्बे श्वास की स्थिति में अहंकार को उभरने का अवसर नहीं मिलता। अहंकार का आवेश बढ़ जाने पर यदि दीर्घ श्वास का प्रयोग अथवा श्वास का संयम (कुम्भक) किया जाए तो अहंकार का शमन होने लगता है।

-१२/७ ए, समता कुंज, जालम विलास स्कीम, पावटा 'बी' रोड़, जोधपुर

कुछ करें, कुछ न करें

श्री महेश नाहटा

- कभी भी हिंसक सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग नहीं करें।
- बिजली का व्यर्थ प्रयोग न करें, बिजली का अपव्यय रोकें।
- सदैव खाद्य पदार्थों के उपयोग से पहले उनकी निर्माण विधि व मिश्रण की अवश्य जाँच करलें।
- हमेशा कत्लखानों का विरोध करें व मूक पशुओं की मदद करें।
- प्रतिदिन कम से कम एक रोटी मूक जीवों को अवश्य देवें।
- जर्दा, गुटखा, धूम्रपान एवं मादक पदार्थो से सदा परहेज करें।
- सदैव अच्छी भावना रखें व अच्छे कार्यो में जुटे रहें।

-नगरी (छत्तीसगढ़)

सामायिक-व्रत शुद्ध आराधें

श्रीमती अकलकंवर मोदी

धर्म यदि जीवन का आधार है तो व्रत उसकी आधारशिला है। धार्मिक जागरण और धर्म में श्रद्धा,निष्ठा एवं भक्ति भाव ही आध्यात्मिकता का विकास कर हमें शुद्ध जीवन की पर्याय बनाता है तो व्रत दोष-नियंत्रण एवं आत्मशुद्धि की भूमि तैयार करता है। परन्तु आज इस भौतिक चकाचौंध में व्यक्ति का भोगी एवं विलासी जीवन धर्म व व्रत को धूमिल बना रहा है। वह कपड़े साफ और मकान स्वच्छ व सुन्दर चाहता है, तो आत्मा को निर्मल, पवित्र और स्वच्छ बनाने वाली सामायिक अशुद्ध क्यों पसंद करता है? उसे शुद्ध रूप में क्यों नहीं अपनाता है? उसमें आलस्य, प्रमाद एवं सुविधा क्यों अपना रहा है?

जहाँ समभाव है वहाँ विश्व-रक्षण की वृत्ति है। उसका आचरण सामायिक है। प्राणिमात्र को आत्मवत् समझते हुए व्यवहार करने पर सहज ही समभाव की साधना होती है। जिस प्रवृत्ति से समभाव की प्राप्ति हो वह सामायिक है। 'सामायिक' के दो रूप हैं। एक 'द्रव्य सामायिक' एवं दूसरी 'भाव सामायिक' है। समभाव की प्राप्ति, समभाव का अनुभव फिर समभाव का प्रत्यक्ष आचरण 'भाव सामायिक' है। ऐसी भाव सामायिक की प्राप्ति के लिये जो बाह्य साधन जुटाकर सामायिक की जाती है, उसे 'द्रव्य सामायिक' कहते हैं। समभाव की प्राप्ति, मानव जीवन में सुख-शांति का विस्तार, अशान्ति का नाश, कषाय और कलह-प्रपंच का त्याग ही सामायिक का लक्ष्य होना चाहिये। सामायिक करते हुए हमें क्रोध, मोह, अज्ञान, दुराग्रह, अन्ध श्रद्धा तथा संप्रदायान्तर-द्वेष का त्याग करने का अभ्यास करना चाहिये। संक्षेप में कहें तो शुद्ध और सत्य व्यवहार का नाम धर्म है तथा सामायिक उसमें सहायक है।

अशुद्ध संकल्पों के त्याग में ही शुद्ध व्यवहार, शुद्ध आचरण और शुद्ध धर्म में प्रवृत्ति संभव है, अन्यथा नहीं

सामाइयवयजुत्तो, जाव मणो होई नियम संजुत्तो।
छिन्नइ असुहकम्मं, सामाइयं जत्तिया वारा॥

चंचल मन को नियंत्रण में रखते हुए जब तक सामायिक व्रत की अखण्ड-धारा चालू रहती है, तब तक अशुभ कर्म बराबर क्षीण होते रहते हैं।

सामायिकव्रतस्थस्य गृहिणोऽपि स्थिरात्मनः।
चन्द्रावतंसकस्येव क्षीयते कर्मसंचितम्॥

सामायिक की साधना में लीन, स्थिर मन युक्त, गृहस्थ साधक भी राजर्षि चन्द्रावतंसक की भाँति पूर्व संचित कर्मों को नष्ट कर डालता है।

जे केवि गया मोक्खं, जे वि य गच्छंति जे गमिस्संति।
ते सव्वे सामाइय - पभावेण मुणेयव्वं॥

जो भी साधक अतीत काल में मोक्ष गए हैं, वर्तमान में जा रहे हैं, और भविष्य में जायेंगे, यह सब सामायिक का ही प्रभाव है।

-ओसवाल न्याति नोहरे के पीछे, जोधपुर

यथार्थपरक गुणदृष्टि

श्री जशकरण डागा

सत्य के महान पक्षधर महात्मा गाँधी ने एक बार प्रवचन सभा में गुण दृष्टि पर विचार प्रकट करते हुए कहा- "हमें दूसरों के गुणों को बढ़ाकर व दोषों को घटाकर देखना चाहिए। इसी तरह हमें स्वयं के गुणों को घटाकर व दोषों को बढ़ाकर बताना चाहिए। ऐसा करने से यथार्थ वस्तु स्थिति का दिग्दर्शन होता है।" प्रवचन सभा में महान् दार्शनिक संत विनोबा भी उपस्थित थे। उन्होंने प्रश्न किया- "क्या ऐसा करने से सत्य का अपलाप नहीं होगा?" इस जिज्ञासा का समाधान देते हुए म. गाँधी ने कहा- "हाँ ऐसा करने से सत्य का अपलाप नहीं होगा, कारण हमें दूसरे के दोष व अपने गुण अधिक दिखाई देते हैं। अतएव दूसरों के दोषों को व अपने गुणों को घटाकर देखने पर ही यथार्थ रूप में वास्तविक सत्य दिखाई देगा। यही बात दूसरों के गुण व अपने दोषों पर भी लागू होती है, जिन्हें बढ़ाकर देखने से यथार्थ वस्तुस्थिति की प्रतीति होती है। ऐसी यथार्थपरक दृष्टि रखने से पारस्परिक मतभेद व कलुषता मिटकर मैत्रीभाव विकसित होता है।

-डागा सदन, संघपुरा, टोंक (राज.)

जैसे विचार, वैसा व्यक्तित्व

प्राणिमित्र नितेश नागोता 'जैन'

अनंत उपकारी पूज्य गुरु भगवंतों के मुखारविन्द से हमने कई बार एक स्तवन सुना है। दर्जनों ही नहीं सैकड़ों बार इस स्तवन को हम स्वयं ने पढ़ा और बोला भी है कि-

यदि भला किसी का कर ना सको तो, बुरा किसी का मत करना।
अमृत न पिलाने को घर में तो, जहर पिलाते भी डरना॥

अर्थात् स्तवन की यह चंद पंक्तियाँ महज शब्दों की तुकबंदी या भावों का समूह मात्र ही नहीं है। इन चंद पंक्तियों में जीवन जीने की उत्कृष्ट कला और सहयोग, स्वाभिमान व सर्वजनहिताय की मनोभावनाएँ अन्तर्निहित हैं। उक्त स्तवन को अब तक हमने सैकड़ों बार पढ़ा, सुना और बोला है। आवश्यकता है इसे आत्मसात् करने हेतु इसका संदेश समझने की।

"यदि भला किसी का कर ना सको तो बुरा किसी का मत करना।" यह छोटी सी पंक्ति प्रत्येक प्राणी को ईर्ष्या, द्वेष, कषाय से दूर रहने, परस्पर आत्मीयता प्रेम, प्रीति की प्रेरणा के साथ-साथ एक दूसरे के प्रति सहयोगात्मक रूख रखने की प्रेरणा देती है तथा प्रतिबोध देती है- शुभ चिंतन करने, गुण दृष्टि रखकर सद्कर्म करने की।

अब चिन्तन हमें स्वयं के जीवन व्यवहारों पर करना है कि हम इस पंक्ति को कितनी दृढ़ता और सजगता के साथ अपने जीवन में अपनाते हैं। वस्तुतः आज तो यह स्थिति बन रही है कि आज व्यक्ति अपने दुःखों से कम व दूसरों के सुखों से अधिक दुःखी है। चाहे क्षेत्र हो आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक या राजनैतिक। हर क्षेत्र में व्यक्ति को अपने से आगे बढ़ते हुए व्यक्ति पर ईर्ष्या प्रकट हो रही है। व्यक्ति समर्थक की जगह विरोधी बनता जा रहा है। यही कारण है कि आज व्यक्ति इस मानसिकता के साये दूसरों का अहित और बुरा करने में भी संकोच नहीं कर रहा है। किन्तु हम सभी को सदैव एक बात पर चिन्तन करना है कि- दूसरों का बुरा हो या नहीं, किन्तु उनके विषय में बुरा सोचकर हमारी कषाय तो बढ़ ही रही है। हम हैरान-परेशान और अशांत हो रहे हैं। हमारे अशुभ चिन्तन से कर्मों का व्यर्थ बंधन हो रहा है। वस्तुतः दूसरों के लिए गड्ढा खोदने से पहले हम ही उस गड्ढे का शिकार हो रहे हैं। इसलिए

ज्ञानी गुरु भगवन्त शिक्षा फरमाते हैं कि-

जैसी सोच हमारी होती, वैसे हम बन जाते हैं।
अच्छी सोच से अच्छे बनते, बुरी सोच से बुरे हो जाते हैं।
शुभ चिंतन से कर्म हैं कटते, अशुभ चिंतन से कर्म बढ़ाते हैं।
जैसी सोच हमारी होती, वैसे हम बन जाते हैं॥

अतः प्रगति और प्रतिस्पर्धा के इस दौर में जब आदमी के पास अपने लिए सोचने का समय नहीं है तब आवश्यकता है चिंतन-मनन करने की, अपने व्यवहारों के निरीक्षण की। क्योंकि जिस तरह हम गंदे कपड़े पहनना पसंद नहीं करते, गटर (नाला) का गंदा पानी पीना पसंद नहीं करते, बासी और सड़ा भोजन हमें पसंद नहीं होता है, हम हर जगह अच्छा व स्वच्छ कार्य पसंद करते हैं, ठीक उसी प्रकार हमें आवश्यकता है अच्छी सोच की, शुभ चिंतन की और गुणग्राहकता की।

"अमृत न पिलाने को घर में तो, जहर पिलाते भी डरना॥" स्तवन की यह अगली पंक्ति हमें प्रेरणा प्रदान करती है- निंदा, विकथा और बुराइयों से दूर रहकर पापभीरु श्रमणोपासक बनने की। यदि हम अपने व्यवसाय में आरंभ-समारंभ का धंधा कम नहीं कर सकते हैं तो नशा, कीटनाशक, रसायन, पटाखें, केमिकल्स आदि हिंसक व्यापार से परहेज रखने की हमें सख्त जरूरत है। यदि हम किसी शुभ प्रवृत्ति के समर्थक सहयोगी और सहायक नहीं बन सकते तो उसका विरोधी बनने से परहेज करने की आवश्यकता है। वस्तुतः पूज्य गुरु भगवन्त हमें बार-बार यही प्रतिबोध देते हैं कि श्रवण चाँदी के समान है, मनन सोने के समान और आचरण हीरे के तुल्य है। अतः आवश्यकता है सद्ज्ञान, हित शिक्षाओं को श्रवण-मनन के साथ-साथ आचरण में लाने की, क्योंकि सच्चाई तो यही है कि-

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोई,
जो घट शोधूँ आपणो, मुझसे बुरा ना कोय॥
केवा में आवे नहीं, अवगुण भरया अनंत,
लिखवा में क्यों कर लिखूँ, जाणो श्री भगवन्त॥

अर्थात् एक सच्चे जौहरी, आदर्श पारखी और विवेकनिष्ठ श्रमणोपासक की तरह हमें भी समय व अवसर के महत्त्व को पहचानते हुए अपनी बल, बुद्धि, विवेक और ऊर्जा को शुभचिन्तन, सद्कर्म और सद्राह पर लगाना है। हमें सदैव सद्प्रवृत्तियों, सद्विचारों और सद्पुरुषों का विरोधी नहीं, समर्थक

बनना है। वस्तुतः इसी भावना और सम्यक् पुरुषार्थ से इस भव, पर भव, भव-भव को सुखी एवं आनंदित बनाते हुए हमें अपने आत्म-लक्ष्य को प्राप्त करना है। अन्ततः निवेदन यही है कि-

अच्छा करें, अच्छा पढ़े, सदा रखें अच्छे विचार,
सहयोगी सत्कर्म में, सदा शुद्ध रहे आचार ।
बनें पॉजीटिव, नहीं नेगेटिव, शुभ चिंतन जीवन का सार,
जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि, सदा रखें अच्छे विचार॥

-१७५, जैन बोर्डिंग हाउस, भवानीमण्डी (राज.)

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 7 जनवरी 2007 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा १ से १४ तक आगामी परीक्षा ०७ जनवरी २००७ रविवार को दोपहर १२.३० से ०३.३० बजे तक आयोजित की जायेगी।

१. आवेदन-पत्र जमा कराने की अन्तिम तिथि २० नवम्बर २००६ है।
२. पुराने परीक्षार्थियों को आवेदन-पत्र में पिछली परीक्षा के रोल नम्बर तथा स्थायी पंजीयन संख्या (P.R.N.) भरना अनिवार्य है।
३. जिन्होंने इस बोर्ड की गत परीक्षाओं में भाग लिया है तथा जिस कक्षा में उत्तीर्ण हुए हैं, उसकी अगली कक्षा की परीक्षा देनी होगी। जो पिछली परीक्षा में जिस कक्षा में अनुत्तीर्ण हुए हैं उन्हें उसी कक्षा की परीक्षा दुबारा देना अनिवार्य होगा।
४. १० से अधिक परीक्षार्थी होने पर नया केन्द्र भी प्रारम्भ किया जा सकता है।
५. शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रम के शिक्षण की व्यवस्था भी शिक्षण बोर्ड द्वारा प्रारंभ की जा चुकी है। जिन केन्द्रों पर शिक्षण की आवश्यकता हो वे शिक्षण बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करावें।
६. जो भी वरिष्ठ स्वाध्यायी, धार्मिक अध्यापक यदि शिक्षण कार्य में अपनी सेवाएँ देना चाहें तो वे भी शिक्षण बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करावें।
७. धार्मिक शिक्षकों को यात्रा-व्यय के साथ समुचित मानदेय भी शिक्षण बोर्ड द्वारा प्रदान किया जाता है।
८. जिन केन्द्रों को शिक्षण बोर्ड की पुस्तकें, आवेदन-पत्र, नियमावली आदि की आवश्यकता हो वे बोर्ड कार्यालय को सूचित करावें, ताकि वांछित सामग्री उपलब्ध करायी जा सके।
९. बोर्ड के नियमानुसार परीक्षा निर्धारित दिनांक व निर्धारित समय पर ही आयोजित होना अनिवार्य है।अन्य दिनांक व समयों में आयोजित की गई परीक्षा कदापि मान्य नहीं होगी।

पाठकों से अनुरोध है कि आगामी परीक्षा में अधिकाधिक भाई-बहन भाग लें, ऐसी पुरजोर प्रेरणा कर श्रुत-सेवा, धर्म-दलाली एवं कर्म-निर्जरा का लाभ अवश्य प्राप्त करावें। *-विमला मेहता, संयोजक, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.), फोन नं. ०२९१-२६३०४९०*

उपन्यास (३)

सिद्धगिरि का यात्री

उपाध्याय श्री केवलमुनि जी म. सा.

पूर्ववृत्त- "परोपकार दूसरों के लिए तो हितकारी है ही, साथ ही अपने लिए भी शुभ है।" माँ की कही इस बात का प्रत्यक्ष अनुभव मोहन ने राधा की घटना से किया। मोहन के भविष्य के लिए चिन्तित उसकी माँ को पड़ौसी स्त्रियों ने सिद्धगिरि पर रहने वाले सिद्धयोगी की भविष्यवाणी सत्य होने की बात कही तो उसने मोहन को वहाँ भेजने का निर्णय लिया और एक दिन जन्मपत्री व शुभाशीष वचनों के साथ माँ ने उसे सिद्धगिरि के लिए रवाना किया।

सिद्धगिरि का मार्ग राजमार्ग नहीं था; वन का जटिल मार्ग था। मोहन के गाँव और सिद्धगिरि के बीच एक लम्बा वन था। इस वन में एक पगडंडी थी। वह पगडंडी वन में होते हुए भी कई छोटे-छोटे गाँवों की सीमा पार करती हुई जाती थी।

मोहन ने उसी पगडंडी को पकड़ा। वन यद्यपि सघन था, किन्तु था निरापद, उस वन में चोर-लुटेरे-डाकुओं का कोई भय नहीं था और न ही हिंसक पशुओं का ही निवास था। हाँ, उस वन में काँटे, पत्थर, कंकड़ अवश्य थे। फिर भी दूर-दूर के यात्री इसी वनमार्ग से जाया करते थे।

मोहन किशोर था। चलते-चलते कोई नुकीला कंकड़ पैर में लग जाता तो वह 'सी' करके बैठ जाता। काफी देर तक पैर को मसलता रहता। अभी उसका तन भी कोमल था और मन भी कोमल। पत्ता भी खड़कता तो उसका दिल धुक-धुक करने लगता। वह कुछ देर ठहर जाता, चारों ओर देखने लगता और जब विश्वास हो जाता कि कोई नहीं है तो आगे कदम बढ़ाता।

मोहन अधिक चल नहीं पाता, जल्दी ही थक जाता, बैठ जाता, विश्राम करता और फिर आगे चलता। इस तरह उसकी यात्रा चल रही थी।

२५ कोस ही चल पाया कि माँ का दिया पाथेय (भाता) समाप्त हो गया। चलने से भूख भी कुछ ज्यादा ही लगती है। उसे भूख भी लग आयी थी और थक भी गया था।

इतने में एक छोटा सा गाँव आया। आशा बँधी। गाँव में एक घर के दरवाजे के बाहर जाकर बैठ गया। मोहन बड़ी चिन्ता में पड़ गया। भूख जोरों की लग रही थी। पर जीवन में कभी किसी से माँगा नहीं था। सोच रहा था- अब क्या करूँ? उदर की उठती ज्वाला को कैसे शांत करूँ?

मोहन को अधिक देर सोचना नहीं पड़ा, अचानक घर के भीतर से महिला के चीखने की आवाज आई। मोहन चौकन्ना होकर इधर-उधर देखने लगा। घर का दरवाजा भीतर से बंद था, मोहन एक छोटी जाली से भीतर झाँका तो भीतर का दृश्य देखकर उसके रोंगटे खड़े हो गये। कोई एक दुष्ट पुरुष एक हाथ से उस महिला की चोटी पकड़ कर कह रहा है- "ला, तिजोरी की चाबी दे।" दूसरे हाथ से कन्या को दबोच रखा है, कन्या भी देखने में सुन्दर है, किशोरी है, वह भी ऊँ-आ कर रही है, पत्ते की तरह भय से थर-थर काँप रही है, किन्तु उसका क्रन्दन स्वर फूट नहीं रहा है। दुष्ट कह रहा है-"यदि तूने तिजोरी की चाबी नहीं दी तो इस कन्या को मार डालूँगा, इसका गला घोंट दूँगा। इसकी इज्जत लूट लूँगा।"

महिला करुण स्वर में पुकार रही है- "मेरी बेटी को छोड़ दे, इसके हाथ मत लगा।"

दुष्ट कहता है- "ला तिजोरी की चाबी दे, मुझे धन चाहिए, धन नहीं मिलेगा तो फिर इसकी जान ले लूँगा, इज्जत लूट लूँगा।"

यह भयानक दृश्य देखकर मोहन तो सन्न रह गया, किन्तु दूसरे ही क्षण महिला और बालिका की सहायता के लिए उसके हाथ-पैर मचल उठे। घर का दरवाजा धकियाया, किन्तु भीतर से सांकल लगी थी, वह खुला नहीं। घर की दीवार अधिक ऊँची नहीं थी, मोहन फुर्तीले चीते की तरह छलांग लगाकर दीवार पर चढ़ा और धम्म से आंगन में कूद पड़ा। आततायी जब तक सावधान होता, मोहन ने उसे पीछे से कसकर पकड़ लिया, कन्या हाथ से छूट गई, महिला भी मुक्त हो गई। महिला ने दौड़कर दरवाजे के भीतर की सांकल खोल दी और बाहर जाकर जोर-जोर से चीखने-पुकारने लगी। पास-पड़ौस के लोग दौड़े आये। आततायी ने मोहन को नीचे गिरा दिया और छूटकर भाग गया। पड़ौसी लोगों ने सेठानी और उसकी गूंगी बेटी को धीरज बँधाया और मोहन को बार-बार धन्यवाद देने लगे। लोगों ने पूछा- "यह युवक परदेशी लगता है।

कौन है?''

मोहन ने बताया- ''मैं तो एक यात्री हूँ। सिद्धगिरि की यात्रा पर जा रहा हूँ, रास्ते चलते-चलते थक गया तो थोड़ी देर विश्राम करने यहाँ घर के बाहर ही बैठ गया था।''

लोगों ने सेठानी से कहा- ''देख, तेरी सहायता के लिए भगवान् ने इसे भेजा होगा, आज इस परदेशी ने तुम्हारी, तुम्हारी बेटी और धन-माल तीनों की रक्षा की है, अतिथि और उपकारी का स्वागत कर।''

सेठानी ने मोहन को घर में सम्मानपूर्वक बिठाया और प्रेम से मधुर भोजन कराया, फिर उसका आभार माना और पूछा- ''बेटा, तुम्हारा नाम क्या है?''

''मोहन!''

''वाह! सचमुच आज तुम मोहन (श्रीकृष्ण) बनकर मेरी रक्षा के लिए आ गये। भगवान् तुम्हारा भला करे। परन्तु बेटा, तुम अकेले ही इतनी लम्बी सिद्धगिरि की यात्रा पर क्यों जा रहे हो?''

मोहन ने कहा- ''मैं अपनी माँ के कहने से वहाँ के सिद्धयोगी से कुछ पूछने जा रहा हूँ, कहते हैं कि सिद्धबाबा सब कुछ सत्य-सत्य बता देते हैं, सबका भविष्य उनको मालूम रहता है।''

सिद्धबाबा का नाम और भविष्य का ज्ञान सुनते ही उस महिला के मन में भी लड्डू फूटने लगे, उसे भी एक बात पूछनी थी, उसने कहा- ''बेटा, तुमने मेरा इतना उपकार किया है तो एक उपकार और कर दो।''

''कहो, माताजी, आपका काम अवश्य करूँगा, जिसका नमक खाया, उसका काम नहीं करे तो वह मनुष्य नमक-हराम होता है, आपने तो मुझे नमक भी खिलाया है और मीठा भी। आप काम बताइये....मैं आपका काम जरूर करूँगा।''

महिला ने काम बताया- ''मेरी यह इकलौती लड़की है। किशोर वय की हो गयी है। लेकिन बोलती नहीं है, गूंगी है। सिद्धयोगी से यही पूछना है कि यह कब बोलेगी?''

''अवश्य पूछ लूँगा।'' मोहन ने कहा

''भूल तो नहीं जाओगे, बेटा?''

मोहन ने आश्वासन दिया- ''हरगिज नहीं भूलूँगा। आप निश्चिन्त रहें।''

रात भर मोहन ने वहीं विश्राम किया। सुबह मोहन चलने लगा तो उस महिला ने मोहन को पाथेय थमाया और मंगल-कामना प्रकट करते हुए कहा- ''तुम्हारी यात्रा शुभ हो। प्रश्नों का समाधान लेकर कुशल लौटो।''

''ऐसा ही होगा।'' मोहन ने कहा और यात्रा पर चल दिया। सेठानी ने जो खाने-पीने की वस्तुएँ दीं उनका उपभोग करता हुआ मोहन आगे चलने लगा। मुश्किल से वह २५ कोस ही चल सका कि खाने-पीने की वस्तुएँ समाप्त हो गईं। फिर वही भूख की समस्या उसके सामने उठ खड़ी हुई। *(क्रमशः)*

विग्रह से हैं हानियाँ : अष्टक

विद्यावारिधि डॉ. महेन्द्रसागर प्रचंडिया

साधु-रूप तो तीन हैं,
तीनों आत्म-स्वरूप।
साहू औ उझाय जी,
हैं आचार्य अनूप।।१।।

साधु-संघ का प्रमुख है,
है आचार्य महान्।
दीक्षा देता साधु को,
करे संघ-कल्याण।।२।।

देख-रेख पूरी करे,
पल-पल दे निर्देश।
समाधान करता त्वरत,
अनुशासन-आदेश।।३।।

संघ-शक्ति विख्यात है,
सुख-साता सर्वत्र।
हो प्रभावना धर्म की,
जीवन बने पवित्र।।४।।

देखो आगम-आँख से,
फैले समता-धर्म।
नियमित होते समय पर,
व्रत-विधान सत्कर्म।।५।।

संघ छोड़ता साधु जो,
एकल करे विहार।
गुरु अनुमति पाये बिना,
कैसे हो उद्धार।।६।।

गुरु से करता द्रोह जो,
फैलाये विद्वेष।
बटे शक्ति सम्पूर्णता,
हँसता लोक हमेश।।७।।

खूब विचारें भक्तगण,
और समाजी लोग।
विग्रह से हैं हानियाँ,
नाहक करें प्रयोग।।८।।

-मंगल कलश, सर्वोदय नगर, अलीगढ़-२०२००१

कपिल मुनि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर १० अक्टूबर २००६ तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को **श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर** द्वारा अपनी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। **पुरस्कारों की परिवर्तित राशि निम्नानुसार है- प्रथम पुरस्कार-२५० रुपये, द्वितीय पुरस्कार-२०० रुपये, तृतीय पुरस्कार- १५० रुपये तथा १०० रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। प्रतियोगिता में अब १० वर्ष से २१ वर्ष तक के छात्र-छात्रा भाग ले सकते हैं।**

कौशाम्बी के राजा जितशत्रु के यहाँ काश्यप नाम का एक ब्राह्मण पण्डित था। वह चौदह विद्याओं में पारंगत तथा राजधानी के अन्य सभी पण्डितों में अग्रणी था। राजा ने उसे मान के साथ जीविका भी दी। उसकी गुणवती भार्या ने एक पुत्ररत्न को उत्पन्न किया जो कपिल मुनि नाम से आगे विश्वविख्यात बना।

दैववश कपिलदेव को पिता की ओर से मिलने वाला सुख अधिक दिनों तक प्राप्त नहीं हो सका। अकस्मात् किसी रोग विशेष के कारण राजपण्डित काश्यप का देहान्त हो गया और कपिलदेव की अज्ञानता के कारण जितशत्रु ने राजपण्डित के पद पर किसी दूसरे ब्राह्मण को रख लिया। अपनी प्रतिभा और विद्वत्ता के बल पर थोड़े ही दिनों में वह भी काश्यप की तरह राजा का पूर्ण विश्वासपात्र बन गया।

एक दिन वह राजभवन से अपने घर को जा रहा था कि रास्ते में काश्यप की पत्नी यशा ने उसको देखा। उसको देखते ही उसे अपने पति के जमाने की याद आ गई और वह फूट-फूट कर रोने लगी। कपिल ने रोने का कारण पूछा तो माता बोली कि जिस प्रकार इस समय राज्य में इस ब्राह्मण की प्रतिष्ठा हो रही है, उसी प्रकार तेरे पिता की भी प्रतिष्ठा थी। मगर तेरी मूर्खता के कारण वह पद आज अपने घर से दूर चला गया। मुझे सहसा अपने पति के अतीत की

याद हो आयी और उसी से आंसू उमड़ आए।

कपिल बोला- "मेरी प्यारी माँ! तू अब इसके लिए अधिक रो मत। मैं जल्दी ही विद्याध्ययन कर पुनः अपने घर के खोए पद को प्राप्त करूँगा।" यह सुनकर माता बोली कि, यहाँ तो तुम्हें इस राजपण्डित की धाक से कोई पढ़ाना नहीं चाहेगा, अतः तुम श्रावस्ती चले जाओ। वहाँ इन्द्रदत्त नाम का तेरे पिता का एक मित्र रहता है। वह तुझको पढ़ायेगा।

कपिल माता की आज्ञा मान कर श्रावस्ती इन्द्रदत्त के घर पर पहुँचा और अपना पूरा परिचय दे दिया। पण्डित ने भी मित्र का पुत्र समझ कर कपिल का उचित सत्कार किया तथा उसे विद्याभ्यास कराने का वचन भी दिया। परन्तु इन्द्रदत्त जितना बड़ा विद्वान् था उतना ही बड़ा दरिद्री भी। वह अपने कुटुम्ब का निर्वाह भी मुश्किल से कर पाता था। अब कपिल की ओर फिकर शुरु हो गई। उसने उसी नगर के सेठ शालिभद्र को अपनी यह बेबसी बताई तो उसने कपिल के भोजन का प्रबंध अपने घर पर ठीक करा दिया। अब तो कपिल निश्चिन्त होकर विद्याभ्यास करने लगा।

संयोगवश शालिभद्र के घर में एक रूप-लावण्यमयी दासी थी। जवानी उसमें फूट रही थी, इधर कपिल भी ब्रह्मचर्य के तेज से दमक रहा था। नित्य के अधिकाधिक परिचय से वे दोनों एक-दूसरे के प्रेमजाल में फँस गए। फिर क्या था। कपिल की कार्यदिशा ही बदल गई। अब उसका मन पुस्तक से अधिक दासी के हाव-भाव की ओर मुड़ गया।

गुरु ने वस्तुस्थिति जानकर कपिल को बहुत कुछ समझाया, किन्तु परिणाम कुछ नहीं निकला। कपिल ने दासीत्याग के बदले विद्याभ्यास को ही तिलांजलि दे दी।

कुछ समय के बाद दासी गर्भवती हो गई और उसने कपिल को अपने भरण-पोषण के लिये कहा। कपिल यह सुनकर चिन्तित हो गया। दासी ने उसकी चिन्ता दूर करने लिए कहा कि इस नगर के महाराज बड़े उदार हैं। वह प्रातःकाल सर्वप्रथम आकर बधाई देने वाले ब्राह्मण को दो मासे सोना देता है। अतः नित्य प्रातः सबसे पहले जाकर आप दो मासे सोना ले आइए। इससे अपना गुजारा हो जायेगा। कपिल ने उसके कथनानुकूल प्रातः जाने का निश्चय कर लिया परन्तु मुझसे भी पहले कोई न चला जाय, इस भय से वह आधी रात

को ही घर से चल पड़ा। चोर समझकर वह सिपाहियों के द्वारा पकड़ा गया।

प्रातःकाल न्याय के लिए वह राजा के सामने उपस्थित किया गया। कपिल ने राजा से अपराध के बारे में पूछे जाने पर अपनी बीती सारी कहानी यथावत् बता दी। राजा कपिल की सत्यवादिता से बहुत प्रसन्न हुआ और उसे बंधन मुक्त कर कुछ माँगने को कहा। कपिल ने उत्तर दिया कि महाराज! कुछ सोचने के बाद माँगूँगा। राजा ने उसे सोचने के लिए समय दिया और वह पास के बगीचे में चला गया।

वह बगीचे में मन ही मन सोचने लगा कि राजा से क्या माँगू? हजार, अरे! वह तो लाख से बहुत कम है और लाख! वह भी करोड़ के सामने तुच्छ है। वह मन ही मन तृष्णा को धिक्कारने लगा कि, कहाँ दो मासे सोना और अब कहाँ करोड़ मुहरों पर भी असंतोष। धिक्कार है मुझे जो मैं एक कुलीन ब्राह्मण होकर तृष्णा के जाल में फँसकर इस हीन दशा में चला आया। इस तरह सोचते-सोचते उसे जातिस्मरण ज्ञान हो गया और वह साधु बन गया।

साधु का रूप धारण कर कपिल जब राजा के पास से जाने लगा तो राजा ने कहा- क्या अब भी तुमने कुछ माँगने का निश्चय नहीं किया? इस पर कपिल मुनि बोले कि- राजन! लाभ से लोभ बढ़ता है और उसका कोई अन्त नहीं मिलता। तृष्णा आकाश के समान अनन्त है। इसलिए इसका सर्वथा त्याग करना ही मैंने अब श्रेयस्कर समझा। अब तो मेरे लिए लाख 'राख' और करोड़ 'कौड़ी'से कुछ अधिक महत्त्व नहीं रखता। ऐसा कह कर मुनि आगे बढ़ चले।

सतत संयम की आराधना में विचरते हुए कपिल मुनि के छः मास बीत गए। उनके घाती कर्म नष्ट हो चले और वह केवली कपिल के नाम से जग में प्रख्यात हुए।

केवली बनने के बाद वे श्रावस्ती नगरी में बसने वाले ५०० चोरों को प्रतिबोध देने को गए तो चोरों ने उनको पकड़ कर मारना प्रारम्भ किया, मगर सरदार बलभद्र के समझाने पर गीत सुनाने के आश्वासन पर चोरों ने मारना बंद किया। उन चोरों को कपिल ने जो गीत सुनाया वह उत्तराध्ययन सूत्र के आठवें अध्ययन में ग्रथित है। चोरों ने क्रमशः गाथा से प्रतिबोध पाकर केवली के पास दीक्षा ग्रहण कर ली और सब के सब दीक्षित होकर कपिल केवली के संग चल पड़े।

प्रश्न

१. काश्यप सभी पण्डितों में अग्रणी क्यों माने जाते थे?

२. संधि विच्छेद कीजिये-

देहान्त, विद्याध्ययन, कथनानुकूल, विधान्यास, अधिकाधिक

३. मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिये-

फूट-फूट कर रोना, तिलांजलि देना।

४. अर्थ बताइए-

भार्या, पारंगत, विद्वत्ता, लावण्यमयी, जातिस्मरण ज्ञान, श्रेयस्कर

५. 'दरिद्र इन्द्रदत्त हृदय से उदार था'- क्या आप इस बात से सहमत हैं?

६. जो प्रेमजाल में फँस जाते हैं, वे लक्ष्य से भटक जाते हैं। क्यों?

७. "तृष्णा आकाश के समान अनन्त है" -अभिप्राय समझाइये।

८. निकृष्टता से उत्कृष्टता की ओर बढ़ने वाले कपिल मुनि के जीवन के सदृश अन्य किन्हीं दो महापुरुषों के नाम बताइये।

बाल-स्तम्भ [जुलाई -२००६] का परिणाम

जिनवाणी के जुलाई-२००६ के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'धर्म की राह पर' कहानी के प्रश्नों के उत्तर ५६ बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। प्राप्तांक २० में से दिए गए हैं। इस अंक की प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-२५०/-	गर्व लुंकड़-कोटा	२०
द्वितीय पुरस्कार-२००/-	संदीप जैन-ताल	१९.५
तृतीय पुरस्कार- १५०/-	वैभव मेहता-जोधपुर	१९.२५
सान्त्वना पुरस्कार- १००/-	रौनक डाकलिया-जोधपुर	१९
	पल्लवी जैन-जोधपुर	१९
	पारुल खिंवसरा-जोधपुर	१९
	यशवंत गोलेछा-ब्यावर	१९
	कमलेश जैन-पादरू	१९

श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा | श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः | जय गुरु मान

धर्मधरा पीपाड़ शहर में

जैन भागवती दीक्षा महोत्सव

आदरणीय धर्मप्रेमी बन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र!

आपको सूचित करते हुए परम प्रसन्नता है कि **आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, शीलव्रत के प्रेरक, आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा.की आज्ञा से आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४, शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ के पावन सान्निध्य में**

विरक्ता बहिन सुश्री स्नेहलता गादिया

एवं

विरक्ता बहिन सुश्री अंजू बाफना

की भागवती दीक्षा

वि.सं. २०६३ कार्तिक बदी ५, बुधवार, दिनांक ११ अक्टूबर २००६ को

अग्राङ्कित कार्यक्रमानुसार सम्पन्न होंगी।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि दीक्षा महोत्सव के पावन-पुनीत प्रसंग पर व्रत-नियमयुक्त श्रद्धा समर्पण के साथ जैन भागवती दीक्षा की अनुमोदना का लाभ प्राप्त करें।

दीक्षा स्थल

श्री ओसवाल लोड़े साजन विकास केन्द्र (कोट), पीपाड़ शहर

आयोजक

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पीपाड़ शहर

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, पीपाड़ शहर

एवं

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,जोधपुर

विरक्ता बहिन सुश्री स्नेहलता गादिया

जन्मतिथि- २ मई १९८१

जन्मस्थान-पीपाड़ शहर

निवास स्थान-पीपाड़ शहर

परदादा	:	स्व. श्री चम्पालाल जी गादिया
दादा-दादी	:	स्व. श्री रूपचन्द जी-स्व. श्रीमती बिदामकंवर जी स्व. श्री चाँदमल जी गादिया-स्व. श्रीमती गजरा कंवर जी
माता-पिता	:	श्रीमती आयचुकी देवी जी-श्री नवरतनमल जी गादिया
बड़े माता-पिता	:	श्रीमती पुष्पादेवी जी-श्री पारसमल जी गादिया
बहन-बहनोई	:	श्रीमती पंकज जी- श्री महेन्द्रकुमार जी आच्छा श्रीमती कमला जी-श्री राजकुमार जी बाफना श्रीमती ललिता जी-श्री महावीर जी सिसोदिया श्रीमती संगीता जी-श्री मनोहरचन्द जी भण्डारी
भाई-भाभी	:	श्रीमती बबिता जी-श्री प्रकाशचन्द जी गादिया श्री दिलीपचन्द जी गादिया
भतीजा	:	श्री प्रतीक जी गादिया
नाना-नानी मामा	:	श्रीमती सीता देवी जी- स्व. श्री तेजराज जी सेठिया, पीपाड़ श्री आशीष कुमार जी सेठिया

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ	:	दशवैकालिक, उत्तराध्ययन सूत्र, नन्दीसूत्र, सुखविपाक, तत्त्वार्थ सूत्र, अणुत्तरोववाई सूत्र, आचारांग सूत्र (प्रथम श्रुत स्कन्ध), वीर स्तुति।
स्तोक	:	२५ बोल, ६७ बोल, ३३ बोल, समिति-गुप्ति, गति-आगति, नव तत्त्व, कर्म-प्रकृति, ज्ञानलब्धि, थोक संग्रह भाग १ व २ के थोकड़े। आर्यपद, दिशाणुवाई, कर्मग्रन्थ १, २, ३, ४, इत्यादि अनेक थोकड़े।
आगम वाचनी	:	अन्तकृद्दशांग, कल्पसूत्र, निरयावलिया।
स्तोत्र	:	भक्तामर, कल्याणमन्दिर, महावीराष्टक, साधु वन्दना (तीनों), रत्नाकर पच्चीसी, चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र, प्रार्थना पंचविंशति, आत्मशुद्धि आदि।
अन्य	:	स्वाध्यायी के रूप में ७ वर्ष सेवा। शिक्षण बोर्ड की जैन सिद्धान्त रत्नाकर उत्तरार्द्ध परीक्षा उत्तीर्ण। जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग १ से ३ की परीक्षा उत्तीर्ण
वैराग्यावधि	:	दो वर्ष

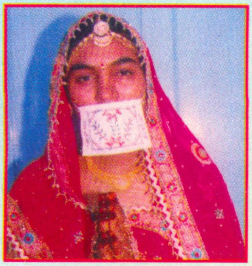

विरक्ता बहिन सुश्री अंजू बाफना

जन्मतिथि- २१ जुलाई १९८२

जन्मस्थान- कुड़ी (भोपालगढ़)

निवास स्थान- कुड़ी (भोपालगढ़)

दादा-दादी	:	श्रीमती गोमीदेवी-स्व. श्री चंपालाल जी बाफना
माता-पिता	:	श्रीमती पुष्पादेवी जी-श्री नेमीचन्द जी बाफना
बड़े माता-पिता	:	श्रीमती विमलादेवी जी-श्री बस्तीमल जी बाफना
		श्रीमती प्रेमकंवर जी-श्री मदनलाल जी बाफना
चाचा-चाची	:	श्रीमती चन्द्रकला जी-श्री गणपत जी बाफना
		श्रीमती पदमकंवर जी -श्री शांतिलाल जी बाफना
		श्रीमती शांतिदेवी जी-श्री सुन्दरप्रकाश जी बाफना
बहन-बहनोई	:	श्रीमती शर्मिला जी-श्री राजेश कुमार जी संखलेचा
		श्रीमती मंजू देवी जी-श्री मनोज जी बोथरा
		श्रीमती इन्द्रा जी- श्री दिलीपकुमार जी
		श्रीमती संगीता जी- श्री नवरतनमल जी
		श्रीमती रविना जी- श्री जयन्तीलाल जी
		श्रीमती कविता जी- श्री ललितकुमार जी
भाई	:	श्री मुकेश जी, श्री महेन्द्र जी
नाना-नानी	:	श्री धनराज जी रांका-श्रीमती नैनीदेवी जी
मामा	:	श्री चंपालाल जी, श्री कंचनकुमार जी, श्री अमरचन्द जी
		श्री जीतमल जी

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ	:	दशवैकालिक ५ अध्ययन, उत्तराध्ययन सूत्र १, ९, २८ अध्ययन, सुखविपाक सूत्र, वीर स्तुति आदि कण्ठस्थ।
स्तोक	:	२५ बोल, ६७ बोल, ३३ बोल, समिति-गुप्ति, गति-आगति, कर्म-प्रकृति, इत्यादि ३० थोकड़े।
आगम वाचनी	:	अन्तकृद्दशांग, कल्पसूत्र, नंदीसूत्र।
स्तोत्र	:	भक्तामर, आत्मशुद्धि आदि।
अन्य	:	स्वाध्यायी के रूप में २ वर्ष सेवा। शिक्षण बोर्ड की जैन धर्म मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण।
वैराग्यावधि	:	दो वर्ष

अभिनन्दन समारोह

वि.सं. २०६३ कार्तिक वदी चतुर्थी, मंगलवार, १० अक्टूबर २००६

समय : सायं ७.३० बजे से

स्थान : ओसवाल वाटिका, सरकारी अस्पताल के पास, पीपाड़

दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम

वि.सं. २०६३ कार्तिक वदी पंचमी, बुधवार, ११ अक्टूबर २००६

शोभायात्रा : प्रस्थान - प्रातः७.३० बजे निवास स्थान से।

दीक्षापाठ : प्रातः १०.०० बजे
परमश्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से।

विनीत

हस्तीमल बोहरा
अध्यक्ष

सुमतिचन्द मेहता
मंत्री

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पीपाड़ शहर

कैलाशचन्द हीरावत
अध्यक्ष

सुमेरसिंह बोथरा
कार्याध्यक्ष

नवरतन डागा
महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

विशेष प्रार्थी

पारसमल, नवरतनमल, प्रकाशचन्द, दिलीपचन्द, प्रतीक गादिया परिवार, **पीपाड़**
बस्तीमल, मदनलाल, नेमीचन्द, धनपतराज, शांतिलाल, चन्द्रप्रकाश, मुकेश, महेन्द्र बाफना परिवार, **कूड़ी**

पत्राचार सम्पर्क सूत्र

१. अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. ०२९१-२६३६७६३, २६४१४४५
२. श्री हस्तीमल जी बोहरा, अस्पताल के पास, आदर्श नगर, पो. पीपाड़ शहर, जिला-जोधपुर (राज.), फोन नं. ०२९३०-२३३६६१
३. श्री सुमतिचन्द जी मेहता, सदर बाजार, पो. पीपाड़ शहर, जिला-जोधपुर (राज.), फोन नं. ०२९३०-२३३०६९, २३३८४२, मो. ९४१४४६२७२९
४. श्री श्रेणिक जी कटारिया, कटारियों की पोल, पो. पीपाड़ शहर, जिला-जोधपुर (राज.) फोन नं. ०२९३०-२३३०२९, २३४८५१, मो. ९४१४४९९२२०

विशेष- अपने पधारने की पूर्व सूचना सम्पर्क सूत्र पर अवश्य भिजवावें।

नर नारायण बन जायेगा

आचार्यकल्प श्री शुभचन्द्र जी म.सा. के सुशिष्य **श्री सुमतिमुनि जी म.सा.** द्वारा सम्यक्त्व पराक्रम पर दिये गये प्रवचनों से संकलित पद्य

गुरु साधर्मी शुश्रूषा

नर नारायण बन जायेगा ।।टेर।।

गुरु वचनों को धारण करना, स्वधर्मी जन सेवा करना।
और धर्म विनय पालन करना, जो विनयवान बन पाएगा।।१।। नर..
चउ चतुर्गति में वह नहीं जाता, सद्गति मानव भव को पाता।
दैविक भव में वह सुख पाता, गुणियों के गुण जो गाएगा ।।२।। नर..
विशुद्धि सिद्धि गति गरता, विनय के कार्य सभी करता।
अन्यों को भी शिक्षित करता, जो निज स्वरूप पा जायेगा।।३।। नर..

आलोचना

खुद के दोषों को जानेगा, खुद के पापों को देखेगा।
लघु बनकर के स्वीकारेगा, जो ऋजुता को अपनायेगा ।।१।। नर..
संयम तप के सुख चाहते हैं, संयम तप से नहीं चाहते हैं।
संयम तप दुःख नहीं गाते हैं, जो शल्य रहित बन पायेगा ।।२।। नर..
ऋजु भावों से माया हटती, दो वेद का फिर नहीं बंध करती।
पहले बंधन को अलग करती, लाघव जीवन बन पायेगा ।।३।। नर..

निंदा एवं गर्हा

स्वनिंदा से बंधन खुलते, पर निंदा से बंधन जुड़ते।
बंधन से जन्म-मरण बढ़ते, स्व-पर को समझ जो पायेगा।।१।। नर..
धर्मी स्व की निंदा करता, पापी पर की निंदा करता।
पर परिवाद जिन्दा करता, जो विकथा से बच पायेगा ।।२।। नर..
निंदा से पश्चात्ताप आता, फिर भाव विरक्ति का आता।
करण गुणश्रेणी को पाता, अणगार मोह खपायेगा।।३।। नर..
चन्दना ने शिष्या से सीखा, माता से अरणक ने सीखा।
गौतम ने प्रभुवर से सीखा, कार्तिक श्रेष्ठी बन पायेगा।।४।। नर..
गर्हा गुरु साक्षी से होती, गर्हा गौरव को है हरती।
गर्हा शुभ योगों को करती, शुभ से शुद्ध में आ पायेगा।।५।। नर..

-संकलनकर्त्री : श्रीमती रतनदेवी चोरडिया, जोधपुर

अपनी जड़ों की ओर लौटने का प्रयास

श्री राजेश मूथा

श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा पिछले कई वर्षों से ग्रीष्मावकाश में छात्र-छात्राओं को धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण देने हेतु शिविर आयोजित किये जाते रहे हैं। इस वर्ष महावीर नगर, जयपुर स्थित स्थानक में आयोजित शिविर में कक्षा ६ में अध्ययनरत मेरी पुत्री एवं ६ वर्षीय पुत्र ने भाग लिया। दोनों प्रातःकाल शिविर में अध्ययन करने जाते थे।

एक दिन मैं बाल्टी में पानी भरकर बाहर अपनी कार को धोने के लिए जा रहा था कि मेरी पुत्री ने मुझे कार को धोने से यह कहकर रोक दिया कि "पानी को बेकार में व्यर्थ न करें" आपको मालूम नहीं कि इससे कितने जीवों की हिंसा होगी? मैंने उससे प्रश्न किया कि तुमको कैसे मालूम चला कि पानी में जीव होते हैं और इसका उपयोग अत्यंत सावधानी से करना चाहिए? उसने कहा कि हमें शिविर में इस बारे में बताया और समझाया गया है। अबोध बालिका के सच और साहसी कथन ने मुझे कार में पानी का दुरुपयोग करने से रोका और उन क्षणों में मैंने अपने आपको बहुत नासमझ और बौना महसूस किया।

मेरा पक्का विश्वास है कि सच और साहस से किसी व्यक्ति को उसकी गलती का सही समय पर आभास करवा देना उस धार्मिक एवं आध्यात्मिक शिक्षण की देन है, जिसमें वह बालिका प्रतिदिन जाती थी। सच को हम तथाकथित बुद्धिजीवी बरसों से जानते हैं, समझते हैं फिर भी वह सच किताब में पढ़ने और बोलने की एक वस्तु बनकर रह जाता है, उस सच को कोई चरित्र या आचरण का जामा नहीं पहनाता। रोजमर्रा की भागदौड़ तनाव से परिपूर्ण महानगरीय जीवन ने मानव मन को इतना जकड़ लिया है कि उसे सत्य को समझने और उस पर अमल करने की फुर्सत नहीं है। ऐसे कठिन दौर में जब हम अपनी संस्कृति, अपनी पहचान को भूलते जा रहे हैं तो लगता है कि बच्चों से ज्यादा बड़ों को नैतिक एवं धार्मिक शिक्षण की आवश्यकता है। ऐसे समय में इस प्रकार के शिविर तथाकथित बुद्धिजीवी व्यक्तियों के लिए भी आयोजित करना बहुत जरूरी है। बच्चों के माध्यम से ही सही, बड़े भी सच्चाई का सामना कर अपनी जड़ों की ओर लौटेंगे, ऐसा विश्वास है।

-एडवोकेट, लायर्स चैम्बर नं. १७, राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर

तीर्थ स्थान और पावन धाम कहाँ?

श्री लालचन्द्र नाहटा 'तरूण'

तीर्थंकरों के निर्वाण का वर्णन जब हम आगमों एवं अन्य ग्रन्थों में पढ़ते हैं तो एक बात स्पष्ट रूप से सामने आती है कि तीर्थंकरों ने अमुक स्थान पर संथारा संलेखना किया और शुक्ल ध्यान के तीसरे-चौथे पाये पर आरूढ़ होकर योग-निरोध किया और उसी स्थान पर से वे सिद्ध-बुद्ध और मुक्त हुए। इसके पश्चात् इंद्रादिक देवगण एवं देवियाँ आयीं, जन समूह एकत्रित हुआ। देवताओं ने तीर्थंकर महाप्रभु के लिए भव्यातिभव्य शिविकाओं का निर्माण किया और तीर्थंकरों के आत्मारहित शरीर को शिविका पर आरूढ किया। इस प्रसंग का वर्णन सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ विद्वान् आचार्य श्री विजयेन्द्रसूरि जी म.सा. 'तीर्थंकर महावीर' पुस्तक के पृष्ठ ३०६ पर इस प्रकार करते हैं "इन्द्रों ने शिविका उठायी उस समय बंदी जनों के समान जय-जय करते हुए देवताओं ने पुष्प वृष्टि प्रारम्भ की। गंधर्व देव उस समय गान करने लगे, सैकड़ों देवता मृदंग और पणव आदि वाद्य बजाने लगे। प्रभु की शिविका के आगे शोक से स्खलित देवांगनाएँ अभिनव नर्तकियों के समान नृत्य करती चलने लगी।"

इस प्रकार के वर्णनों से स्पष्ट सिद्ध होता है कि तीर्थंकर महाप्रभु का निर्वाण स्थल अलग होता था एवं दाह संस्कार स्थल अलग होता था। आज भी गुरुजनों के स्वर्गवास स्थल, धर्मस्थानक, मंदिर, उपाश्रय आदि होते हैं पर दाह संस्कार स्थल (अंत्येष्टि स्थल, चिता स्थल) तो अलग स्थानों, श्मशानों आदि पर ही होते हैं। इसी प्रकार गृहस्थों के भी दोनों स्थान अलग-अलग ही होते हैं। कछ समय से एक परंपरा का प्रारम्भ हुआ। दाह संस्कार स्थलों, चिता स्थलों को पवित्र मानने का, तीर्थ मानने का, वहाँ की यात्रा करने का, इसी की नकल में अपने गुरुओं के दाह संस्कार स्थल पर पावन धाम बनाने का। सभी पावन धाम एवं तीर्थ स्थान चिता स्थलों पर ही बने हुए हैं। वैसे तथ्यात्मक दृष्टि से विचार करें तो संसार में कोई स्थान ऐसा नहीं है, जहाँ से कभी न कभी, कोई न कोई आत्मा मोक्ष में नहीं गई हो, फिर किसी भी स्थान विशेष को पवित्र या अपवित्र कैसे माना जा सकता है?

किन्तु यदि तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो एक और तो वह स्थान है, जहाँ तीर्थंकर महाप्रभु ने सर्वोत्कृष्ट साधना की, सर्वोत्कृष्ट ध्यान किया, शेष सभी कर्मों का क्षय किया और सिद्ध-बुद्ध और मुक्त होकर सर्वोत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया, दूसरी ओर वह स्थान है जहाँ तीर्थंकरों के और गुरुओं के आत्मा रहित शरीर का दाह संस्कार हुआ।

प्रज्ञापना सूत्र (श्री मधुकरजी) पृष्ठ ८३ सूत्र ९३ में भगवान ने स्वयं फरमाया है कि "विगतजीवकलेवरेसु वा" अर्थात् जिस शरीर में से जीव निकल गया हो उसमें संमूर्च्छिम मनुष्य पैदा हो जाते हैं। इस आगम-वाक्य के अनुसार दाह संस्कार करते समय शव में पैदा हुए असंख्याता त्रस और स्थावर जीवों की हिंसा होती है। वैसे भी अग्नि जलाने में और हवा चलाकर उसे प्रज्वलित करने में और पानी से उसे बुझाने में षट्काय की हिंसा सुनिश्चित ही है। फिर उत्कृष्ट साधना स्थल की उपेक्षा कर षट्काय के जीवों की हिंसा के स्थल को तीर्थ स्थान और पावन धाम मानना क्या उचित है?

एक स्थान पर जाने से साधनानुमोदन हो भी सकता है, जबकि दूसरे स्थान पर हिंसानुमोदन की संभावना नहीं है क्या?

जहाँ तक साधकों के पावन परमाणुओं के स्पर्शन की कल्पना का प्रश्न है तो वे साधना स्थल पर तो फिर भी हो सकते हैं, चिता स्थल पर तो होंगे ही कैसे? यदि होंगे भी तो वे चिताग्नि में भस्मीभूत हो गये होंगे। ऐसी परिस्थिति में तीर्थ स्थानों एवं पावन धामों के श्रद्धालुओं के लिए उपयुक्त स्थल कहाँ माने जायें?

मेरी इस जिज्ञासा का उद्देश्य केवल मात्र तथ्यान्वेषण ही है। लेख में अभिव्यक्त जिज्ञासा पर सुज्ञ विद्वज्जन शीघ्र प्रकाश डालने की कृपा करेंगे, ऐसी आशा है।

संदर्भ

१. (अ) जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग प्रथम, पृष्ठ ४७२

(ब) तीर्थंकर महावीर- श्री विजयेन्द्र सूरि, पृष्ठ ३०६

(स)जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति, पृष्ठ ७२-७३, सूत्र ४३

(द) त्रिषष्टि श्लाका पुरुष चरित्र, पर्व १० सर्ग १३ आदि के आधार पर।

-सर्राफा बाजार, केकडी (राज.)

भ्रूणहत्या के लिए भोगवाद दोषी

डॉ. दिलीप धींग

नारी ही नारी की दुश्मन है, यह बात कन्या भ्रूण हत्या पर भी लागू होती है। किसी भी माँ की रजामन्दी के बगैर गर्भपात का फैसला नामुमकिन है। इस संदर्भ में शिक्षा का भी कोई सकारात्मक प्रभाव दिखाई नहीं पड़ता है। अलबत्ता, पढ़ी-लिखी माताओं का रवैया अधिक स्वच्छन्द देखा गया है। महिलाओं के समूह में ऐसी बातें होती हैं और अधिकतर मामलों में महिला चिकित्सक के परामर्श से 'सफाई करवाने' के गंदे कार्य को अंजाम दे दिया जाता है। मैंने एक डबल एम.ए. युवति को सुझाव दिया कि माँ और मातृत्व की गरिमा के लिए स्वाभाविक तौर पर जो भी हो, उसे स्वीकार करना चाहिये। वह बोली कि पहली बार उसे लड़का ही चाहिये और दूसरी बार वह कोई रिस्क और चान्स नहीं लेना चाहती है।

अब तो ऐसा भी नहीं है कि कन्या भ्रूण हत्या ही हो रही हो, नर भ्रूण हत्या भी बड़ी तादाद में हो रही है। इसके लिए कोरी आधुनिकता से उपजा अति भोगवाद जिम्मेदार है। हमारी पुनीत संस्कृति के साथ यह कैसा मजाक है कि भ्रूणहत्या विषय पर तो सब हो-हल्ला मचा रहे हैं, परन्तु कोई उसके बुनियादी कारणों की चर्चा नहीं कर रहा है। मेरे विनम्र मत में सदाचार, आत्म-संयम और ब्रह्मचर्य का ऐसा अनादर कभी नहीं हुआ होगा, जितना वर्तमान के माहौल में किया जा रहा है। भ्रूणहत्या असंयम और अविवेक का एक दुष्परिणाम है।

आपने जैन समाज के लड़के-लड़कियों का लिंगानुपात १००० : ८७८ बताया। सामाजिक दृष्टि से यह अनुपात चिन्ताजनक व चिन्तनीय है। भारत की कौटुम्बिक व्यवस्था में ऐसा क्रूर काल कभी नहीं आया, जब कोख को कत्लखाने में तब्दील कर दिया गया है। दहेज जैसे कारणों को जिम्मेदार ठहराना अब गुजरे जमाने की बात है। मैं ऐसी अनेक दुर्घटनाओं का साक्षी हूँ, जिनके लिए दहेज को जिम्मेदार बताया गया, परन्तु उन हादसों के मूल में दहेज था ही नहीं। मुकदमा बनाने के लिए दहेज कानून का बहुत दुरुपयोग हुआ है। अनेक निर्दोष मगर नासमझ लोग उसकी सजा भोग रहे हैं।

देश की नारियाँ यदि भ्रूण हत्या नहीं करने/करवाने की प्रतिज्ञा कर लें तो आने वाले समय में जनसंख्या का बिगड़ा लैंगिक अनुपात पुनः सामान्य हो जायेगा। वर्तमान नारी जागरण की दिशाएँ भड़काऊ और भटकाऊ अधिक हैं। इससे हमारे पारिवारिक सामाजिक संकट बढ़ रहे हैं। नारियों और नारी-संगठनों को भ्रूणहत्या के मुद्दे की बेलौस समीक्षा करनी चाहिये।

(जिनवाणी, अगस्त २००६ के सम्पादकीय 'भ्रूणहत्या का दंश' से अनुप्रेरित)

-बम्बोरा, उदयपुर (राज.)

तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. को गुणस्मरणपूर्वक श्रद्धाञ्जलि

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती एवं परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में पीपाड़ में विराजित तपस्वी, सेवाभावी, संयमनिष्ठ, पुरुषार्थी, सन्तरत्न श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. का ४ अगस्त २००६ की रात्रि में लगभग १२.३० बजे समाधिपूर्वक देवलोकगमन हो गया। ५ अगस्त २००६ को दिन में २.३० बजे पार्थिव देह का अन्तिम संस्कार श्रद्धालुओं की महती उपस्थिति में किया गया। मुनिपुंगव श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. को देश के विभिन्न ग्राम-नगरों में चार लोगस्स के पाठ से श्रद्धाञ्जलि देते हुए गुणानुवाद सभा आयोजित की गई। यहाँ पर बंगारपेट, पीपाड़, जोधपुर आदि कतिपय स्थानों की गुणानुवाद सभा का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है, जिससे तपस्वी सन्तरत्न के जीवन की विशेषताओं का बोध हो सकेगा। -*सम्पादक*

संक्षिप्त जीवन-विवरण

जन्म	:	जोधपुर, माघशुक्ला १२-१३, विक्रम संवत् १९९१, १५ फरवरी, १९३५
माता-पिता	:	वीरमाता श्रीमती मानकंवर-वीरपिता श्री पारसमल जी भण्डारी
दीक्षा	:	बैंगलोर, माघशुक्ला पंचमी, विक्रम संवत् २०३७, ९ फरवरी १९८१
दीक्षा-गुरु	:	अध्यात्मयोगी पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.
देवलोक-गमन	:	पीपाड़, श्रावण शुक्ला १०, वि.सं.२०६३, ४ अगस्त २००६ रात्रि १२.३० बजे
जीवन की प्रमुख विशेषताएँ	:	महान् तपस्वी, दृढसंयमी, सेवाभावी, रसनाविजयी, स्वाध्यायरसिक, अल्पभाषी, मनोबल एवं संकल्पबल के धनी, स्पष्टवक्ता एवं श्रमनिष्ठ सन्तरत्न।

बंगारपेट- परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि सन्तरत्नों के सान्निध्य में दिनांक ५.८.२००६ को ही ४ लोगस्स का कायोत्सर्ग कर दिवंगत तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. को श्रद्धांजलि दी गई। व्याख्यानादि दैनिक कार्यक्रम स्थगित किए गए तथा दिनांक ६.८.२००६ को ९.१५ बजे गुणानुवाद सभा आयोजित हुई। संचालन श्रीमान् नवरतनमल जी भंसाली, बैंगलोर ने किया।

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने मार्मिक पंक्तियों में फरमाया-

आया सो ही जायेगा, अवतारादि विशेष।
तू भी यों ही जायेगा, इसमें मीन न मेष॥

पूज्य गुरुदेव श्री फरमाया करते थे- तीन कारणों से जीव को जीव के बारे में जानकारी की इच्छा होती है- उपकारित्व, कर्त्तव्यपालन और संयम-पालन। पहला कारण उपकार बताया है। मक्खी, मच्छर कितने ही जन्मते हैं, कितने ही मरते हैं, लेकिन आज तक उनकी गणना किसी ने नहीं की, क्योंकि यहाँ उपकार नहीं हो रहा है। पशु-मनुष्य की गणना की जाती है, क्योंकि ये प्रत्यक्ष, परोक्ष में उपकारी हैं। इसी कारण उपकारी का जन्म याद आता है। कुछ दान, शील, तपस्या, निष्ठा के कर्त्तव्यों के कारण याद किये जाते हैं। घर आया हुआ खाली नहीं जाये, ऐसे दानियों को दान के कारण याद करते हैं। जो दुःखियों के दुःख को दूर करते हैं, ऐसों का जन्म भी याद किया जाता है। लेकिन संयम पालने वालों के जन्म और मरण दोनों याद किये जाते हैं। ऐसे ही जन्म लेकर जीने वाले प्रकाशमुनि जी म.सा. का जीवन था। जन्म वि.सं. १९९१ में, वि.सं. २०२३ में ३२ वर्ष की उम्र में तरुण अवस्था में विषय भोगों से विरत हो ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। लगभग ४६ वर्ष की उम्र में पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से बैंगलोर में दीक्षित हो संयमारूढ़ हुए। पूज्य सागरमल जी म.सा. ने अपने परिवारजनों से कभी ५ मिनट बैठकर भी बात नहीं की, वे कहते- मेरे पास क्या रखा है, कुछ सीखना है तो पूज्य गुरुदेव (श्री शोभाचन्द जी म.सा.) के समीप उनके चरणों में बैठो। इस तरह कभी उन्होंने मोह जगने नहीं दिया। ऐसी ही प्रवृत्ति के श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. थे। स्वाध्याय घंटों करते पर किसी से ५ मिनट बात करना भी खारा लगता। जब आप स्वाध्यायी थे, पर्युषण में सेवा देने पधारते, पूरे पर्युषण पर्व में भोजन नहीं करते। संयम अंगीकार करने के पश्चात् भी आपकी तपस्या का क्रम बना रहा। वे उपवास करते, भूखे रहने से कभी गर्मी चढ़ जाती, उनको अपना खयाल भी नहीं रहता था, इस कारण मैंने उनको तपस्या करने के लिये मना किया। इस पर वे कहते- बड़े गुरुदेव तप-त्याग की प्रेरणा करते थे, आप मनाही क्यों करते हैं? कभी उनको उपवास के बजाय एकासन करने के लिये कहा जाता, तो वे एकासन के प्रत्याख्यान ले लेते, फिर कहते अन्नदाता उपवास ही करा दीजिये। वे बीमारी में भी भोजन नहीं करते। प्रायः उपवास ही उनकी प्रिय दवा थी। आग्रह करने वाला थक जाता फिर भी वे तपस्या के भाव रखते थे। वे गुरुदेव से यह कहते- मेरे से कोई दूसरी आराधना नहीं होती, अतः आप उपवास के लिये कृपया मना नहीं किया करें। सेठां को बुखार तो दोरो उतरे, लेकिन किसान को जल्दी उतरे। वे तपस्या में भी सेवा बराबर करते। संत जीवन में सेवा की प्रभावना व

समर्पित जीवन जो होना चाहिये वैसा ही प्रकाशमुनि जी म.सा. में प्रत्यक्ष देखा। स्वाध्याय, तप और सेवा इन तीनों को आपने जीवन का प्रमुख अंग बना लिया था। आप रात्रिकालीन सेवा में सदैव तत्पर रहते, सर्दी में सब संत अन्दर सोते, आप बाहर सोते, कभी किसी रत्नाधिक संत को परठने रात में नहीं जाने दिया, स्वयं उठ पातरा ले लेते। आपका प्रतिदिन ३-४ घंटे तो स्वाध्याय चलता ही था। सेवा के लिए चातुर्मास में भी अकेले जाने को तैयार। कभी-कभी सेवा करने वालों को भी अहंकार आ जाता है। सहन करने वाला ही सेवा कर सकता है। शायद ही आपने अपनों से बड़े को कभी कोई जवाब दिया हो। हमें उठने के लिए कहना पड़ता था, उन्हें बैठने के लिए कहना पड़ता, फिर भी खड़े रहकर बड़ों का सम्मान करते, यह उनकी आदत सी बन गई, वे घंटों खड़े रहकर स्वाध्याय करते रहते या माला फेरते रहते। वे दोनों प्रतिक्रमण के समय बराबर वंदना किया करते। शरीर का कद छोटा, लेकिन भावनाएँ मोटी। वे तपस्वी, सेवाभावी, संयमी आदि गुणों से पूर्ण थे, इसी कारण उनका जन्म भी एवं मरण भी याद किया जा रहा है। श्रद्धापूर्वक, भावपूर्वक ऐसी आत्माओं का गुण स्मरण करके ही नहीं रहे, जीवन में आचरित करें.... इन्हीं भावों के साथ..

इससे पूर्व सर्वप्रथम **श्री पी.एस. सुराणा, चेन्नई** ने बताया कि संयम लेने से पूर्व ही आप तपस्वी व स्वाध्यायी थे। पर्युषण में अठाई की तपस्या कर घर आकर पारणा करते। आपको उच्चकोटि के उच्चतम साधक गुरु हस्ती मिले, आपने संयम ले जीवन सार्थक कर लिया, मैं संयम लेने की भावना होते हुए भी नहीं ले पाया। तपस्या, सेवा आपके गुण थे। **श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल, बैंगलोर** ने कहा- "आपकी आत्मा पुण्यार्जन कर इस संसार में आई। समर्पणता के भावों के साथ सजगता बढ़ी। बैंगलोर की धरा पर संयम ले २६ वर्ष तक शुद्ध संयम का पालन किया। रत्नों की धरती पीपाड़ में आपकी देहरत्न पंचतत्त्व में विलीन हो गई। बैंगलोर संघ की तरफ से श्रद्धास्पद श्रद्धांजलि। **श्री पी.एम.चोरडिया, चेन्नई** ने कहा कि उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान् महावीर ने गणधर गौतम को ३६ बार प्रमाद मत करो का संकेत किया, आपने पद्यानुवाद के माध्यम से 'हे गौतम तुम प्रमाद न करो' सुनाया और कहा कि श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. के जीवन में संयम पथ पर यह उक्ति अक्षरशः चरितार्थ होती है। आपने भी कभी प्रमाद को समीप नहीं फटकने नहीं दिया। आप तपस्या, सेवा एवं पुस्तकें पढ़ने, स्वाध्याय करने में लीन रहते। आप अल्पभाषी थे। यहं आपका विशिष्ट गुण था। **विरक्ता नेहा चोरडिया** ने कहा कि- चरैवेति चरैवेति का पालन कर संयम में सजगता वाले विरले ही संत होते हैं, वाटिका में अनेक फूल खिलते हैं, अनेक मुरझा

जाते हैं। गगन में अनेक तारे चमकते हैं, कई विलीन हो जाते हैं, इस धरा पर अनेक रत्न दीप्त होते हैं, पर हीरा होता है कोई-कोई। श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. तपस्वी, सेवाभावी, अल्पभाषी, स्वाध्याय में रत रहने वाले मनस्वी के गुण स्मरण करते हुए शत-शत वन्दन। **श्री नवरतनमल जी भंसाली, बैंगलोर** ने कहा कि श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. १९८१ में बैंगलोर में दीक्षित हुए। आपकी बड़ी दीक्षा के प्रसंग का लाभ शूलै संघ को ही मिला था, दीक्षा संयमी जीवन का प्रारम्भ है। आपने जिस महान् उद्देश्य व लक्ष्य को लेकर संयम पथ अपनाया, अन्त तक दृढ़ता से आपने उसका पालन किया। जो संत गुरु को मानता है वह हर क्षेत्र में आगे बढ़ता है। आपने सेवा-तप-स्वाध्याय साधना में लीन रह, रत्नवंश में अपनी पहचान बनाई। तपस्वीरत्न के न रहने से रत्नवंश की अपूरणीय क्षति हुई है।

श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. ने 'प्रभु का नाम भाया है, उन्हें संसार क्या करना।'' भजन की कड़ियाँ पूर्ण कर फरमाया- विनाशी शरीर में अविनाशी तत्त्व विद्यमान है। इस काया का कोई भरोसा नहीं, आत्मा कब निकल जाये पता नहीं। जैसे पिंजरे का पक्षी अवसर पाकर पिंजरे से बाहर निकल जाता है, उसी प्रकार जब तक आयुष्य है तब तक यह जीव शरीर में रहता है। सांसारिक प्राणी इस जन्म-मरण की परम्परा से युक्त होता है, वीतरागी इससे सर्वथा परे होते हैं। पुरुषार्थ करने वाला न आयु देखता है, न युवावस्था। श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. के संयमी जीवन में सजगता थी, आप श्री सदैव गुरुसेवा में तत्पर रहते थे। उनका अपने शरीर के प्रति ममत्व नहीं था। आपमें सेवा व तपस्या का विशेष गुण था। उन्होंने सदैव जो करना है, उसे कल के भरोसे नहीं छोड़ा। बराबर पुरुषार्थ करते रहना आपका अभीष्ट मंत्र था। हम भी मुनिश्री के गुणों को अंगीकृत कर भव सीमित बनायें।

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने फरमाया कि श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. की काया छोटी थी, लेकिन सेवा व तपश्चर्या दृढ़ता के साथ करने का लक्ष्य रहता था। कद छोटा था पर विहार लम्बे-लम्बे किये। हैदराबाद से रोजाना दिनभर चलकर ४०-४५ कि.मी. का विहार करना, रास्ते में जैसा आहार पानी मिला, रूखा-सूखा मिला, ले लेना व विहार का क्रम रखना। बहुत कम दिनों में आप हैदराबाद से विहार कर जोधपुर पधार गये। आपके धनिया, मिर्ची व टमाटर के अलावा अन्य हरी वनस्पति का त्याग था। महीने में दो बेले अवश्य करने, सभी पर्व तिथियों पर उपवास करना, पौरसी होने पर पारणा करना। पर्युषण के आठ दिन, एक दिन आने व एक दिन जाने यदि पंचमी संवत्सरी के अगले दिन होती तो उस दिन भी आपके उपवास इस

प्रकार जब आप स्वाध्यायी थे तब आपके पर्युषण पर प्रायः १०-११ की तपस्या हुआ करती। जब से संयमारूढ़ हुए मैंने देखा- जयपुर में दूर-दूर के घरों से दो पातरे पानी भरकर लाना एवं दो मंजिल चढ़ना भी आपके लिए आसान सा था। अस्पताल में सेवा के लिये तत्पर रहना। पहले साथी मुनियों को आहार कराना, तब तक आहार ठण्डा हो जाता। रसना पर गजब का नियंत्रण था। मुनि श्री ने दशमी को सायं उपवास के प्रत्याख्यान लिये थे, उसी में गये। संयमी आत्मा की कमी हुई है। आप धर्माचरण के साथ गुण की सौरभ से अपने जीवन को सुवासित करेंगे।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने कहा- 'तवे सूरा अणगारा' अणगार तप करने में शूर होते हैं। तपकर कर्मों की निर्जरा कर लेते हैं। चार प्रकार के शूरवीर बताये हैं- वे श्रमणवीर, तपःशूर, संयम शूर, सेवाशूर। आपने तप में पराक्रम किया। आपके ३३ की तपस्या थी, पारणा था, पारणा किया नहीं, स्वाध्याय करने बैठ गये, पारणे की कोई चिन्ता नहीं, इच्छा नहीं। उनसे कहा- पारणे का समय हो गया है, सब सामग्री है पारणा कर लें। उन्होंने कहा- मैं पारणे की सामग्री स्वयं लाऊँगा। आप १२ बजे लेने गये और २ बजे वापस पधारे। आपको आश्चर्य होगा, पारणे में जो सामग्री लाये, वह थी- लौंग, छाछ और राख। छाछ में राख मिलाई और पारणा कर लिया। वह भी मध्याह्नोत्तर काल में। किसी गर्म पदार्थ की इच्छा नहीं। आप पारणे में भी पातरे लेकर पानी लेने चले जाते। सारे दिन स्वयं का काम स्वयं करते थे। उनकी निद्रा श्वान निद्रा थी। सदैव सेवा में तत्पर। आपमें सजगता व समर्पणता अनूठी थी। तेले में भी पारणा नहीं करके, गुरुदेव के लिये दवा लेने चले जाते। ऐसे तपस्वी सन्तरत्न की संघ में कमी हुई है।

पीपाड़ सिटी- परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि संतवृन्द एवं सेवाभावी तपस्विनी महासती श्री शान्तिकंवर जी म.सा. आदि सतीवृन्द की उपस्थिति में ६ अगस्त २००६ को तपस्वी एवं सेवाभावी सन्त रत्न श्री प्रकाशचन्द्र जी म.सा. के गुण-स्मरण हेतु गुणानुवाद सभा आयोजित की गई। सर्वप्रथम मधुरव्याख्यानी **श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा.** ने श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. के गुणों को स्मृति पटल पर लाते हुए कहा कि श्री प्रकाशमुनि जी हृदय से सरल, निष्कपट, सेवाभावी, खरे एवं रत्नसंघ के प्रति समर्पित महान् संत रत्न थे। **महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा.** ने तपस्वी संत रत्न के गुणों का मधुर एवं प्रभावी शब्दावली में कथन करते हुए फरमाया कि श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. ने सजगता के साथ संयम धर्म का पालन किया एवं समत्व भावना के साथ रहने का

अभ्यास किया। **श्रद्धेय श्री यशवंतमुनि जी म.सा.** ने अपने वरिष्ठ संतप्रवर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनका जीवन स्वाध्याय, सेवा, तप, संयम और संघ को समर्पित था। संरक्षक-मण्डल के संयोजक **श्री मोफतराज जी मुणोत** ने मुनिश्री के गुणगान करते हुए कहा कि तपस्वी एवं सेवाभावी संत के चले जाने से संघ में एक अच्छे संत की कमी हुई है। अंत में **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.** ने दिवंगत मुनि श्री का गुणगान करते हुए फरमाया कि मुनि श्री पाँचों पर्व तिथियों पर उपवास करते थे, पारणे में दही-रोटी के अलावा कुछ नहीं लेते थे। तपस्या पर उनका अधिक जोर था तथा रसनेन्द्रिय पर गजब का नियन्त्रण था। अप्रमत्तता, सरलता, स्पष्टता, निर्भीकता, संकल्प की दृढ़ता आदि उनके प्रमुख गुण थे।

जोधपुर- शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि महासतीवृन्द के सान्निध्य में ६ अगस्त २००६ को घोड़ों का चौक स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में प्रातः ९ बजे तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. के गुण-स्मरण हेतु गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. ने दिवंगत मुनि श्री के सेवा, समर्पण एवं तपोनिष्ठ जीवन पर प्रकाश डाला। तत्त्वचिन्तिका व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. ने कहा कि पूज्य मुनि श्री ने २६ वर्षों के संयमी जीवन में सेवा, त्याग एवं तप की अमिट छाप छोड़ी है। सभा में शासनसेवा समिति के सदस्यों में डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत, श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना, श्री अरूण जी मेहता ने मुनिवर्य के जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए उनसे गुण ग्रहण करने की प्रेरणा की। अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामंत्री श्री नवरतन जी डागा, युवक परिषद् जोधपुर के अध्यक्ष श्री महेन्द्र जी सुराणा, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती सुशीला जी बोहरा, स्थानीय श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती सुनीता जी मेहता, श्रावकरत्न सर्व श्री कनकराज जी कुम्भट, श्री नरपतराज जी चौपड़ा, श्री अनराज जी बोथरा, श्री सम्पतराज जी डोसी, श्री भँवरलाल जी चौपड़ा, श्रीमती अकलकंवर जी मोदी, श्री मगनमल जी भण्डारी (मुनि श्री के सांसारिक भ्राता) आदि ने विविध घटना प्रसंगों के माध्यम से मुनिश्री के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। वक्ताओं के द्वारा व्यक्त उद्गारों से व्यक्त हुआ कि मुनी श्री तपस्वी सन्तरत्न थे। स्वाध्याय, सेवा एवं समर्पण उनके विशिष्ट गुण थे। वे अल्पभोजी एवं अल्पभाषी होने के साथ निस्पृही भी थे। इस अवसर पर मुनिप्रवर के सांसारिक परिजन श्री मख्तूरमल जी भण्डारी, श्री कनकमल जी भण्डारी एवं श्री माणकमलजी भण्डारी भी उपस्थित थे।

जावला, जबलपुर, कानपुर, कोटा आदि विभिन्न स्थानों पर महासती-मण्डल के सान्निध्य में गुणानुवाद सभा आयोजित कर मुनिवर्य को श्रद्धाञ्जलि दी गई। इन्दौर में श्रमणसंघीय उपाध्यायप्रवर श्री रमेशमुनि जी शास्त्री के सान्निध्य में तथा मदनगंज-किशनगढ़ में उपप्रवर्तक श्री विनयमुनि जी 'वागीश' के सान्निध्य में गुणानुवाद सभा आयोजित कर तपस्वी मुनिश्री को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई।

क्षमायाचना

छद्मस्थता में त्रुटि स्वाभाविक है। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की आराधना करते हुए हमने भाद्रपद शुक्ला ४, सोमवार, २८.८.२००६ को सांवत्सरिक प्रतिक्रमण कर सर्व जीवयोनि से विशुद्ध हृदय से क्षमायाचना की है। हम पूज्य आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द से अविनय-आशातना के लिए करबद्ध क्षमाप्रार्थी हैं, वहीं संघ-समाज के सभी भाई-बहनों से हार्दिक क्षमायाचना करते हैं।

क्षमाप्रार्थी

कैलाशचन्द हीरावत — अध्यक्ष
सुमेरसिंह बोथरा — कार्याध्यक्ष
नवरतन डागा — महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

सुशीला बोहरा — अध्यक्ष
गौतमचन्द सुराणा — कार्याध्यक्ष
प्रेमचन्द जैन — मंत्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

डॉ. सुषमा सिंघवी — अध्यक्ष
चन्द्रा मुणोत — कार्याध्यक्ष
डॉ. बिमला भण्डारी — महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर

डॉ. अशोक कवाड़ — अध्यक्ष
बुधमल बोहरा, कुशल गोटेवाला — कार्याध्यक्ष
अशोक चोरडिया — महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर

विमला मेहता — संयोजक
सुरेश चोरडिया — सह संयोजक
डॉ. राकेश कांकरिया — सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

चंचलमल चोरडिया — संयोजक
मोहनकौर जैन — सचिव

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा परिणाम घोषित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 23 जुलाई 2006 को आयोजित कक्षा 1 से 14 तक की परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नम्बर यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

वरीयता सूची आगामी अंक में प्रकाशित की जायेगी। सभी केन्द्रों पर परीक्षा परिणाम बोर्ड कार्यालय द्वारा भेजा जा चुका है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नम्बर प्रकाशन में यद्यपि सावधानी रखी गई है तथापि संदेह होने पर बोर्ड कार्यालय की सूचना को ही प्रमाण माना जाये।

पुनर्मूल्यांकन कराने लिये आवेदन पत्र, मूल अंक तालिका एवं 25 रूपये शुल्क के साथ दिनांक 10 नवम्बर 2006 तक बोर्ड कार्यालय में पहुँच जाना चाहिए ।

कक्षा–प्रथम

18,22,23,49,71,75,109,112,131,159,170,171,199,202,218,241,242, 244,245,246,249,250, 252,260,265,305,307,308,309,312,317,325,327,366,369, 394,396,459,462,463,479,518, 523,524,547,565,572,574,578,580,589,591,610, 642,646,688,723,724,727,728,729,730, 733,759,760,792,795,796,800,801,802,822,855,856,903,906, 909,925,935,962,963,986, 987,1006,1011,1012,1014,1016,1017, 1038,1072,1079,1083,1085,1089,1098,1099,1101, 1104,1116,1122,1127,1130,1132,1133,1279,1281, 1292,1293,1294,1319,1320,1321,1322, 1323,1325,1326,1328,1346,1358,1361,1364,1382,1404,1405, 1406,1409,1422,1426,1428, 1430,1433,1435,1441,1442,1446,1447,1451,1494,1495,1496,1498,1537, 1538,1540,1543, 1551,1552,1553,1555,1558,1559,1563,1567,1570,1589,1605,1606,1607,1609,1610, 1611, 1612,1613,1614,1628,1630,1631,1633,1634,1635,1638,1639,1673,1674,1676,1685,1686, 1700, 1706,1707,1708,1710,1713,1717,1719,1722,1723,1727,1731,1735,1736,1745,1787, 1791,1796,1811, 1814,1820,1821,1822,1823,1824,1825,1826,1827,1828,1830,1831,1832, 1833,1844,1845,1861,1863, 1871,1883,1888,1896,1897,1898,1903,1904,1912,1913,1921, 1933,1938,2098,2099,2103,2105,2106, 2113,2114,2115,2116,2117,2118,2119,2120,2126, 2127,2128,2131,2159,2180,2181,2182,2183,2184,2187,2188,2189,2191,2205,2208,2209, 2212,2217,2218,2220,2221,2222,2223,2224,2225,2229,2231, 2234,2235,2237,2238,2239, 2242,2244,2246,2248,2250,2252,2253,2254,2255,2256,2294,2295,2296, 2299,2302,2304, 2306,2307,2311,2313,2315,2316,2338,2357,2374,2375,2376,2377,2378,2389,2390, 2392, 2408,2409,2410,2443,2475,2476,2478,2491,2492,2501,2502,2503,2506,2508,2509,2510, 2511, 2532,2533,2534,2535,2539,2540,2541,2542,2545,2547,2549,2550,2551,2552,2553, 2554,2559,2574, 2577,2578,2579,2582,2583,2584,2585,2586,2587,2588,2589,2590,2592, 2593,2597,2601,2603,2608, 2619,2623,2626,2628,2635,2637,2638,2639,2640,2641,2644, 2655,2656,2668,2669,2672,2680,2684, 2685,2687,2689,2692,2693,2694,2695,2696,2697, 2698,2707,2708,2709,2710,2711,2712,2713,2715, 2716,2717,2718,2720,2721,2722,2725, 2727,2729,2732,2734,2737,2738,2739,2742,2743,2744,2745, 2746,2748,2749,2750,2751, 2754,2755,2756,2757,2758,2759,2762,2763,2764,2765,2770,2773,2784, 2792,2795,2803, 2805,2810,2811,2813,2825,2831,2832,2834,2836,2838,2841,2844,2845,2846,2848, 2850, 2852,2855,2856,2858,2859,2862,2864,2866,2867,2868,2869,2871,2872,2873,2877,2878, 2879, 2880,2881,2882,2883,2884,2885,2888,2889,2892,2894,2897,2899,2900,2908,2911, 2912,2914,2916, 2917,2918,2919,2922,2923,2924,2925,2926,2927,2928,2929,2931,2932, 2933,2936,2942,2947,2949, 2950,2951,2952,2954,2955,2958,2965,2966,2969,2974,2975, 2977,2978,2984,2985,2986,2988,2990, 2993,2994,2995,2997,2998,2999,3000,3001,3003,

3005,3006,3009,3010,3011,3012,3013,3015,3016, 3018,3019,3020,3021,3022,3027,3056,
3058,3059,3062,3081,3082,3083,3084,3085,3086,3088,3090, 3100,3101,3103,3108,3110,
3113,3114,3115,3117,3137,3142,3147,3148,3150,3161,3162,3167,3168, 3173,3174,3176,
3178,3179,3180,3181,3182,3183,3185,3187,3188,3189,3190,3194,3195,3196,3200, 3202,
3207,3210,3246,3247,3248,3250,3252,3254,3255,3256,3259,3260,3336,3337,3338,3351,
3353, 3356,3360,3361,3368,3376,3385,3386,3388,3390,3391,3393,3445,3446,3449,3452,
3453,3455,3493, 3507,3509,3511,3512,3518,3542,3545,3547,3580,3581,3582,3583,3586,
3589,3590,3591,3592,3593, 3595,3596,3601,3603,3605,3606,3607,3608,3610,3611,3613,
3614,3615,3616,3642,3645,3646,3655, 3659,3661,3662,3664,3666,3667,3668,3687,3690,
3691,3692,3693,3695,3697,3715,3717,3767,3771, 3773,3775,3776,3780,3782,3783,3784,
3826,3827,3828,3867,3869,3871,3876,3877,3881,3883,3886, 3887,3889,3950,3952,3971,
3972,3975,3976,3977,3978,3979,3984,3985,3989,3990,3991,3992,3993, 3996,3997,3998,
4000,4004,4068,4086,4087,4089,4093,4094,4101,4114,4115,4116,4180,4181,4182, 4212,
4213,4214,4215,4216,4217,4218,4219,4220,4222,4223,4233,4234,4235,4236,4252,4253,
4254,4257,4267,4272,4274,4275,4276,4278,4292,4293,4294,4295,4296,4297,4298,4299,
4346,4347,4348,4351,4362,4364,4366,4367,4368,4385,4401,4445,4446,4448,4449,4473,
4480,4485,4489,4495,4507,4508,4571,4572,4573,4574,4582,4585,4587,4645,4647,4648,
4688,4690,4693,4712,4713,4723,4724, 4744,4745,4754,4759,4760,4762,4763,4764,4766,
4769,4770,4772,4773,4774,4775,4776,4777,4779, 4780,4781,4782,4783,4784,4785,4786,
4788,4789,4799,4816,4831,4832,4845,4846,4852,4855,4858, 4860,4864,4865,4881,4882,
4892,4896,4901,4903,4906,4910,4914,4915,4920,4930,4931,4932,4936, 4939,4951,4955,
4961,4987,4988,4989,4990,4991,4992,4993,5011,5016,5022,5023,5031,5048,5055, 5069,
5072,5077,5085,5104,5149,5178,5179,5210,5212,5221,5222,5223,5224,5241,5247,5248,
5249, 5251,5252,5276,5296,5297,5332,5333,5356,5421,5437,5439,5466,5469,5470,5472,
5479,5480,5481, 5485,5487,5488,5490,5492,5493,5496,5497,5526,5586,5606,5628,5668,
5676,5704,5706,5709,5710, 5712,5718,5719,5720,5721,5758,5759,5760,5762,5764,5765,
5798,5799,5825,5826,5828,5831,5832, 5833,5857,5858,5888,5889,5891,5913,5915,5916,
5917,5918,5919,5921,5924,5955,5991,5994,6001,6006,6061,6064,6066,6085,6086,6088,
6147,6148,6151,6152,6153,6163,6164,6165,6168,6169,6170, 6171,6196,6200,6244,6245,
6246,6266,6274,6288,6305,6306,6308,6312,6318,6321,6322,6326,6327, 6330,6332,6381,
6382,6383,6406,6407,6423,6427,6434,6445,6453,6507,6516,6518,6519,6526,6528, 6531,
6561,6564,6565,6567,6569,6572,6574,6575,6577,6579,6598,6607,6614,6621,6622,6624,
6627, 6629,6630,6631,6632,6633,6636,6637,6653,6657,6658,6664,6665,6667,6668,6669,
6670,6748,6749, 6750,6752,6755,6756,6757,6780,6782,6786,6790,6800,6801,6807,6846,
6867,6868,6869,6870,6871, 6882,6902,6904,6906,6912,6914,6923,6925,6926,6930,6937,
6938,6941,6942,6943,6949,6950,6988, 6989,6990,6991,6994,6997,6998,6999,7001,7002,
7003,7004,7005,7008,7012,7013,7014,7016,7020, 7021,7022,7023,7024,7025,7028,7029,
7032,7040,7041,7042,7043,7046,7047,7048,7049,7050,7052, 7054,7058,7059,7060,7061,
7062,7065,7068,7069,7072,7074,7076,7079,7080,7082,7085,7086,7087, 7088,7092,7097,
7101,7106,7107,7108,7109,7111,7113,7116,7121,7123,7129,7163,7181,7240,7244, 7246,
7260,7261,7264,7266,7268,7269,7270,7271,7276,7278,7279,7281,7282,7294,7325,7326,
7327, 7332,7333,7336,7337,7339,7340,7343,7355,7362,7363,7364,7365,7366,7370,7372,
7396,7410,7416, 7429,7482,7498,7499,7501,7505,7518,7520,7521,7522,7523,7524,7525,
7526,7527,7528,7529,7530, 7531,7532,7575,7577,7582,7583,7584,7630,7632,7633,7636,
7640,7642,7643,7644,7645,7646,7649, 7650,7651,7652,7653,7654,7664,7665,7666,7668,
7669,7672,7674,7675,7676,7678,7679,7680,7681, 7682,7683,7684,7685,7686,7690,7701,
7702,7703,7706,7707,7709,7723,7727,7733,7735,7736,7737, 7738,7745,7746,7748,7752,
7754,7755,7756,7757,7772,7775,7783,7814,7815,7816,7818,7819,7820, 7822,7823,7824,
7825,7826,7827,7828,7830,7831,7833,7836,7844,7845,7848,7850,7857,7858,7867, 7868,
7879,7892,7893,7895,7911,7912,7913,7916,7917,7919,7920,7921,7923,7924,7929,7930,

7931, 7932,7946,7947,7948,7956,7957,7958,7961,7966,7975,7976,7977,7978,7979,7982, 7989,7991,7993, 7994,8002,8004,8006,8007,8010,8011,8013,8015,8017,8018,8019,8020, 8021,8022,8023,8024,8025, 8026,8027,8028,8031,8032,8033,8037,8038,8039,8041,8053, 8054,8055,8056,8057,8058,8059,8060, 8065,8066,8068,8070,8071,8072,8073,8074,8075, 8079,8080,8081,8085,8095,8096,8100,8101,8107, 8108,8112,8113,8115,8116,8117,8118, 8122,8131,8133,8135,8137,8139,8140,8141,8142,8143,8144, 8145,8146,8147,8148,8149, 8150,8151,8155,8202,8203,8204,8206,8207,8208,8209,8210,8211,8212, 8217,8219,8221,

कक्षा–दूसरी

1,2,4,26,27,52,53,54,55,56,78,116,117,120,134,160,161,162,187,203,223,225,227,253,274 ,330,400,403,440,483,485,486,487,526,560, 567,577,653,725,776,778,779,828,829,859, 862,881,883,885,938,939,942,974, 1058,1156,1157,1158,1166,1171,1172,1283,1297,1298, 1299,1300,1307,1329,1330,1331,1333,1334, 1348,1367,1369,1389,1390,1454,1455,1458, 1459,1468,1500,1576,1617,1641,1642,1643,1693,1702, 1743,1747,1749,1751,1752,1756, 1757,1783,1835,1836,1838,1839,1841,1842,1843,1961,1962,1992, 2078,2086,2092,2108, 2121,2122,2132,2133,2135,2136,2137,2196,2198,2259,2270,2271,2273,2274, 2288,2289, 2319,2329,2360,2364,2393,2422,2423,2424,2448,2454,2456,2482,2483,2486,2512,2538, 2555,2556,2557,2564,2565,2630,2632,2643,2659,2700,2701,2702,2821,2903,2971,3030, 3031,3032, 3033,3035,3037,3038,3039,3091,3092,3093,3094,3095,3096,3097,3098,3099, 3152,3153,3154,3212, 3215,3217,3265,3267,3269,3270,3273,3301,3339,3341,3342,3343, 3377,3394,3395,3434,3436,3439, 3456,3458,3460,3461,3462,3465,3484,3494,3520,3540, 3552,3553,3554,3556,3557,3558,3559,3624, 3625,3676,3701,3735,3737,3740,3741,3744, 3746,3791,3793,3797,3799,3800,3801,3802,3803,3804, 3805,3806,3807,3808,3829,3830, 3857,3892,3895,3898,3900,3903,3904,3907,3957,4006,4007,4008, 4019,4029,4030,4103, 4184,4185,4187,4188,4189,4226,4238,4239,4240,4241,4242,4261,4262,4279, 4300,4301, 4303,4304,4305,4306,4307,4308,4309,4310,4311,4312,4313,4314,4315,4316,4317,4318, 4319,4320,4321,4322,4354,4355,4371,4468,4513,4514,4518,4522,4523,4525,4527,4531, 4533,4599, 4605,4606,4649,4652,4654,4656,4673,4674,4727,4746,4791,4793,4795,4798, 4821,4944,5030,5109, 5142,5144,5150,5151,5152,5153,5181,5196,5228,5229,5259,5287, 5288,5299,5300,5302,5303,5304, 5305,5306,5307,5308,5309,5311,5312,5313,5314,5340, 5367,5368,5369,5423,5498,5499,5503,5504, 5505,5516,5519,5521,5522,5524,5525,5528, 5530,5531,5575,5577,5579,5582,5587,5588,5611,5629, 5630,5633,5687,5689,5690,5691, 5694,5695,5696,5697,5699,5700,5714,5715,5716,5717,5723,5724, 5725,5727,5768,5790, 5793,5794,5795,5805,5809,5812,5814,5815,5819,5821,5836,5838,5840,5842, 5859,5860, 5861,5862,5863,5865,5866,5867,5868,5869,5870,5871,5872,5873,5874,5875,5894,5895, 5896,5926,5928,5929,5931,5932,5933,5962,5963,5965,5967,5977,5979,5980,5981,5984, 6008,6009, 6091,6095,6096,6098,6100,6110,6112,6114,6166,6174,6175,6177,6209,6211, 6219,6289,6290,6292, 6342,6346,6359,6384,6386,6387,6388,6389,6390,6470,6472,6581, 6585,6586,6587,6590,6591,6634, 6635,6674,6682,6684,6687,6694,6699,6700,6703,6706, 6761,6762,6763,6764,6765,6768,6769,6770, 6771,6783,6791,6824,6825,6826,6848,6853, 6875,6914,6918,6928,6932,6944,6945,7135,7144,7146, 7150,7152,7154,7155,7156,7157, 7162,7165,7168,7170,7171,7172,7173,7177,7178,7180,7188,7190, 7193,7194,7195,7197, 7198,7199,7201,7202,7203,7204,7205,7216,7217,7219,7220,7226,7233,7239, 7241,7242, 7252,7331,7342,7374,7375,7376,7398,7399,7425,7444,7460,7464,7481,7503,7506,7507, 7512,7567,7597,7599,7601,7658,7710,7714,7734,7739,7759,7760,7812,7840,7853,7860, 7863,7864, 7874,7875,7891,7897,7899,7910,7915,7922,7935,7936,7937,7949,7954,7969, 7981,7992,7998,8012, 8029,8030,8043,8061,8084,8091,8092,8093,8094,8097,8098,8099, 8102,8104,8114,8126,8128,

कक्षा–तीसरी

29,33,34,85,94,95,96,97,121,135,149,189,254,268,269,281,295, 296,318,325,342,343,370 ,382,406,442,454,456,469,472,475,476,493,494,499, 528,529,530,531,532,564,566,568,

581,582,600,601,618,624,655,657,658,707, 710,761,764,766,809,830,831,847,869,887, 889,918,920,945,950,976,977,978, 990,991,1020,1021,1023,1024,1187,1188,1190,1196, 1201,1202,1204,1205,1206,1207,1301,1304, 1308,1371,1372,1469,1508,1513,1514,1517, 1577,1578,1579,1581,1596,1645,1668,1671,1744,1759, 1761,1762,1763,1764,1766,2007, 2013,2014,2015,2017,2019,2020,2022,2026,2028,2030,2035,2038, 2081,2094,2109,2138, 2139,2140,2141,2166,2275,2276,2277,2278,2297,2333,2334,2335,2345,2382, 2383,2395, 2396,2398,2399,2401,2402,2403,2404,2405,2428,2429,2432,2433,2434,2457,2458,2459, 2515,2517,2518,2606,2607,2645,2904,3040,3053,3122,3124,3125,3127,3156,3219,3222, 3223,3224, 3274,3278,3309,3311,3316,3317,3319,3320,3324,3348,3381,3396,3399,3400, 3401,3466,3467,3468, 3469,3472,3473,3475,3477,3478,3479,3480,3481,3482,3524,3562, 3626,3680,3707,3711,3712,3751, 3753,3810,3811,3812,3813,3814,3833,3912,3913,3915, 3917,3918,3919,4043,4044,4045,4046,4047, 4048,4051,4053,4055,4057,4058,4059,4060, 4061,4107,4134,4190,4191,4192,4198,4199,4201,4243, 4244,4245,4246,4265,4266,4281, 4323,4324,4325,4372,4440,4441,4454,4547,4550,4551,4555,4613, 4614,4620,4661,4662, 4663,4665,4677,4679,4680,4800,4801,4802,4803,4804,4806,4817,4826,5002, 5080,5111, 5112,5123,5145,5146,5147,5148,5157,5158,5159,5160,5161,5162,5163,5164,5165,5166, 5182,5184,5198,5199,5200,5201,5202,5213,5215,5216,5230,5232,5316,5318,5343,5375, 5376,5378, 5379,5398,5452,5544,5547,5636,5637,5733,5823,5843,5845,5846,5848,5854, 5855,5877,5880,5941, 5942,5944,5945,5969,5970,5971,5972,5973,5986,6017,6018,6020, 6022,6122,6155,6157,6159,6180, 6183,6184,6185,6187,6188,6191,6192,6193,6225,6251, 6252,6279,6367,6478,6547,6550,6596,6609, 6639,6708,6715,6716,6784,6854,6880,6881, 6920,6921,6933,6934,6946,7227,7232,7234,7295,7298, 7344,7345,7378,7402,7403,7466, 7467,7468,7508,7510,7548,7557,7566,7570,7612,7722,7732,7743, 7761,7762,7766,7767, 7768,7769,7780,7784,7837,7870,7876,7878,7880,7904,7906,7938,7939,7940, 7953,8000, 8001,8005,8008,8044,8045,8046,8062,8077,8105,8129,8214,

कक्षा–चौथी

7,9,59,60,98,100,101,102,122,125,141,142,143,144,150,151,164, 165,166,167,168,183, 193,194,195,257,282,283,302,303,304,345,348,349,371, 383,384,385,387,388,391,392, 404,408,409,421,422,437,502,503,505,506,538, 583,584,603,659,713,714,786,787,810, 811,833,834,835,849,850,871,890,891, 921,922,924,1039,1067,1212,1214,1215,1339, 340 ,1355,1374,1375,1414,1416,1472,1473,1480, 1521,1582,1583,1598,1619,1647,1697,1769, 1770,1771,1772,1773,1775,2010,2012,2040, 2041,2042, 2043,2110,2123,2144,2168,2290, 2336,2347,2384,2385,2386,2412,2413,2414,2460,2461,2462,2463, 2464,2521,2570,3023, 3054,3130,3131,3157,3158,3159,3226,3230,3231,3233,3349,3527,3566,3567, 3568,3570, 3574,3629,3630,3631,3632,3682,3683,3714,3754,3755,3756,3757,3922,3924,3925,3926, 3927,3928,3929,3932,4002,4064,4066,4067,4124,4193,4202,4247,4282,4326,4327,4328, 4330,4331, 4332,4333,4375,4409,4410,4442,4444,4469,4470,4562,4622,4623,4624,4625, 4666,4667,4703,4756, 4807,4808,4809,4810,4811,4819,4839,4840,4984,4999,5001,5114, 5115,5116,5117,5118,5119,5120, 5132,5185,5187,5188,5189,5218,5290,5320,5322,5323, 5348,5381,5382,5433,5434,5454,5456,5552, 5554,5556,5558,5559,5589,5590,5617,5618, 5638,5639,5640,5737,5738,5739,5774,5881,5882,5883, 5884,6125,6126,6128,6129,6130, 6131,6160,6161,6194,6232,6282,6294,6407,6491,6552,6555,6601, 6722,6724,6725,6727, 6731,6732,6835,6836,6837,6838,6858,6892,6909,6969,7237,7238,7303,7305, 7307,7317, 7335,7379,7381,7404,7421,7440,7511,7571,7622,7696,7763,7770,7771,7776,7779,7781, 7859,7861,7862,7905,7907,7908,7941,7944,7955,7970,8047,8106,8200,8222,

कक्षा–पाँचवी

36,38,39,40,64,152,155,156,177,178,233,271,284,286,319,351,352, 401,410,411,507,585, 586,635,637,638,662,663,664,744,745,747,836,837,838, 851,952,980,1026,1027,1068, 1070,1071,1237,1240,1242,1249,1251,1254,1255,1256,1258,1312, 1342,1376,1400,1402, 1417,1482,1485,1525,1649,1651,1680,1703,1777,1779,1810,2044,2047,2348, 2349,2350,

2351,2353,2367,2369,2370,2387,2416,2422,2465,2466,2467,2468,2469,2470,2498,2571, 2824,3041,3042,3043,3044,3045,3046,3047,3071,3134,3135,3160,3285,3287,3288,3325, 3486,3487, 3573,3575,3725,3726,3758,3759,3760,3761,3762,3835,3933,3934,3936,3937, 3938,3939,3940,3962, 3963,4126,4139,4204,4230,4231,4232,4335,4337,4338,4377,4378, 4379,4380,4381,4382,4456,4563, 4626,4627,4628,4629,4635,4638,4639,4640,4641,4668, 4704,4748,4820,4827,5008,5096,5126,5133, 5192,5204,5233,5234,5235,5291,5292,5293, 5294,5295,5324,5325,5326,5327,5328,5329,5330,5331, 5350,5401,5435,5457,5458,5459, 5461,5462,5463,5464,5465,5564,5566,5568,5569,5619,5621,5740, 5741,5742,5744,5745, 5746,5885,6135,6137,6138,6139,6142,6235,6253,6254,6283,6285,6295,6296, 6492,6495, 6737,6865,6911,6966,7297,7308,7309,7311,7312,7313,7314,7316,7318,7320,7321,7322, 7347,7470,7478,7496,7713,7717,7718,7731,7740,7852,7896,7926,8132,8154,

कक्षा–छठी

66,67,105,129,179,180,181,182,208,210,234,289,290,320,355,372,373, 412,414,512,513, 669,750,788,816,839,892,957,960,992,1028,1260,1264,1486,1584,1600,1620,1654,2104, 2124,2125,2280,3055,3239,3240,3241,3244,3245,3289,3501,3834,4070,4111, 4284,4285, 4286,4287,4288,4289,4339,4461,4462,4471,4564,4705,4738,4750,4812,4828,4830,4985, 5127,5128,5206,5236,5351,5386,5387,5570,5571,5572,5763,5780,5781,6145,6162,6240, 6241,6242, 6243,6255,6256,6257,6258,6259,6260,6297,6298,6497,6500,6559,6560,6842, 6910,7324,7574,7688, 7782,7927,7971,8014,8083,

कक्षा–सातवीं

12,13,41,42,43,45,145,146,147,158,213,237,291,321,415,416,418, 444,537,674,717,719, 720,753,840,841,877,893,894,993,994,996,997,998,1343, 1419,1585,1601,2059,2061, 148 ,2471,2472,2474,2573,3049,3328,3329,3331,3332,3334,3578,3579, 3943,3944,3945,4071, 4073,4074,4207,4290,4291,4340,4341,4342,4343,4359,4360,4361,4383,4457, 4463,4464, 4465,4565,4751,4813,4814,5281,5282,5406,5407,5749,5782,5783,5952,6205,6286,6287, 6605,6610,6611,6742,6893,6929,7382,7497,7509,7700,7712,7716,7742,7903,

कक्षा–आठवी

14,46,47,214,215,216,238,359,361,445,588,675,677,756,878,896,983, 984,1046,1587, 1603,1625,1626,2064,2066,3074,3075,3383,3637,3836,4345,4670,5066,5099,5100, 5129, 5130,5134,5135,5136,5193,5409,5591,5751,5953,6261,6619,7486,7515,7753,7764,7813, 8130,

कक्षा–नवमीं

678,757,758,789,818,3350,3411,3414,3415,3416,3417,3418,3419,3420,3421,3424,3639, 4075,4373,4631,4711,4752,5410,5411,5414,5592,6146,6379,6744,7741,7928,8087,

कक्षा–दसवीं

15,16,239,240,900,901,902,1420,3832,4077,4411,4753,5593,5752,6971,6971,6972, 7479,

कक्षा–ग्यारहवीं

427,1277,3837,3838,5573,7513,7765,7943,

कक्षा–बारहवीं

721,1047,1048,1489,2150,3503,3685,3822,3946,3947,4079,4080,4081,5754,5784,

कक्षा–तेरहवीं

1031,3823,3824,4146,5103,7711,

कक्षा–चौदहवीं

363,569,819,820,821,1278,1782,2070,2151,3948,3949,4082,7673,7846,

विमला मेहता
संयोजक

डॉ. राकेश कांकरिया
सचिव

युवक परिषद् : बढ़ते कदम

रायचूर में युवक परिषद् की शाखा गठित

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक जी कवाड़, कार्याध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा, सचिव श्री अनोपचन्द जी बागमार तथा शिक्षण बोर्ड के सह सचिव श्री सुरेश जी चोरड़िया-चेन्नई द्वारा ६ अगस्त २००६ को हैदराबाद, गदग व रायचूर में प्रवास कार्यक्रम रखा गया। प्रवास के दौरान स्थानीय युवारत्नों की बैठक ली गई तथा परिषद् के कार्यक्रमों, आयोजनों की जानकारी प्रदान करने के साथ संघ व परिषद् की गतिविधियों से जुड़ कर लाभान्वित होने की प्रेरणा की गई। प्रेरणा के फलस्वरूप रायचूर में युवक परिषद् की शाखा गठित हुई है। रायचूर में शिक्षण बोर्ड का केन्द्र भी स्थापित किया गया। शाखा गठित होने पर अध्यक्ष श्री अशोक जी कवाड़ ने रायचूर के श्रावकजनों व युवारत्नों के स्नेह व सहयोग के प्रति आभार प्रकट किया है।

मुम्बई- युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक जी कवाड़ व कार्याध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा-चेन्नई के पर्युषणावधि में मुम्बई प्रवास के दौरान युवक परिषद् की मुम्बई शाखा में युवारत्नों की बैठक रखी गई, जिसमें ६५-७० युवारत्नों की उपस्थिति रही। बैठक में परिषद् व संघहित में अनेकानेक बिन्दुओं पर विचार-विमर्श हुआ। संत-सतीवृन्द के विहार के दौरान सेवाकार्य में साथ रहने व सेवालाभ लेने के लिए २५ युवारत्नों की टीम बनाई गई जो समय-समय पर संत-सतीजन के मुम्बई क्षेत्र में विहार के दौरान सेवा कार्य में स्थायी रूप से सहयोग करेगी। इसके अतिरिक्त मुम्बई में पाँच पाठशालाएँ भायन्दर, वर्ली, विले पार्ले आदि क्षेत्रों में खोली गई है जिसके लिए १२ सदस्यों की समिति बनाई गई है। इससे पूर्व जुलाई माह में कार्याध्यक्ष श्री कुशल जी गोटेवाला के मुम्बई प्रवास के दौरान युवारत्नों की बैठक सम्पन्न हुई जिसमें शाखा पदाधिकारियों सहित अनेक युवारत्नों की उपस्थिति में परिषद् के प्रमुख राष्ट्रीय कार्यक्रमों की गति-प्रगति के बारे में विस्तार से विचार विमर्श हुआ। विशेष रूप से अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा आयोजन, धार्मिक शिक्षण शिविर, संत-सती दर्शन यात्रा व विशेष रूप से परिषद् द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना में शाखा का आर्थिक योगदान आदि के बारे में सकारात्मक चिन्तन हुआ।

"गजेन्द्र निधि-आचार्य हस्ती स्कालरशिप फण्ड' में योगदान

अजमेर के रत्नवंशीय परिवारों की तरफ से स्वेच्छा व स्वप्रेरणा से आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजनान्तर्गत राशि प्राप्त हुई है-

१. श्री सुगनचन्द जी रतनलाल जी रांका-अजमेर	१२०००/- एक छात्र के लिए
२. श्री अमरचन्दजी अनिलकुमारजी दुधेड़िया-अजमेर	१२०००/- एक छात्र के लिए
३. श्री जीतमल जी कोठारी-अजमेर	१२०००/- एक छात्र के लिए
४. श्री पारसमल जी विमलचन्द जी जैन-अजमेर	१२०००/- एक छात्र के लिए
५. श्री चन्द्रप्रकाश जी महेन्द्र कोठारी-अजमेर	१२०००/- एक छात्र के लिए
६. अजमेर श्रीसंघ के सहयोग से	६००००/-पाँच छात्रों के लिए

सभी बन्धुओं से निवेदन है कि अपना अधिकाधिक अर्थ सहयोग इस फण्ड में भिजवावें। *-अशोक चोरडिया, महासचिव*

स्वाध्याय ज्ञान प्रतियोगिता

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर ने सामान्य धार्मिक जानकारी हेतु **'स्वाध्याय ज्ञान प्रतियोगिता'** पुस्तक तैयार की है जिसमें लगभग ४६० प्रश्न हैं। प्रत्येक व्यक्ति इसमें भाग ले सकता है। प्रश्न अत्यन्त सरल हैं। प्रतियोगिता में पूर्ण अंक प्राप्त करने वाले को ५०००/- का पुरस्कार, प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले को ३०००/-, द्वितीय स्थान पर २०००/- एवं तृतीय स्थान पर १०००/- का पुरस्कार रखा गया है। तत्पश्चात् सुपर टोप टेन में प्रत्येक को २५०/-, टोप टेन में प्रत्येक को १५०/- तथा ८० प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले प्रत्येक को सान्त्वना पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। पुस्तिका का मूल्य १०/- है। उत्तरपुस्तिका भेजने की अन्तिम तिथि ३० अक्टूबर २००६ एवं परीक्षा परिणाम की तिथि १५ नवम्बर २००६ है। उक्त पुस्तिका निम्नांकित पते से प्राप्त की जा सकती है एवं जमा करायी जा सकती है- १. अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.) फोन नं. ०२९१-२६३६७६३। २. श्रीमती सुनीता मेहता,४६७-ए, सातवीं ए रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.), फोन नं. ०२९१-२६४०७५७, मो. ९८२८१४१७५७

त्रुटि संशोधन

उक्त पुस्तिका जिन्होंने प्राप्त कर ली है वे निम्नांकित संशोधन अपनी पुस्तिका में कर लेवें-

१. भाग ११ प्रश्न सं. ४ में पूजा की जगह पूँजी शब्द पढ़ें।
२. भाग १५ प्रश्न सं.११ में कोष्ठक में संख्या (४) है।
३. भाग २१ प्रश्न सं. २ में आ.हरीशचन्द्र जी म.सा. के स्थान पर आ. श्री हीराचन्द्र जी म.सा. पढ़ा जाए।
४. भाग ३ प्रश्न सं.१३ में मैथुन की जगह संज्ञा पढ़ा जाए।।
५. भाग १८ में २७ बॉक्स की जगह ३१ बॉक्स है जिसमें एक आचार्य का नाम आयेगा।

-सुनीता मेहता, अध्यक्ष

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित
'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (११) का परिणाम

जिनवाणी के जुलाई २००६ अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (११) में २१५ प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के अप्रेल से जून २००६ के अंकों पर आधारित थी। प्रतियोगियों के उत्साह से आयोजकों को प्रमोद है। प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सान्त्वना पुरस्कार ड्रा द्वारा निकाले गये हैं। परिणाम इस प्रकार है-

प्रथम पुरस्कार- १००१/- रुपये पुष्पा गोलेछा-ब्यावर (४७)

द्वितीय पुरस्कार- ५०१/- रुपये पायल जैन-जोधपुर (४७)

तृतीय पुरस्कार- २५१/- रुपये ऋषभ जैन-सुमेरगंजमण्डी (४७)

सान्त्वना पुरस्कार- १००/- रुपये प्रत्येक

रमीला कर्णावट-वणी	(४७)	गौतमचन्द जैन-रतकुड़िया	(४७)
संदीप जैन-रतकुड़िया	(४७)	प्रीति जैन-भरतपुर	(४७)
आशीष जैन-सवाईमाधोपुर	(४७)	वीरेन्द्र जैन-भरतपुर	(४७)
पुष्पा जैन-पाली	(४७)	चंचल कांकरिया-पाली	(४७)
किरण कटारिया-नागपुर	(४६)	अनिल जैन-कोटा	(४६)

अन्य प्रतियोगी-

४६ अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी :- हंसराज सुराणा-जयपुर, मंजू जैन-हिण्डौन, सरोज चोरडिया-गौहाटी, सुनील डागा-जयपुर, इचरज देवी-जयपुर, विमला बरडिया-बोंदवड़, आयुषी जैन-नागौर, प्रदीप लुणावत-नागौर, नीलू जैन-लुधियाना, अरूणा दरडा-जोधपुर, रीमा जैन-लुधियाना, मंजू ललवाणी-नागौर, लीला जैन-सुमेरगंजमण्डी, लोकेश जैन-जयपुर, ऋषभ जैन-जरखोदा, शशिकला लुणावत-नासिक, कंचन लोढ़ा-नासिक, कमला सिंघवी-जयपुर, बबीता सेठिया-धनारीकलां, दीपावली दुग्गड़-मुकटी, सुनीता दुस्साज-जयपुर, प्रकाशचंद पारख-धनारीकलां, मगनलाल जैन-बालिया, नथमल कोठारी-बालोद, निकिता कांकरिया-नागौर, भोपालचन्द सेठिया-जोधपुर, रंजना भण्डारी-सुमेरपुर रोड़, नीतू बैद-चेन्नई, विनोद लोढ़ा-नाडसर, सरला कांकरिया-जलगाँव।

४५ अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी :- सुनीत जैन-अलीगढ, अनिल शाह-उज्जैन, विजयलक्ष्मी मुणोत-जयपुर, राज मेहता-गोरखपुर, अलका मादरेचा-भीलवाड़ा, सपना जैन-नागौर, मोहनलाल जैन-केसरीसिंहपुर, मनीष जैन-बैराथल, विमल कोचर-नासिक, पुष्पा लुणावत-पांचलासिद्धा, कंचन बंब-लासुरस्टेशन, तनुजा बोरा-लासुरस्टेशन, मोनाली बोरा-लासुरस्टेशन, प्रभा कवाड़-जोधपुर, संगीता दरडा-जोधपुर, सुमनदेवी चोरडिया-नागौर, प्रदीप ललवाणी-नागौर, प्रफुल्ल ललवाणी-नागौर, मीरा जैन-सवाईमाधोपुर, मंजू लोहिया-सवाईमाधोपुर, अमित जैन-सवाईमाधोपुर, इन्द्रा जैन-सवाईमाधोपुर, माया जैन-जरखोदा, सुनील जैन-आचीणा, पारसकंवर भंडारी-चेन्नई, सुशीला रांका-जलगाँव, जया सिंघवी-चेन्नई, प्रतीक्षा जैन-सनवाड़, उज्ज्वला चौधरी-धुले, दगडुलाल चोरडिया-छीपावड़, शारदा मुथा-लासुरस्टेशन,

रमणलाल छाजेड़-धुले, शिवराज सेठिया-धनारीकलां, मिथुन सेठिया-धनारीकलां, गजराज सेठिया-धनारीकलां, भगवती लुणावत, जेठमल-जोधपुर, किरण कुम्भट-जोधपुर, प्रीति जैन-सुमेरगंजमण्डी, जौहरीमल छाजेड़-जोधपुर, सीमा जैन-जोधपुर, चंचलराज मेहता-जोधपुर, मधुबाला जैन-नागौर, सुनीता लुणावत-आचीणा, अरूणा सिंगी-नागपुर, मुन्नालाल भंडारी-जोधपुर, सरोज रूणवाल-धुले, अपूर्वा रांका, जलगाँव, दर्शिका टाटिया-जलगाँव, राजुल कोठारी-धुले, मीनाक्षी जैन-नागौर, जितेन्द्र जैन-नागौर, सरला चोरडिया-चेन्नई, लक्ष्मी छाजेड़-चेन्नई, श्रीकान्त भंडारी-अहमदाबाद, अजय भण्डारी-अहमदाबाद, लता आंचलिया-गारखेड़ा, सुनीता सुराणा-भोपालगढ़, रश्मि झांबड़-धुले

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (११) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं -

उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
१. आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.			मई/३
२. प्रसन्नचन्द्रराजर्षि	जून/२०	३. ऊणोदरी	अप्रेल/१४
४. पण्डित	जून/१०	५. आत्मौपम्य	अप्रेल/२८
६. चतुष्पाद	जून/८	७. कषायों का जादू	जून/६३
८. निधियाँ	मई/७	९. मरण	अप्रेल/३४
१०. तापत्रय, त्रिताप	जून/११	११. तीर्थंकर भगवान महावीर	अप्रेल/९
१२. गौतम	अप्रेल/८	१३. स्वाध्याय	जून/४०
१४. अन्यायोपार्जित धन / आठ का पहाड़ा			मई/१२
१५. अमीरचंद बांठिया	मई/३०	१६. तप	जून/३३
१७. असंयम	जून/६०	१८. अहंकृति	जून/१६
१९. अपौरुषेय वेद	जून/४१	२०. मृत्यु	जून/३५
२१. ४	अप्रेल/४५	२२. ७	मई/२७
२३. १८ या २२	जून/३२	२४. २२३	जून/७८
२५. १२ प्रहर	अप्रेल/५३	२६. २७	जून/६०
२७. ३७, ७५, २००	जून/४७	२८. १८	जून/२४
२९. ५	मई/५५	३०. ५ या ६	अप्रेल/४-५
३१. नहीं	जून/३९	३२. नहीं	जून/१०४
३३. नहीं	जून/१९	३४. नहीं	जून/५१
३५. नहीं	जून/२०	३६. आचार दिनकर	अप्रेल/६८
३७. मीमांसा दर्शन	जून/३	३८. समणसुत्तं	मई/५८
३९. महाभारत	जून/४२	४०. आवश्यकनिर्युक्ति	मई/२८
४१. विध्वंसक	अप्रेल/५	४२. उत्थान	अप्रेल/४
४३. साया	अप्रेल/७२	४४. उन्मूलन	अप्रेल/४
४५. बुभुक्षुत्व	मई/८	४६. हस्तीमल जी म.सा.	जून/१९-२०
४७. ऑस्कर फर्नान्डिस	अप्रेल/८२	४८. संत	जून/१३
४९. बिल गेट्स	मई/३१	५०. डॉ. मनमोहनसिंह	जून/१६

कृति की २ प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

एकादश चरित्र संग्रह : संकलनकर्ता-श्री सम्पतराज डोसी, प्रकाशक-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. १८२-१८३ के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर (राज.), फोन नं. ०१४१-२५७५९९७, पृष्ठ ८+२४८, मूल्य १५ रुपये, संस्करण २००६

प्रस्तुत पुस्तक में दामनखा, चम्पक, सुदर्शन, सती लीलावती, बंकचूल, नल-दमयंती, हरिबल, रतनकुमार, पद्मसेन, यशोधरा, श्री हंसवच्छ कुँवर के चरित्र के आधार पर त्याग, वैराग्य, दया, शील, सत्य, क्षमा, संतोष आदि जीवन मूल्यों की स्थापना की गई है। इन चरित्रों में कर्म-सिद्धान्त तथा सम्यक्त्व की भी पुष्टि हुई है। पर्युषण पर्व के आठ दिनों में चरित्र-वाचन की दृष्टि से इस पुस्तक की उपयोगिता असंदिग्ध है। सब चरित्र हिन्दी पद्यों में निबद्ध हैं जिन्हें लयबद्ध गाकर श्रोताओं को धर्मरस में निमग्न किया जा सकता है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के द्वारा पहले सप्तचरित्र पुस्तक प्रकाशित की गई थी, उसमें चार चरित्रों का वर्द्धन करके यह 'एकादश चरित्र' संग्रह पुस्तक प्रकाशित की गई है।

भगवान पार्श्व : एक समीक्षात्मक अध्ययन-आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा.प्रकाशक-श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, गुरु पुष्कर मार्ग, उदयपुर-३१३००१, फोन नं. ०२९४-२४१३५१८, पृष्ठ २०८, मूल्य ४५ रुपये, द्वितीय प्रवेश-जून २००६

२३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के पूर्वभवों, तीर्थंकर भव के गृहस्थ-जीवन, वैराग्य, केवलज्ञान, धर्मदेशना, गणधर, शिष्य सम्पदा एवं अनुयायियों का इस पुस्तक में सुन्दर निरूपण है। पुस्तक में यह भी प्रतिपादित किया गया है कि तथागत बुद्ध की साधना पर पार्श्वनाथ का प्रभाव रहा है। इस पुस्तक का प्रथम प्रकाशन सन् १९६९ में हुआ था। पुस्तक का लेखन शोधपरक शैली में समुचित संदर्भों के साथ हुआ है।

सरल, मृदुभाषी, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री राकेश जी जैन, सुमेरगंजमण्डी

अध्ययनप्रिय, सरल, सहनशील, सेवाभावी, मृदुभाषी, मधुर गायक वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री राकेश जी जैन का जन्म दिनांक २५ फरवरी १९७० को सुश्रावक श्री लक्ष्मीनारायण जी जैन की धर्मपत्नी श्रीमती रतनबाई जी जैन की कुक्षि से सुमेरगंजमण्डी, जिला-बून्दी में हुआ। आपने प्रारम्भिक शिक्षा सुमेरगंजमण्डी से तथा उच्च शिक्षा राजकीय महाविद्यालय कोटा से प्राप्त की। आपने गणित विषय में बी.एस.सी. उत्तीर्ण की। आप कपड़े के व्यवसायी होने के साथ ही गणित विषय का विशेष रुचि से अध्यापन कार्य करते हैं।

माता-पिता और गुरुदेव द्वारा प्रदत्त संस्कारों से ही आपको धर्म की ओर अभिमुख होने का सौभाग्य मिला। मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. की विशेष प्रेरणा एवं तत्त्वों तथा थोकड़ों की जानकारी से अध्यात्म में विशेष रुचि जागृत हुई। परिणामस्वरूप सन् १९९७ से आप पर्युषण में स्वाध्यायी सेवाएँ देते हुए जिनवाणी की प्रभावना कर रहे हैं।

अध्ययन में विशेष रुचि होने के कारण आपने उत्तराध्ययन सूत्र, दशवैकालिक सूत्र, आवश्यक सूत्र, आचारांग सूत्र के कुछ अध्ययन का वाचन किया तथा दशवैकालिक सूत्र के १ से ३ अध्ययन, उत्तराध्ययन सूत्र के कुछ अध्ययन की लगभग २०० गाथाएँ कण्ठस्थ की है।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ द्वारा आयोजित स्वाध्यायी की प्रथम और द्वितीय वर्ग की परीक्षा उत्तीर्ण की। वर्तमान में आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा आयोजित कक्षा १ से १२ तक की परीक्षाएँ अच्छे अंकों से उत्तीर्ण कर चुके हैं। उत्तराध्ययन की अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर आपने पोरवाल क्षेत्र का नाम रोशन किया है। २५ बोल, लघुदण्डक, गति-आगति का थोकड़ा, गुणस्थान स्वरूप, जीवधड़ा एवं प्रज्ञापना सूत्र के कुछ थोकड़े आपको कण्ठस्थ हैं। कर्मग्रन्थ भाग एक से तीन तक का भी आपने स्वाध्याय किया है।

आप अच्छे गायक होने के साथ ही भजनों की रचना भी करते हैं। कई भजन एवं चौबीसियाँ आपको कण्ठस्थ हैं।

आप समय-समय पर स्वाध्याय-शिविर तथा शिक्षक-प्रशिक्षण

शिविरों में भाग लेकर ज्ञानार्जन करते रहते हैं। आप प्रतिदिन कम से कम एक सामायिक और स्वाध्याय नियमित रूप से करते हैं। संघ द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेकर आप धार्मिक अध्ययन-अध्यापन कार्य हेतु सदा तत्पर रहते हैं। गूढ़ रहस्यों, तत्त्वों को समझने में आपकी विशेष रुचि है।

आप अष्टमी-चतुर्दशी को तथा चातुर्मास के प्रथम दो माह में जमीकन्द का पूर्ण त्याग रखते हैं। आप बारह व्रतधारी श्रावक होने के साथ गत आठ वर्षों से रात्रि भोजन का त्याग कर चुके हैं। गत पाँच वर्षों से आप स्थानीय श्रावक संघ, सुमेरगंजमण्डी में मंत्री पद के गुरुतर उत्तरदायित्व का कुशलता से निर्वहन कर रहे हैं।

अभी तक आपने पर्वाधिराज पर्युषण में श्योपुरकलां, मुकटी, देई, हिण्डौन, नदबई, जरखोदा और इन्द्रगढ़ में अपनी महती सेवाएँ देते हुए जिनवाणी की प्रभावना की है।

पर्युषण के आठ दिनों में आप प्रातः एवं सायं प्रतिक्रमण, प्रार्थना, अन्तगढ़ सूत्र वाचन एवं विवेचन, प्रवचन, कल्पसूत्र वाचन तथा रात्रि में तत्त्व-चर्चा एवं प्रश्नोत्तर द्वारा श्रावक-श्राविकाओं में ज्ञानवृद्धि कर जिनशासन की सेवा करते हैं।

आप दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें और जिनशासन की प्रभावना करते रहें, स्वाध्याय संघ, जोधपुर आप के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता है।

अकेले रहना नहीं जानते

श्रीमती शान्ता मोदी

जहाँ कुछ नहीं सिवा भ्रम के, वहाँ दौड़ रहे हैं,
जहाँ सब कुछ है, वहाँ से मुख मोड़ रहे हैं।
प्रेम के क्षणों में मन नहीं होता, ध्यान के क्षणें में चित्त नहीं होता।।
शब्द कोलाहल है, केवल भाव सागर क्षीर है,
भावना की मौन भाषा, होंठ केवल नीर है।
अकेले आये हैं, अकेले जाना है, सब मानते हैं,
अकेले रहना चाहिये, किन्तु अकेले रहना नहीं जानते।।

-सी, २६, देवनगर, टोंक रोड़, जयपुर

समाचार-संकलन

बंगारपेट में धर्माराधना एवं तप-त्याग का सुरभित वातावरण

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, शीलव्रत के प्रबल प्रेरक, समाज-सुधार हेतु वैचारिक क्रान्ति के पथ-दर्शक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी सेवामूर्ति श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ८ के पावन सान्निध्य में बंगारपेट धर्मतीर्थ बन गया है। यह मध्यम कस्बा है, जहाँ स्थानकवासी परम्परा के मात्र १३ एवं मूर्तिपूजक परम्परा के ५५ घर हैं। किन्तु प्रवचन-श्रवण एवं धर्माराधना की दृष्टि से यहाँ का नजारा अद्भुत है। प्रवचन के समय पूर्ण शांति का वातावरण रहता है तथा बैंगलोर से प्रारम्भ हुई व्यवस्था के अनुसार यहाँ भी संतों की वाणी के अतिरिक्त किसी वक्ता के बोलने की परम्परा नहीं है। इसके पीछे लक्ष्य यह है कि आगत श्रद्धालु पूज्य आचार्यप्रवर एवं संतरत्नों के श्रीमुख से वीतरागवाणी का अमृतमय पान करने की भावना लेकर आता है। प्रवचन में दैनिक एवं रविवारीय उपस्थिति सबके उत्साह को द्विगुणित एवं बहुगुणित कर देती है।

पर्वाधिराज पर साधना की दृष्टि से बैंगलोर, मैसूर, रायचूर, कोलार, बल्लारी, चेन्नई, विल्लीपुरम, कुम्भकोणम्, इचलकरंजी, सैलाना, जयपुर, सवाईमाधोपुर, नागौर आदि स्थानों से श्रावक-श्राविका तपाराधना की प्रबल भावना से बंगार (स्वर्ण) धरा पर पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में पधारे। पर्युषण में प्रतिदिन व्यवस्थित कार्यक्रम चला। पर्युषण पर्व प्रारम्भ होने के एक दिन पूर्व से (२० अगस्त से) यहाँ नवरंगी की साधना शुरू होने से पर्युषण पर्व पर आठ के बजाय नौ दिनों तक विशेष ठाट रहा। देश के कोने-कोने से श्रद्धालु भक्त इन नौ दिनों में धर्म-साधना का पूरा लाभ ले रहे थे।

३२ दिवसीय तपस्या के साथ बंगारपेट में दो मासखमण तप पूर्ण हो गए हैं- १. सुश्राविका श्रीमती बिन्दु जी-मैसूर, २. सौ. ललिता जी धर्मपत्नी श्री सुभाषचन्द जी धोका एवं पुत्रवधू श्री विमलचन्द जी धोका-मैसूर।

पर्युषण में अच्छी संख्या में एकाशन, दया, आयम्बिल, उपवास, बेला, तेला, चौला, पचौला आदि तपस्याएँ हुईं। ३५ भाई-बहनों ने अठाई तप किया। नौ, ग्यारह की तपस्याएँ ५-५ हुईं। पन्द्रह की तपस्या भी हुई। प्रतिपूर्ण पौषध करने वालों की अच्छी संख्या रही। प्रतिक्रमण का दृश्य अनूठा था। रात्रि में साधना बहनें पौषधशाला में की।

२०० से अधिक भाइयों एवं ३०० से अधिक बहनों ने साम्वत्सरिक प्रतिक्रमण कर क्षमायाचना की। पौषध भी अच्छी संख्या में हुए। जैनेतर श्रद्धालुओं की भी उपस्थिति एवं धर्मश्रद्धा दृष्टिगोचर हुई। भाई श्री हरीश जी शर्मा संतों के साथ गोचरी के समय सेवा का लाभ ले कर्म-निर्जरा कर रहे हैं। उन्हीं की धर्मपत्नी ने पचोले की तपस्या की। एक राजपुरोहित बहिन ने अठाई की तपस्या उपयोगपूर्वक की। श्री हरीश जी दुग्गड़ के पिताश्री श्री गौतम जी दुग्गड़ पूज्य गुरुदेव के दर्शन से प्रभावित होकर जीवन के वास्तविक स्वरूप को समझकर तदनुरूप आचरण हेतु उद्यत हुए हैं। उन्होंने अठाई तप की आराधना की तथा आपकी बहन बिन्दु जी ने मासखमण तप सम्पन्न किया है। आपने आचार्यप्रवर के श्रीमुख से आजीवन शीलव्रत का नियम अंगीकार किया है। आपके सुपुत्र हरीश जी ने मात्र १५ दिनों में प्रतिक्रमण सीख कर पर्युषण में कराया भी है।

प्रातःकालीन प्रार्थना एवं ८.४५ बजे अंतगडसूत्र का वाचन-विवेचन एवं सम्बद्ध विषय पर पर्युषण में प्रवचन श्री योगेशमुनि जी म.सा. द्वारा फरमाया गया। १० बजे महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. द्वारा पीयूष वाणी का पान कराया गया। तदनन्तर आगममर्मज्ञ आचार्यप्रवर का अन्तरदशा को झकझोरने वाला, गुण एवं व्रत-ग्रहण करने की सामर्थ्य जगाने वाले प्रवचनामृत का रसास्वादन में सभी श्रोता निमग्न रहे। सम्वत्सरी महापर्व के दिवस का दृश्य धर्ममय एवं तपोमय था। उपवास विपुल संख्या में हुए। १० वर्षीय सुशील बांठिया ने भी उपवास एवं पौषध किया।

अपराह्न में कल्पसूत्र का वाचन थोकड़ों के रसिक श्री बलभद्रमुनि जी ने किया। सम्वत्सरी के दिन 'पट्टावली प्रबंध संग्रह' का सुन्दर विवेचन तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने किया। बृहदालोयणा का पाठ श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. ने किया।

बंगार संघ छोटा है, किन्तु निर्मल भावनाएँ मोटी हैं। यहाँ के श्रावक-श्राविका एवं युवकरत्न आतिथ्य सत्कार में अग्रणी रहने के साथ तप-त्याग भी कर रहे

हैं। आवास एवं भोजन की सुन्दर व्यवस्था के साथ सेवा की भावना प्रमोदजनक है।

पर्युषण पर्व में सभा का संचालन शासन सेवा समिति के सदस्य सुश्रावक श्री गणेशमल जी भण्डारी ने किया। २९ अगस्त को सामूहिक क्षमापना का कार्यक्रम रखा गया जिसमें श्री नथमल जी सांखला, श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल, श्री पारसमल जी बोथरा, श्री गणेशमल जी भण्डारी, श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल, श्री दलीचन्द जी नाहटा, मूर्तिपूजक समाज की ओर से श्री उम्मेदमल जी जैन, श्री अनिल जी नाहटा, सौ. प्रकाशबाई जी नाहटा ने क्षमा के महत्त्व पर अपने विचार अभिव्यक्त किए। महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जिसके हृदय में स्नेह, करुणा, दया और क्षमा के भाव हैं वही सब जीवों पर मैत्री भाव रख सकता है। आचार्यप्रवर ने संकल्प की दृढ़ता के साथ साधना पथ पर बढ़ने की प्रेरणा कीचातुर्मास में श्री दलीचन्द जी नाहटा, श्री प्रकाश जी, श्री महावीर जी, श्री सुनील जी नाहटा, श्री अनिल जी नाहटा, श्री आनन्द जी, प्रमोद जी नाहटा, श्री प्रमोद जी साँखला, श्री अनिल जी बांठिया, श्री अशोक जी बंब; श्री हरीश जी शर्मा आदि सेवा का अच्छा लाभ ले रहे हैं। -*जगदीश जैन*

पीपाड़ शहर में विशेष धर्माराधना

आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गंभीर, प्रबल पुरुषार्थी परमश्रद्धेय उपाध्याय पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ के पावन सान्निध्य में धर्माराधना एवं तपाराधना का ठाट लगा हुआ है। उपाध्यायप्रवर का पीपाड़ में लगभग ४२ वर्षों के पश्चात् चातुर्मास होने से धर्म-ध्यान एवं त्याग-तप की झड़ियाँ लगी हुई हैं। चातुर्मास के प्रारम्भ में विशेष गर्मी होते हुए भी तपस्याएँ जारी थीं जो पर्युषण पर्व आने तक निरन्तर बढ़ती रही। पर्वाधिराज पर्युषण के अवसर पर भाद्रपद में एक नवरंगी भाइयों में तथा दो नवरंगी एवं एक पचरंगी बहिनों में हुई। ७, ८, ९ और ११ की लगभग ५० से अधिक तपस्याएँ हुई हैं। १७ एवं २१ दिवसीय तपस्याएँ भी हुई हैं। श्रीमती लीलादेवी जी धर्मपत्नी श्री माँगीलाल जी कटारिया के बड़ी तपस्या चल रही है तथा ५१ तक बढ़ने की भावना है। सिद्धि-तप भी हो चुका है। संवत्सरी के दिन लगभग ३०-३५ बड़ी तपस्याएँ (८, ९ दिन आदि) हुई हैं। १०-१२ युवारत्नों ने भी विशेष तपस्या की। युवक संघ द्वारा पर्युषण के प्रथम दिन सामूहिक दया का कार्यक्रम रखा गया जिसमें ५० युवकों ने दया की। इस दिन लगभग १००-१२५ दया हुई। अब तक ५ आजीवन शीलव्रत के नियम

हो चुके हैं। पर्युषण में धार्मिक प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ है। पर्युषण पर अन्य ग्राम-नगरों के १००-१२५ भाई-बहनों ने तपाराधन का लाभ लिया। ८ दिन नवकार मंत्र का जाप हुआ। पीपाड़ संघ की ओर से दर्शनार्थी बन्धुओं एवं दया-संवर करने वालों की व्यवस्था सुन्दर है। ३१ अगस्त को आचार्यप्रवर ने पीपाड़ में ११ अक्टूबर को दो दीक्षाएँ होने की घोषणाएँ की है, जिससे संघ में अपार उत्साह है।

-सुमति मेहता, मंत्री

महासती मण्डलों के सान्निध्य में धर्माराधन

जोधपुर- साध्वीप्रमुखा, परमविदुषी, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., तत्त्वचिन्तिका व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७ ने पर्युषण पर्व के अवसर पर दो सिंघाड़ों में धर्म-ध्यान करवाया। महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ३ ने पावटा स्थानक में जाकर ८ दिन धर्माराधना के साथ प्रवचन आदि में उस क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं को लाभान्वित किया। जोधपुर में सुश्राविका श्रीमती मुनिया बाई जी मुणोत एवं सुश्राविका श्रीमती बिलम बाई जी पारख ने मासखमण तप की आराधना की। पाँच श्रावक-श्राविकाओं ने १५ की तपस्या की। ग्यारह की ११, पाँच की १५ तपस्याएँ हुईं। बेले, तेले, अठाई की तपस्याएँ अनगिनत हुई। एकाशन के मासखमण, नवरंगी, अठरंगी, पचरंगी, सिद्धितप आदि तपस्याओं ने वातावरण को धर्ममय बना दिया। पौषध, संवर, दया, एकाशन आदि तपस्याएँ विपुल मात्रा में हुई। घोड़ों का चौक और पावटा दोनों स्थानों पर व्याख्यान में उपस्थिति अच्छी रही। घोड़ों का चौक स्थानक में प्रातःकाल भाई-बहनों ने एक-एक घंटे का एवं पावटा में बहनों ने सूर्योदय से सूर्यास्त तक नवकार मंत्र का जाप किया। श्री राजेन्द्र कुमार जी बाफना ने सजोड़े शीलव्रत अंगीकार किया।

जावला-सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ के पावन सान्निध्य में संघ में अपार हर्ष एवं उत्साह है। तपस्या की झड़ी लगी हुई है। धर्माराधना का ठाट है। पर्युषण पर्व पर महासती श्री पुनीतप्रभा जी म.सा. ने ९ की तपस्या की है। श्रीमती प्रकाशदेवी जी धर्मपत्नी श्री चैनरूपचन्द जी बाफना, गोटन ने ११ की तपस्या तथा सुश्री सीमा सुपुत्री श्री पारसमल जी कोचेटा ने अठाई तप किया है। श्रीमती धापूदेवी धर्मपत्नी श्री धर्मीचन्द जी कोचेटा के ३१ दिवसीय मासखमण की तपस्या सुख साता से ९ अगस्त को पूर्ण हो गई है। श्रीमती चन्दा देवी धर्मपत्नी श्री अजीतराज जी कोठारी के १० की तपस्या, श्रीमती मैनादेवी जी धर्मपत्नी श्री उम्मेदमल जी

डूंगरवाल, थांवला के ९ की तपस्या हुई है। श्रीमती नौरतीदेवी धर्मपत्नी श्री श्रीचन्द जी कोचेटा के ५ सितम्बर को १९ की तपस्या हो गई है तथा मासखमण के भाव हैं। पाँच, चार, तेला, बेला, उपवास अगणित हुए हैं। व्याख्यान के समय हॉल पूरा खचाखच भर जाता है। बड़ू, हरनावा, गूलर, भकरी, रावडियात, भैरूंदा, थांवला, पीह, मेड़ता, गोटन, डेगाना, अजमेर, किशनगढ़ आदि स्थानों से जावला में श्रावक-श्राविकाओं का व्याख्यान श्रवण एवं त्याग-प्रत्याख्यान हेतु आवागमन बना हुआ है। -*नथराज कोठारी, जावला, सम्पर्क- ०१४५-२६०१५२२*

जबलपुर- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७ के पावन सान्निध्य में चातुर्मास प्रारम्भ से ही व्याख्यान में अच्छी उपस्थिति रहती है। आचार्य श्री शोभाचन्द जी म.सा. व श्री सागरचन्द्र जी म.सा. की पुण्य तिथि और आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. की जन्मतिथि के उपलक्ष्य में दया व उपवास की पचरंगी हुई। चातुर्मास में दो मासखमण हो चुके हैं। श्री बाबूलाल जी बाघमार के मासखमण के पूर पर ६० उपवास एवं ६० एकाशन तप हुए। दूसरा मासखमण श्री गौतमचन्द जी बोथरा ने किया। चातुर्मास के प्रारम्भ से ही तेले व आयम्बिल की लड़ी अखिण्डत चल रही है। पर्वाधिराज पर्युषण के अवसर पर दया-उपवास की नवरंगी व आठ दिन तक अखण्ड नवकार मंत्र का जाप हुआ। दया-संवर, उपवास-पौषध, तेला, बेला, उपवास, एकाशन आदि अच्छी संख्या में हुए। सोलह की १, पन्द्रह की ६, ग्यारह की ७, नौ की १० तपस्याएँ हुई हैं। ५ अठाई तप हुए हैं। एकाशन के चार मासखमण सम्पन्न हो चुके हैं। चातुर्मास में अब तक ३ आजीवन शीलव्रती बने हैं- १. श्रीमती कमलादेवी-श्री तपस्वीलाल जी बागमार, २. श्रीमती रमाबेन-श्री माणकलाल जी कोचर, ३. श्रीमती विनय-श्री मंगलचन्द्र जी टाटिया। -*मदनलाल बाघमार*

वेल्लूर- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७ का चातुर्मासार्थ प्रवेश ७ जुलाई २००६ को सत्वाचारी से वेल्लूर जैन स्थानक में हुआ। चातुर्मास प्रारम्भ से ही यहाँ धर्म-ध्यान, तप-त्याग एवं जिनवाणी का ठाट लगा हुआ है। सुश्राविका श्रीमती सम्पूर्णाबाई जी बोहरा एवं श्रीमती पुष्पाबाई जी डूंगरवाल ने ११ उपवास, सुमनबाई कटारिया ने ९ उपवास एवं डिम्पल कुमारी ने ५ उपवास की तपस्या पूर्ण की है। श्री नथमल जी कटारिया एवं मैनाबाई ने अठाई की तपस्या की है। महासतीवर्या की प्रेरणा से ८ दिन श्राविकाओं ने नमस्कार मंत्र का जाप किया है। महासती जी के स्वास्थ्य में काफी सुधार है। आत्मबल मजबूत है।

-*धर्मचन्द छोरलिया*

कानपुर- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४ की पावन सन्निधि में ज्ञान-ध्यान और तप-त्याग का अपार उत्साह है। चातुर्मास के प्रारम्भ से ही प्रतिदिन १२ घंटे का नवकार मंत्र का जाप प्रातःकाल से सायंकाल तक निरन्तर चल रहा है। सामूहिक दया, सामूहिक एकाशन, लोगस्स एवं नमोत्थुणं के जाप हुए हैं तथा धार्मिक परीक्षाएँ आयोजित हुई हैं। सामायिक, प्रतिक्रमण सीखने का कार्य निरन्तर चल रहा है। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा में बच्चों, युवाओं और महिलाओं ने बढ़कर भाग लिया है। पूज्य महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा., महासती श्री सुश्रीप्रभा जी म.सा. एवं महासती श्री शारदा जी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश से ही एकान्तर तप चल रहा है। प्रवचन के समय लगभग २०० से २५० तक श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रहती है जिनमें अधिकतर सामायिक-साधना में बैठते हैं। पर्युषण पर्व में ४०० से ६०० की उपस्थिति रही। खोया बाजार जैन स्थानक में विगत ५० वर्षो के इतिहास में सामायिक वेश में इतनी संख्या का होना एक कीर्तिमान है। बिना माइक एवं पंखे के प्रवचन श्रवण करना तथा स्थानक में श्राविकाओं का पौषध में रहना एक अविस्मरणीय उपलब्धि है। यहाँ पर पन्द्रह दिवस की १, बारह की १, ग्यारह की ३, नौ की ९ और आठ उपवास की १२ तपस्याएँ हुई हैं। उपवास, बेला, तेला, पचोला, सात आदि तपस्याएँ भी अच्छी संख्या में हुई हैं। तेले की तपस्याएँ ४० से ऊपर हुई हैं। एकाशन, आयम्बिल, दया-पौषध, संवर आदि की साधना में श्रावक-श्राविकाओं को आनन्द आ रहा है। वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, आनन्दपुरी के कुछ परिवारों ने चातुर्मास में जुड़कर महासतीजी की प्रेरणा से तपस्याएँ भी की है, जो कानपुर की एक उपलब्धि है।

-दौलतराम जैन, अध्यक्ष, फोन नं. ९३३६२७३३०१

आवासन मण्डल, सवाईमाधोपुर-व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ६ के सान्निध्य में सम्पूर्ण क्षेत्र में धर्माराधना के प्रति उत्साह परिलक्षित हो रहा है। अब तक ४ पचरंगी तप हो गये हैं, २ पचरंगियाँ अभी पर्युषण में १ भाइयों द्वारा तथा १ बहिनों द्वारा सम्पन्न हुई है। प्रत्येक रविवार को एवं अष्टमी, चतुर्दशी को प्रवचन में विशेष उपस्थिति रहती है। रविवार को धार्मिक प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जाता है। पर्युषण पर्व में आठों दिन अलग-अलग विषयों पर प्रतियोगिता आयोजित हुई। तेले की लड़ी चातुर्मास के प्रारम्भ से चल रही है। श्रीमती कैलाशीबाई धर्मपत्नी श्री शांतिलाल जी 'एण्डवा वाले' ने ३१ दिवसीय मासखमण तप सम्पन्न

किया है। पर्युषण पर्व पर पन्द्रह की १, ग्यारह की ८, नौ की २ तपस्याएँ हुई हैं। लगभग ३५ अठाई तप और २०० तेले सम्पन्न हुए हैं। उपवास अनगिनत हुए हैं। सम्वत्सरी पर लगभग ५० भाइयों और बहिनों ने अष्टप्रहर पौषध किए हैं। बालक-बालिकाओं के धार्मिक शिक्षण का कार्य महासती जी के सान्निध्य में सुचारू रूप से चल रहा है। सामायिक, प्रतिक्रमण, ६७ बोल आदि सीखने का क्रम बना हुआ है। पर्युषण के आठों दिन नवकार मंत्र का अखण्ड जाप हुआ। श्री धर्मचन्द जी जैन 'आलनपुर वालों' ने सजोड़े शीलव्रत अंगीकार किया है। आयम्बिल एवं एकाशन की लड़ी चल रही हैं।

कोटा-व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ५ के सान्निध्य में धर्म-ध्यान एवं तप-त्याग का ठाट चल रहा है। कई भाई-बहनों ने रात्रि-भोजन, सप्त कुव्यसन एवं जमीकन्द के त्याग किए हैं। बहनों में श्रावण-भाद्रपद में लगातार एकान्तर तप और एकाशन तप तथा २५० प्रत्याख्यान सहित कर्मचूर का तप चल रहा है। श्रावण में बहनों ने उपवास-दया की पचरंगी की तथा भाइयों ने पाँच-पाँच सामायिक एवं सामूहिक रूप से ५१ से भी अधिक तेले की तपस्या की। सुश्राविका इन्द्रा हिंगड़ ने ११ की तपस्या की तथा आठ बहनों नें अठाई तप किया। प्रतिदिन एक उपवास, आयम्बिल, नीवी एवं एकाशन की लड़ी चल रही है। प्रत्येक रविवार को व्याख्यान में ५०० से भी अधिक भाई-बहनों की उपस्थिति रहती है। प्रत्येक रविवार को धार्मिक परीक्षाओं का आयोजन, सामूहिक नवकार मंत्र का जाप तथा पाँच-पाँच सामायिक का कार्यक्रम चल रहा है। २ अगस्त को १२५ से भी अधिक सामूहिक एकाशन तप हुए। बालक-बालिकाएँ प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण, २५ बोल एवं भक्तामर स्तोत्र सीखने के लिए बड़ी संख्या में आ रहे हैं।

- बुद्धिप्रकाश जैन, फोन नं. ९४१४१-७७१३९

काचीगुड़ा-हैदराबाद- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा ५ के सान्निध्य में धर्माराधना का ठाट चल रहा है। महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. द्वारा प्रातः ८ से ९ बजे तक काचीगुड़ा स्थानक में 'एक कदम : धर्म की ओर' विषय को आधार बनाकर विशेष प्रेरणाप्रद प्रवचन फरमाया जा रहा है। सभी युवक इस कार्यक्रम में सामायिक में बैठते हैं। महासती जी नये दृष्टान्तों, विचारों, विश्लेषण, दृष्टान्त, प्रेरक कथा-प्रसंग आदि के माध्यम से प्रभावी रीति से समझाते हैं। इस कक्षा में प्रतिदिन १५० एवं रविवार को ३०० युवक भाग ले रहे हैं।

पाली-मारवाड़- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ३

के पावन सान्निध्य में चौमासी चौदस से ३१ जुलाई तक ७ पचरंगियाँ हो चुकी हैं और तब से भाद्रपद तक तेले की लड़ी चलती रही। इसमें २९ भाई-बहनों ने भाग लिया है। महिलाओं के प्रथम सप्त दिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर में लगभग ५० बहनों ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। द्वितीय सप्तदिवसीय शिविर में ६० महिलाओं ने भाग लिया, जिसका समापन २ अगस्त को हुआ है। भाई-बहनों में धर्मचक्र का भी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जन्माष्टमी को तेरहरंगी प्रारम्भ हुई। प्रवचन श्रवण के समय लगभग सभी श्रोता सामायिक में बैठते हैं। *-ताराचन्द सिंघवी*

गदग (कर्नाटक)- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ के चातुर्मास में धार्मिक, आध्यात्मिक कार्यक्रमों के साथ-साथ प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्नमंच, धार्मिक परीक्षाएँ एवं शिविर आदि के कार्यक्रम चल रहे हैं। प्रत्येक रविवार को बाल संस्कार शिविर भी आयोजित होता है।

सहकार नगर, नाशिक- सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा.आदि ठाणा ३ का चातुर्मास होने से स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं, युवक-युवतियों, बालक-बालिकाओं में धर्माराधना, तपाराधना, ज्ञानाराधना का विशेष उत्साह है। पर्युषण के अवसर पर उपवास, बेला, तेला, चोला, पचोला, अठाई आदि तपस्याएँ हुई हैं। दया-संवर, उपवास-पौषध आदि साधनाओं में सक्रिय भागीदारी रही है।

भोपालगढ़- महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा.आदि ठाणा ३ के विराजने से भोपालगढ़ में धर्म-ध्यान का विशेष उत्साह है। पर्युषण पर्व पर पन्द्रह की १, तेरह की १, दस की १, नौ की १, अठाई १०, सात २, तेले ३०, बेले १० आदि के साथ चोले, पचोले, उपवास, एकाशन आदि की उल्लेखनीय तपस्याएँ हुई हैं। पर्युषण पर्व पर आठों दिन पुरुष एवं महिलाओं ने नवकार मंत्र के अलग-अलग जाप किए हैं। पर्युषण के अवसर पर युवारत्नों ने पहली बार भिक्षुदया की आराधना की। पाँच दिन धार्मिक परीक्षाओं का आयोजन हुआ, जिसमें सबने उत्साह से भाग लिया। पर्युषण के पश्चात् भी धर्माराधना का क्रम बना हुआ है।

पल्लीवाल क्षेत्र में धार्मिक प्रचार-प्रसार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा समय-समय पर विभिन्न क्षेत्रों में धार्मिक प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, इसी संदर्भ में दिनांक २४.७.०६ से २८.७.०६ तक पल्लीवाल क्षेत्र के २२ से भी अधिक ग्राम/शहरों में प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में स्वाध्याय संघ, जोधपुर

की सचिव श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर, आध्यात्मिक पाठशाला प्रभारी श्री लल्लूलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री भागचन्द जी जैन-नसिया गंगापुर, श्री कृष्णमोहन जी जैन-हिण्डौन, श्री हुकमचन्द जी जैन-हिण्डौन, श्री महावीर जी जैन-गंगापुर सिटी तथा श्री छगनलाल जी जैन-खौह ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं।

प्रचार-प्रसार के दौरान 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं प्रतियोगिता का प्रचार, जिनवाणी के सदस्य बनाना, पर्युषण पर्वाराधना हेतु माँगे एकत्रित करना, नये स्वाध्यायी बनाना, स्वाध्यायी स्वीकृति लेना, नई पाठशालाओं का गठन, बोर्ड परीक्षा की उत्तरपुस्तिका एकत्रित करना एवं नये फार्म भरवाना, मेधावी छात्र-छात्रा योजना की जानकारी प्रदान करना आदि कार्यों के साथ सामूहिक प्रार्थना, सामायिक-स्वाध्याय आदि की प्रेरणा प्रदान की गई। *-चंचलमल चोरडिया, संयोजक*

मुम्बई में पर्युषण पर्व पर अपूर्व धर्माराधना

इस वर्ष श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मुम्बई के तत्त्वावधान एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् की सक्रियता से प्रथम बार पर्युषण पर्व विशिष्ट स्वाध्यायियों को आमंत्रित कर मनाया गया। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सन् २००२ के चातुर्मास के पश्चात् संघ की चेतना का रूप धर्माराधन के अपूर्व उत्साह के रूप में दृष्टिगोचर हुआ। २१ अगस्त से २८ अगस्त तक विले पार्ले के संन्यास आश्रम में आयोजित पर्युषण पर्व में श्री नवरतनजी भंसाली-बैंगलोर, डॉ. धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, एडवोकेट श्री शिखरचन्द जी सुराणा-चेन्नई, डॉ. अशोक जी कवाड़-चेन्नई एवं श्री बुधमल जी बोहरा-चेन्नई ने विशेष धर्माराधना कराई। प्रातःकाल प्रार्थना के पश्चात् ८.४५ से अंतगड़सूत्र का वाचन-विवेचन एवं फिर व्याख्यान का कार्यक्रम प्रारम्भ में ११.०० बजे तक चलता था जो फिर १२.०० बजे तक चलने लगा तथा सम्वत्सरी महापर्व के दिन १ बजे तक व्याख्यान एवं प्रत्याख्यान का कार्यक्रम चला। दिन में २.०० बजे से धार्मिक ज्ञानार्जन की कक्षाएँ लगती थीं तथा शाम को प्रतिक्रमण के पश्चात् भी तत्त्वचर्चा एवं जीवनोपयोगी बातों को रुचिकर ढंग से समझाया जाता था। प्रातःकाल ६.४५ बजे से रात्रि १० बजे तक व्यस्त कार्यक्रम में मुम्बईवासियों ने उत्साह से भाग लिया। संघ के द्वारा पर्युषण पर्वाराधना की विशेष व्यवस्था की गई। भायन्दर से एक बस संन्यास आश्रम आती थी। प्रातःकालीन नाश्ते, भोजन एवं सायंकालीन भोजन की व्यवस्था संन्यास आश्रम में ही होने से श्रावक-श्राविकाओं को अधिकाधिक समय धर्माराधना में लगाने में असुविधा नहीं हुई। प्रवचन के समय ३०० से लेकर ५०० तक की उपस्थिति रही। साम्वत्सरिक प्रतिक्रमण में १८० श्रावक एवं

८० श्राविकाएँ उपस्थित थीं। रविवार २७ अगस्त को एक दिवसीय धार्मिक शिविर आयोजित किया गया, जिसमें १२ व्रतों पर भी प्रकाश डाला गया। बच्चों को २५ बोल, पुण्य-पाप, विज्ञान और धर्म आदि विषयों के माध्यम से सत्संस्कार दिए गए।

सुश्रावक श्री धर्मेन्द्र जी भण्डारी के ३१ दिवसीय मासखमण तप का पूर सम्वत्सरी महापर्व के दिन सम्पन्न हुआ। श्री धर्मचन्द जी बोथरा एवं श्रीमती अभिलाषा जी हीरावत ने अठाई तप किया। तेला, चोला, पचोला आदि अनेकविध तपस्याएँ हुईं। उपवास सैकड़ों की संख्या में हुए।

कार्यक्रम के संयोजन में स्थानीय संघाध्यक्ष श्री पारसचन्द जी हीरावत, श्री नरेन्द्र जी हीरावत, श्री गौतम एस. मेहता आदि की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। युवकों ने इस कार्यक्रम में उल्लेखनीय उत्साह दिखाया। अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कोषाध्यक्ष श्री सरदारसिंह जी कर्णावट एवं स्थानीय अध्यक्ष श्री पारसचन्द जी हीरावत नियमित रूप से प्रातः एवं सायंकाल रात्रि में १० बजे तक प्रायः सभी दिन उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की सफलता का श्रेय सब गुरु भगवन्तों को दे रहे हैं। श्राविकाओं, युवकों एवं बालक-बालिकाओं में पर्युषण आराधना के माध्यम से विशेष चेतना का संचार हुआ है।

प्रतिभासम्पन्न विद्यार्थियों को आह्वान

युगमनीषी आचार्य श्री हस्ती के प्रति समर्पित श्रावकरत्न श्री पारसमल जी सुराना का ५ वर्ष पूर्व ५ दिन के संलेखना सहित महाप्रयाण से अन्तःस्फुरित प्रेरणा को प्रकल्प रूप से संघ के समक्ष प्रस्तुत करते हमें हर्ष की अनुभूति हो रही है। भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में सम्मिलित होने के इच्छुक विशिष्ट योग्यता सम्पन्न किसी भी जैन विद्यार्थी की सम्पूर्ण व्यवस्था का दायित्व वहन करने को हम लालायित हैं। राज्यस्तरीय व अन्य प्रशासनिक योग्यता विकास के लिये भी उत्कृष्टता के आधार पर विचार किया जा सकता है। जैन समाज में अगणित प्रतिभाएँ छिपी हुई हैं। संस्कारवान प्रतिभा से संघ-समाज के साथ देश का भविष्य भी समुज्ज्वल हो सके इसी भावना से सेवा करने का मानस हो रहा है। सभी सूचनाएँ गोपनीय रखी जाने के आश्वासन के साथ प्रतिभासम्पन्न युवकों व युवतियों को आगे आने का आह्वान है।

-प्रबंध ट्रस्टी, ***Surana & Surana Public Charitable Trust-Estd. 1981, International Law Center, Opp. High Court, 224-N.S.C. Bose Road, Chennai-600001(T.N.) Ph. 044-25390121, 25381616, Fax-044-25383339, Mo. 09884491000***

जैन सिद्धान्त बोल संग्रह पर परीक्षा

जैन सिद्धान्त बोल संग्रह (द्वितीय भाग) पर ९ अक्टूबर २००६ को १ से ४ बजे तक ओपन बुक एग्जाम रखी गई है। प्रश्न पत्र १०० अंकों का होगा तथा सभी प्रश्न १ अंक के, वस्तुनिष्ठ व सरल होंगे। प्रथम पुरस्कार ५०००/-, द्वितीय ३०००/-, तृतीय २०००/- के अलावा १०० श्रेष्ठ परीक्षार्थियों को आकर्षक प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जायेंगे। *-महेश नाहटा, परीक्षा संयोजक, पो. नगरी, जिला- धमतरी (छ.ग.), फोन नं. ०७७००-२५१२४१, मो. ०९४२५२४३४१२*

अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित साहित्य अकादमी द्वारा "पत्राचार अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम" का पन्द्रहवाँ सत्र १ जनवरी २००७ से प्रारम्भ किया जा रहा है। इसमें हिन्दी एवं प्रान्तीय भाषा विभागों के साथ-साथ अन्य सभी विभागों के अध्यापक, शोधार्थी, अध्ययनरत छात्र एवं संस्थानों में कार्यरत विद्वान् एवं अपभ्रंश भाषा सीखने के इच्छुक व्यक्ति सम्मिलित हो सकेंगे। पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु नियमावली व आवेदन-पत्र दिनांक १ अक्टूबर २००६ से अकादमी कार्यालय, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाईरामसिंह रोड, जयपुर-३०२००४ से प्राप्त करें। कार्यालय में आवेदन-पत्र शुल्क सहित पहुँचने की अन्तिम तारीख १५ दिसम्बर २००६ रहेगी। उसके बाद ३१ दिसम्बर २००६ तक विलम्ब शुल्क २५ रुपये तथा ३१ जनवरी २००७ तक विलम्ब शुल्क ५० रुपये जमा करवाना होगा।

-डॉ. कमलचन्द सोगाणी, संयोजक-अपभ्रंश साहित्य अकादमी

जोधपुर में असहाय पशु केन्द्र

जोधपुर में बनाड़ के निकट असहाय जानवरों की चिकित्सा हेतु एक अस्पताल Shelter to Sufferings (असहाय पशु केन्द्र) डॉ. रत्ना के संचालन में कार्यरत है। लगभग १५० अंधे, लंगड़े एवं बीमार जानवरों का यहाँ इलाज हो रहा है। जब कभी किसी को बेसहारा रोगी पशु दिखाई दे तो वह उसे उस अस्पताल में पहुँचा सकता है। यह संस्था दानदाताओं के सहारे चल रही है। इसमें अभी कोई एम्बुलेंस एवं स्थायी चिकित्सक नहीं है। *सम्पर्क सूत्र- डॉ. रत्ना, गणेशीलाल बिल्डिंग, इंडियन ओवरसीज बैंक के सामने, सोजती गेट, जोधपुर (समय प्रातः १२.३० से ३.३० बजे) केन्द्र का स्थान- रेलवे लाइन के पार, गैस गोदाम के पास, बनाड़ (समय प्रातः ४.०० से ६.०० बजे तक)*

बधाई/चुनाव

प्रो. प्रेमसुमन जैन को पालि-प्राकृत राष्ट्रपति अवार्ड

जैन धर्म-दर्शन के ख्यातिलब्ध विद्वान् एवं मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. प्रेमसुमन जैन का उनके प्राकृत साहित्य एवं व्याकरण विवेचन विषयक विशिष्ट कार्य को देखते हुए महामहिम राष्ट्रपति, भारत सरकार द्वारा पालि-प्राकृत भाषा के राष्ट्रपति अवार्ड हेतु चयन किया गया है। इस पुरस्कार की घोषणा १५ अगस्त को की गई। डॉ. जैन को हार्दिक बधाई।

डॉ. प्रिया जैन का अमेरिकी दौरा

डॉ. प्रिया जैन २४ अगस्त को तीन सप्ताह के लिए अमेरिका के पाँच बड़े शहरों में Interfaith Dialogue के लिए रवाना हो गई है। मद्रास विश्वविद्यालय के जैनोलॉजी विभाग में गत सात वर्षों से कार्यरत तथा चेन्नई में प्राकृत विद्या व जैन धर्म के प्रचार-प्रसार में सक्रिय डॉ. प्रिया जैन वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं प्रशिक्षक भी हैं। वे अमेरिका में जैन धर्म का प्रतिनिधित्व करेंगी। अमेरिका में अनेक स्तरों पर हो रही धार्मिक गतिविधियों का १६ सितम्बर तक वे अपने अन्य धर्म-प्रतिनिधियों के साथ अवलोकन करेंगी तथा धार्मिक सहिष्णुता, शान्ति, धर्म और राजनीति के बीच संबंध आदि विषयों पर विचार-विमर्श करेंगी।

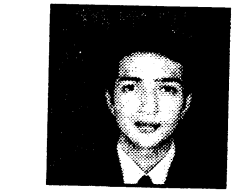

जलगाँव- श्री सिद्धार्थ रायसोनी सुपुत्र श्रीमती प्रभा एवं डॉ. शेखर जी रायसोनी ने पूना विश्वविद्यालय से बी.ई. परीक्षा विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण कर अगस्त में उच्च शिक्षा हेतु लॉस एंजिल्स के लिए प्रस्थान किया है।

संगमनेर- श्री कुशल कुमार सुपुत्र श्री नन्दकुमार माणिकलाल जी लोढ़ा ने महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडल, पुणे की माध्यमिक परीक्षा ९२.६६ प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण कर वरीयता सूची में १९वाँ स्थान प्राप्त किया है।

जयपुर- सुश्री सलोनी मारू सुपुत्री श्री सुनील कुमार जी मारू एवं सुपौत्री श्री माणकचन्द जी मारू को सी.बी.एस.आई. की १२वीं कक्षा (विज्ञान संकाय) की परीक्षा में ९२ प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। सुश्री मारू को

राजस्थान की राज्यपाल श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने मामराज अग्रवाल फाउण्डेशन, कोलकाता के राष्ट्रीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

हाउसिंग बोर्ड (सवाईमाधोपुर)- श्री लोकेश जैन सुपुत्र श्री सोमप्रकाश जी जैन ने

वर्ष २००६ की अखिल भारतीय इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा (AIEEE) में सफलता प्राप्त कर राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान(MNIT), जयपुर में इलेक्ट्रानिक्स एवं कम्यूनिकेशन ब्रांच में प्रवेश लिया है।

हैदराबाद- श्री जैन रत्न युवक परिषद् (आ.प्र.) के अध्यक्ष श्री श्रीपाल देशलहरा को आन्ध्रप्रदेश सरकार ने गोवंश निषेध कानून के तहत हैदराबाद एवं रंगारेड्डी जिलों के निरीक्षण हेतु सक्षम अधिकारी नियुक्त किया है। इसके अन्तर्गत श्री देशलहरा अधिकृत रूप से कहीं भी निरीक्षण कर सकते हैं। उनका कार्यकाल एक वर्ष का रहेगा। अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक के.आर.नन्दन ने उन्हें शपथ ग्रहण करायी। आपने गतवर्ष २० ट्रकों को जब्त कर ४८० पशुओं को कत्लखाने जाने से बचाया था। वे करुणा अन्तर्राष्ट्रीय एवं भारतीय प्राणी मित्र संघ में भी पदासीन हैं।

बालोतरा- श्री वर्द्धमान जैन स्थानकवासी संस्थान की आगामी २ वर्ष हेतु नई कार्यकारिणी में श्री खीमराज जी भण्डारी को अध्यक्ष, श्री डूंगरचन्दजी श्रीश्रीमाल एवं श्री रूपचन्द जी सालेचा को उपाध्यक्ष, श्री ओमप्रकाश जी बांठिया को मंत्री, श्री नेमीचन्द जी अन्याव को कोषाध्यक्ष, श्री छगनराज जी वैद मेहता को सहमंत्री एवं श्री मोतीलाल जी हुण्डिया को भोजन-व्यवस्था समिति का कार्य सौंपा गया है।

-ओमप्रकाश बांठिया

संक्षिप्त समाचार

श्रीमती केला देवी हीरावत (धर्म पत्नी स्व.श्री चम्पालाल जी हीरावत) मातुश्री श्रीशान्ती चन्दजी सा. हीरावत ने छै उपवास के पश्चात सातवें रोज तारीख 6 सितम्बर, 2006 को महासती सुमतिकंवर जी म. सा. के मुखारबिन्द से संलेखणा संधारा के पचक्खाण कर लिये। आज दिनांक 8 सितम्बर, 2006 को संधारे का तीसरा दिन है। पूर्ण समाधि भाव है। पूर्ण सजगता है। श्रीमती केलादेवी जी के जीवन में आचार्य भगवन हस्तीमल जी म. सा. आचार्यभगवन हीराचन्दजी म. सा. व उपाध्याय प्रवर मानचन्दजी म.सा. का विशेष प्रभाव है।

अजमेर- श्री वर्द्धमान स्था. जैन श्रावक संघ, अजमेर के तत्त्वावधान में श्री श्वे. स्था. जैन स्वाध्यायी संघ, गुलाबपुरा का वार्षिक अधिवेशन एवं महिला अधिवेशन १२ एवं १३ अगस्त को आयोजित हुआ।

दिल्ली- भोगीलालल लहेरचन्द इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली द्वारा प्राकृत भाषा, साहित्य एवं पाण्डुलिपि विज्ञान पर १८वीं ग्रीष्मकालीन अध्ययनशाला आयोजित की गई। इस अध्ययनशाला में कुल ४९ प्रतिभागी लाभान्वित हुए।

बैंगलोर- श्री कर्नाटक जैन स्वाध्यायी संघ द्वारा जुलाई ०६ में आयोजित त्रिदिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर में १३५ भाई-बहनों ने लाभ लिया। शिविर में डॉ. ज्ञानलता जी आदि सतीवृन्द का सान्निध्य प्राप्त हुआ। *-शांतिलाल बोहरा, संयोजक*

जयपुर- प्रतिभावान जरूरतमन्द जैन छात्र/छात्राओं के लिये श्री महेन्द्रसिंह, विरेन्द्रकुमार, विनोदकुमार लोढ़ा, मोती कटरा, आगरा द्वारा अपने पूज्य पिताश्री संतोकचन्दजी जौहरी एवं मातुश्री तारादेवी लोढ़ा की पुण्य स्मृति में स्थापित सन्तोकतारा जैन चेरिटेबल ट्रस्ट से शिक्षण हेतु छात्रवृत्ति के लिए निम्न पते से आवेदन पत्र प्राप्त कर सकते हैं *-संतोकतारा जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, द्वारा श्री लाभचन्द कोठारी एम.ए., डी-१२०, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड, बापूनगर, जयपुर-३०२०१५*

चेन्नई- आदिनाथ जैन ट्रस्ट, चेन्नई द्वारा १५ से २९ जुलाई २००६ तक ७वाँ विकलांग सहायता निःशुल्क शिविर आयोजित किया गया, जिसमें ७,२३५ लोगों ने लाभ लिया। शिविर का समापन तमिलनाडु के राज्यपाल सुरजीत सिंह बरनाला की उपस्थिति में हुआ एवं ४५५० शिविरार्थियों ने माँस-मदिरा का त्याग किया। ट्रस्ट के द्वारा चूलै मैन बाजार में आदिनाथ जैन सेवा केन्द्र स्थापित किया गया है।

-मोहन जैन, सचिव

लखनऊ- उपप्रवर्तक सिद्धान्ताचार्य श्री राममुनि जी म.सा. 'निर्भय' के सान्निध्य में लखनऊ में संवत्सरी पर्व पर अभूतपूर्व जप, तप एवं धर्मध्यान का ठाट लगा। अनेक युवाओं ने इस जीवन में प्रथम बार सामायिक एवं प्रतिक्रमण किया है।

-रोशनलाल जैन, महामंत्री

श्रद्धाञ्जलि

कोलकाता- सुश्रावक श्री मदनरूपचन्द जी भण्डारी का १७ अगस्त २००६ को आकस्मिक देहावसान हो गया। आप आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतियों के प्रति

प्रगाढ़ श्रद्धावान थे। आपने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, कोलकाता के मंत्री पद का दायित्व बखूबी निभाया। आपका जीवन सरलता, सादगी एवं संतोष से ओतप्रोत रहा। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता के कारण घर-परिवार और संघ-समाज में आप प्रतिष्ठित श्रावकरत्न थे।

हैदराबाद- संघसेवी, धर्मनिष्ठ, वरिष्ठ स्वाध्यायी, परमश्रद्धालु श्रावकरत्न श्री

किशोरचन्द जी छाजेड़ का १५ अगस्त २००६ को हृदयाघात होने से देहावसान हो गया। आप आचार्यप्रवर पूज्य हस्ती, आचार्यप्रवर श्री हीरा, उपाध्यायप्रवर श्री मान के परमभक्त थे। संतसतीवृन्द की सेवा में सदैव सन्नद्ध छाजेड़ साहब ने श्रद्धाभक्ति और सेवाभावना के उच्च आदर्शों के साथ विचरण विहार में सदा सक्रियता रखी। संघ समर्पित श्री छाजेड़ साहब आत्मीयता पूर्वक आतिथ्य सेवा के लाभ के लिए सदा तत्पर रहते थे। अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ में आन्ध्रप्रदेश संभाग के क्षेत्रीय प्रधान व श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, हैदराबाद संघ के मंत्री पद का दायित्व बखूबी निभा रहे थे। श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के स्वाध्यायी के रूप में आपने कई वर्षों तक अपनी सेवाएँ संघ को प्रदान की हैं। सेवाधर्म के साथ उदारता का गुण संस्कारित परिवार की पहचान है और छाजेड़ परिवार इस पहचान का पर्याय कहें तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। आप अपने पीछे श्रद्धानिष्ठ एवं धर्मनिष्ठ संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं। आपके सुपुत्र श्री संदीप जी छाजेड़ भी सेवा के क्षेत्र में आपका अनुकरण कर रहे है।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ अनन्य गुरुभक्त सुज्ञ श्राविका श्रीमती ज्ञानकंवर जी भण्डारी

धर्मपत्नी स्व. श्री माणकमल जी भण्डारी (भूतपूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ) का चार दिवसीय संथारे के साथ दिनांक १७ अगस्त २००६ को देवलोक गमन हो गया। श्रीमती भण्डारी पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सन्त-सतीवृन्द की सेवा में सदा अग्रणी रहती थी। आपका जीवन सरलता, संतोष एवं सादगी से ओतप्रोत था। स्वास्थ्य की प्रतिकूलता होने पर श्रीमती भण्डारी ने महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के मुखारविन्द से संथारा ग्रहण कर अंतिम समय तक समत्व भाव का परिचय देकर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया तथा उसी शुभभावना से अंतिम समय तक प्रत्याख्यानों का निर्वहन किया। सुश्रावक स्व. श्री

माणकमल जी भण्डारी ने संघ में महामंत्री पद के दायित्व को श्राविकारत्न के सहयोग से ही बखूबी निभाया था। सुयोग्य श्राविकारत्न अपने पीछे संस्कारित परिवार छोड़कर गई है। -*दौलत भण्डारी*

हैदराबाद- सुश्रावक श्री सुभाषचन्द जी छाजेड़ मुथा सुपुत्र स्व. श्री बिसनचन्द जी मुथा का १ अगस्त २००६ को ५१ वर्ष की वय में प्रत्याख्यानपूर्वक स्वर्गवास हो गया। धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न अपने पीछे तीन पुत्रियों का परिवार छोड़कर गए हैं।

बालोतरा- सुश्राविका श्रीमती कुंकुंदेवी जी श्रीश्रीमाल धर्मपत्नी स्व. श्री चम्पालाल

जी श्रीश्रीमाल, कनाना वालों का २३ जुलाई २००६ को स्वर्गगमन हो गया। वे प्रतिदिन ६-७ सामायिक स्थानक में करती थीं। धर्मनिष्ठ, व्रतनिष्ठ श्राविकारत्न अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं। सुपुत्र श्री अशोक जी, किशोर जी एवं दिलीप जी सहित समस्त परिवार रत्नसंघ के प्रति समर्पित है। - *मीठालाल मधुर*

अजमेर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री छोटमल जी कटारिया का ८३ वर्ष की वय में

स्वर्गगमन हो गया। आपकी आचार्यप्रवर हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीरा, उपाध्याय श्री मान एवं संत-सती मण्डल के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धाभक्ति थी। आप सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. की निश्रा की व्याख्यात्री महासती श्री कौशल्याजी म.सा. के सांसारिक बड़े पिताजी थे। आप श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अजमेर एवं श्री वर्द्धमान स्था. जैन श्रावक संघ, अजमेर के वर्षों तक कोषाध्यक्ष रहे तथा ओसवाल औषधालय, धर्मादा कमेटी आदि संस्थाओं से भी सम्बद्ध रहे। आपकी प्रेरणा से समस्त परिवार धर्मनिष्ठ है एवं संघ-सेवा में तत्पर है।

-*नेमीचन्द कटारिया*

जयपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री उमरावमल जी ढड्ढा का ११ अगस्त २००६ को ८३

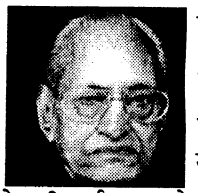

वर्ष की वय में स्वर्गगमन हो गया। आपने अ.भा. साधुमार्गी जैन श्रावक संघ के उपाध्यक्ष, श्री अमर जैन रिलीफ सोसायटी के अध्यक्ष एवं श्री सुबोध शिक्षा समिति के अध्यक्ष के रूप में स्मरणीय सेवाएँ दीं। आप रत्नव्यवसाय में भी ख्यातिप्राप्त जौहरी थे। श्री वर्द्ध.स्था. जैन श्रावक संघ, जयपुर के आप उपाध्यक्ष रहे। धर्मनिष्ठ एवं सक्रिय पिता की स्मृति में सुपुत्र श्री पदमचन्द जी ढड्ढा ने विभिन्न योजनाओं में ८३ लाख रुपये

के योगदान की घोषणा की है।

सैंधवा- धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ, उदारमना सुश्रावक श्रीलालचन्द जी सुराणा का ८७ वर्ष की दीर्घायु में २३ अगस्त २००६ को सैंधवा में स्वर्गवास हो गया। आप धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यों में जीवन पर्यन्त सदैव अग्रणी रहे। आपने यावत् जीवन सभी सम्प्रदाय के संत-सतियाजी म.सा. की वैयावृत्य विशेषकर विहार यात्रा में अनुकरणीय एवं अनुमोदनीय सेवा-शुश्रूषा की। आपके ही संस्कारों से प्रेरित हो पूरा परिवार इस पुनीत सद्कार्य में पूर्ण मनोभाव से समर्पित है। आपके आजीवन जमीकंद त्याग एवं शीलव्रत के नियम थे। आप नियमित सामायिक एवं स्वाध्याय करते थे।

जोधपुर- सुश्रावक श्री माणकचन्द जी भण्डारी सुपुत्र स्व. श्री प्रेमराज जी भण्डारी का ३ अगस्त २००६ को आकस्मिक देहावसान हो गया। आप संघसमर्पित एवं धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न थे।

चेन्नई- सुश्राविका श्रीमती तारासुन्दर जी सुराणा धर्मपत्नी श्री नीलमचन्द जी सुराणा का २७ जुलाई २००६ को हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सरल एवं सादगीपूर्ण था। धर्म के प्रति आपको अटूट श्रद्धा थी। आप साधु-संतों की हमेशा सेवा करती थीं। पूरा सुराणा परिवार स्व. युवाचार्य श्री मधुकरमुनि जी म.सा. के अनन्य भक्तों में से है। सुराणा परिवार ने आपकी श्रद्धांजलि में एक बड़ी रकम धार्मिक, सामाजिक एवं जनकल्याणकारी योजनाओं में लगाने की घोषणा की है।

-रिखबचन्द लोढ़ा

जोधपुर- अनन्य गुरुभक्त दृढ़धर्मी श्री सूरजराज जी नाहटा (सुपुत्र स्व. सुश्रावक श्री रामराज जी नाहटा) का १७ अगस्त, २००६ को असामयिक स्वर्गगमन हो गया। आप रत्नसंघ के समर्पित श्रावकरत्न थे। आपने संत-सतीवृन्द के विचरण-विहार में अपूर्व सेवा-लाभ लिया। संघ-सेवा, संत-सेवा, स्वधर्मि-वात्सल्य, श्रुत-सेवा में आपका तन-मन-धन से एवं समर्पित भाव से सहयोग रहता था।

पाली-मारवाड़- अनन्य गुरुभक्त श्री शांतिलाल जी सुपुत्र श्री नथमल जी पगारिया का स्वर्गवास ४ अगस्त २००६ को हो गया। आप धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न थे।

-ताराचन्द सिंघवी

दिल्ली- पाली के मूल निवासी सुश्रावक श्री राणमल जी बरवावाले का दिल्ली में जुलाई माह में स्वर्गगमन हो गया। उन्होंने उपाध्यायप्रवर के सं. २०४७ के दिल्ली

चातुर्मास में मासखमण तप किया था। *-ताराचन्द सिंघवी*

बालोतरा- सुश्राविका श्रीमती खम्मादेवी धर्मपत्नी श्री रिखबचन्द जी कोठारी, कनाना निवासी का ३० जून को निधन हो गया। आप धर्मनिष्ठ, सेवाभावी एवं तप-त्याग में तत्पर श्राविका थीं। आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के कनाना पधारने पर तेरापंथ के वरिष्ठ सुश्रावक होते हुए भी कोठारी सा. एवं सम्पूर्ण परिवार ने सेवा का लाभ लिया। *-मीठालाल मधुर*

धुलिया- सुश्रावक श्री कन्हैयालाल जी बाफना का १७ जुलाई २००६ को देहावसान हो गया। आप नियमित रूप से स्थानक में सामायिक-प्रतिक्रमण एवं धर्माराधना करते थे।

बालोतरा- सुश्रावक श्री मांगीलाल जी सालेचा का ४ जुलाई २००६ को स्वर्गगमन हो गया। आप सेवाभावी, सहज, सरल एवं सुलझे हुए विचारों के धनी थे। शान्तमना एवं धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न अपने पीछे श्रद्धानिष्ठ भरापूरा परिवार छोड़ कर गए हैं।

धुलिया- सुश्रावक श्री संचालाल जी रघुनाथमल जी बरडिया मूलनिवासी वड़गाँव (जिला-जलगाँव) का १७ अगस्त २००६ को ७२ वर्ष की वय में देहान्त हो गया। आप उदारमना एवं धर्मनिष्ठ थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

जिनवाणी का सदस्य बनाने वाले फर्जी लोगों से सावधान रहें

जैन पेपर, रेडियो मार्केट, सूर्या चेम्बर, जयपुर के नाम से बिल देकर कोई व्यक्ति 'जिनवाणी' का सदस्य बना रहा है। जिनवाणी के पाठकों से निवेदन है कि वे ऐसे फर्जी व्यक्तियों के चक्कर में न आयें। ऐसे व्यक्तियों की शिकायत पुलिस को भी की जा सकती है। जिनवाणी का सदस्य वही बना सकता है जिसके पास जिनवाणी, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की रसीद हो।

-प्रेमचन्द जैन, मंत्री
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्ड, जयपुर

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

५००/- रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

१०५२७ श्री सुरेशचन्द जी जैन, अहमदाबाद(गुजरात)
१०५२८ Smt. S.Nidhi Ji Kothari, Chennai (T.N.)
१०५२९ श्री सुरेन्द्र जी कर्णावट, जयपुर (राज.)
१०५३० श्री संजीव जी राजीव जी जैन, गंगापुर सिटी, सवाईमाधोपुर (राज.)
१०५३१ श्री राजेश कुमार जी ढड्ढा, जयपुर (राज.)
१०५३२ श्री सतीश जी सिंघवी, जयपुर (राज.)
१०५३३ श्री गौतमचन्द जी धर्मेन्द्र कुमार जी चौपड़ा, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
१०५३४ श्री मोहनलाल जी सोहनराज जी भंसाली, जसोल, बाड़मेर (राज.)
१०५३५ श्री छगनराज जी रविन्द्र कुमार जी सालेचा, जोधपुर(राज.)
१०५३६ Shri Mahaveer chand Ji Srisrimal, Coimbatore (T.N.)
१०५३८ श्रीमती सुधा जी धर्मपत्नी श्री जे.के.जैन, जयपुर (राज.)
१०५३९ श्री वीरेन्द्र कुमार जी जैन, रंगपुर रोड, कोटा जंक्शन (राज.)
१०५४० Shri Bharat S. Shah Ji, Mumbai (M.H.)
१०५४१ Shri Amit Ji Jain, Mumbai (M.H.)
१०५४२ Shri J. Dharam chand ji Bermecha, Chennai(T.N.)
१०५४३ श्री सोहनलाल जी गौतमचन्द जी गुलेच्छा, रायपुर, पाली-मारवाड़(राज.)
१०५४४ Shri Dharamchand Ji Gautam chand ji Marelcha, Mysore (K.T.)
१०५४५ श्री राजेन्द्र कुमार जी मेहता, भीलवाड़ा (राज.)
१०५४६ Shri Manish Ji Bafna, Andheri(W), Mumbai (M.H.)
१०५४७ श्री प्रमोद कुमार जी मोदी, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर (राज.)
१०५४८ श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन, बयाना, भरतपुर (राज.)
१०५४९ Shri Hitesh Ji Suresh Ji Bohra, Bangalore (K.T.)
१०५५० श्रीमती माया जी जैन, वासन गेट, भरतपुर (राज.)
१०५५१ श्री नीरज जी जैन, महुआ, दौसा (राज.)
१०५५२ श्री विनय कुमार जी जैन, बरगमा, करौली (राज.)
१०५५३ श्री मनोज जी जैन, बरगमा, करौली (राज.)
१०५५४ श्री चिराग जी जैन, गंगापुर सिटी, सवाईमाधोपुर (राज.)
१०५५५ श्री कमलचन्द जी जैन, गंजखेरली, अलवर (राज.)
१०५५६ Shri Gautam chand Ji Bhandari, Madurai (T.N.)
१०५५७ श्री चन्द्रसिंह जी जितेन्द्र जी चौधरी, जोधपुर (राज.)
१०५५९ Shri Shantipal Ji Bhansali, Kolkata (W.B.)
१०५६० श्रीमती कुसुम जी जैन, दिल्ली
१०५६१ श्री मंगलचन्द जी जैन, अशोकनगर (म.प्र.)

१०५६२ डॉ. जम्बूकुमार जी जैन, अशोकनगर (म.प्र.)
१०५६३ श्री बाबूलाल जी शांतिलाल जी बाघमार, जबलपुर (म.प्र.)
१०५६४ श्री अनिल कुमार जी संचेती, जयपुर (राज.)
१०५६५ श्री लक्ष्य जी जैन, जयपुर (राज.)
१०५६६ श्री भंवरलाल जी गोगड़, सुराणी, जोधपुर (राज.)
१०५६७ श्री भोपालचन्द जी गोगड़, आगोलाई, जोधपुर (राज.)
१०५६८ श्री अमित जी मेहता, जयपुर (राज.)
१०५६९ श्री मितेश जी डागा, बेंगलोर (कर्नाटक)
१०५७० श्री महावीरचन्द जी भण्डारी, बैंगलोर (कर्नाटक)
१०५७१ श्री रमेशचन्द जी हंसराज जी कर्णावट, भवानीनगर, अहमदनगर (महा.)

अर्द्धमूल्य योजना के अन्तर्गत आजीवन सदस्यता

(सुश्राविका श्रीमती कपूरीदेवी जैन, अलीगढ़-टोंक की स्मृति में)

१०५३७ श्री दीपक कुमार जी बाफना, धमतरी (छत्तीसगढ़)
१०५५८ श्री शैलेन्द्र जी हिमानी जी जैन, सूरतगढ़, श्रीगंगानगर (राज.)

चेन्नई से प्राप्त अर्थ सहयोग के अन्तर्गत आजीवन सदस्यता

१०५७२ सौ. विमला बाई जी मिश्रीलाल जी खिंवसरा, धूले (महा.)

जिनवाणी हेतु साभार

५१०००/- श्री चाँदमल जी कर्णावट, उदयपुर, अपने सुपुत्र श्री आनन्द जी कर्णावट के सुपुत्र चि. अभिषेक जी के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में परिवार की ओर से सप्रेम भेंट।

११०५५/- श्रीमती लीला जी सुराणा की ओर से सप्रेम भेंट।

५१००/- श्री पारसचन्द जी हीरावत, मुम्बई, सौ. कां. निशा सुपुत्री श्रीमती शकुन्तला पारसचन्द जी हीरावत का शुभविवाह चि. ऋषभ जी जैन सुपुत्र श्री विजयकुमार जी एवं पुष्पा जी जैन, दिल्ली के साथ ६.७.२००६ को सम्पन्न होने की खुशी में।

२१००/- श्री सोहनलाल जी बुधमल जी, सम्पतराज जी, राजेन्द्र कुमार जी बाघमार, मैसूर, श्री अभिषेक जी के आठ की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

२१००/- श्री संदीप जी धीरज जी भण्डारी, फरीदाबाद, अपनी सुपुत्री एवं सुपुत्र के विवाह उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

११०१/- श्री शांतिलाल जी बाघमार, गोरखपुर-जबलपुर, श्री बाबूलाल जी बाघमार की मासखमण की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

११००/- श्री मोहनलाल जी पारसमल जी बोहरा, तिरुवन्नामल्लै, आचार्यप्रवर के दर्शनलाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

११००/- श्री दौलत जी, अशोक जी, सुनील जी भण्डारी, जोधपुर, अपनी माताश्री श्रीमती ज्ञानकँवर जी भण्डारी धर्मपत्नी स्व. श्री माणकमल जी भण्डारी का संथारे सहित समाधिमरण दिनांक १७.८.२००६ को हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

११००/- श्री विमलचन्द जी रिखबचन्द जी, सुभाषचन्द जी, अशोक जी, माणिकचन्द जी धोका, मैसूर, सौ. ललिताबाई जी धर्मपत्नी श्री सुभाषचन्द जी धोका के बंगारपेट में

पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में मासखमणोपरान्त ३२ की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

११००/- श्री दलपतराज सा, किशोर सा, मिलापचन्द सा छाजेड़ (कोसाणा वाले), हैदराबाद, अपने भ्राता श्री सुभाषचन्द जी सुपुत्र स्व. श्री बिशनराज जी छाजेड़ के प्रत्याख्यान पूर्वक दि. १.८.२००६ को स्वर्गगमन होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

११००/- श्री पारसमल जी रेड, पाली, अपने सुपुत्र श्री धर्मेश कुमार एवं पुत्रवधू सौ. विनीता द्वारा अठाई तप के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१०००/- श्री दिनेश जी चोरडिया, चेन्नई।

१०००/- श्री प्रवीणकुमार जी महेन्द्रकुमार जी कुम्भट, जोधपुर, अपने पिताश्री श्री कनकमल जी कुम्भट के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

७५०/- श्री रिखबचन्द जी सोढ़ा, चेन्नई, श्रीमती तारासुन्दर जी सुराणा धर्मपत्नी श्री नीलमचन्द जी सुराणा का स्वर्गवास दिनांक २७.७.२००६ को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

५११/- श्री पूरणराज जी, भागचन्द जी पारख, जलगाँव, पूज्य आचार्य भगवन्त के दर्शनलाभ की खुशी में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री भंवरलाल जी, प्रदीप जी, पारस जी डोसी, हैदराबाद, श्रीमती विजयलक्ष्मी धर्मपत्नी श्री पारस कुमार जी डोसी के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री धर्मेन्द्र जी जैन, जयपुर, श्रीमती अभिलाषा जी हीरावत, मुम्बई सुपुत्री श्री प्रेमचन्द जी जैन धर्मपत्नी श्री अजय जी हीरावत, पुत्रवधू श्री प्रेमचन्द जी हीरावत की अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री धर्मेन्द्र जी जैन, जयपुर, श्रीमती इतिश्री जी बम्ब सुपुत्री श्री प्रेमचन्द जी जैन, जयपुर, धर्मपत्नी श्री अरूणकुमार जी बम्ब हाल निवासी हांगकांग पुत्रवधू श्री विनयचन्द जी बम्ब के अनार्य देश (हांगकांग) में पर्युषण पर्व में तेले व एकाशन की तपस्या करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री अभिषेक जी कर्णावट, जयपुर द्वारा अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्रीमती कमलादेवी धर्मपत्नी श्री शांतिलाल जी पींचा, रामेश्वर नगर, अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में।

५००/- श्री मांगीलाल जी प्रेमचन्द जी जीरावला, जोधपुर, सौ. मंजू प्रेमचन्द जी के ११ की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री प्रकाशचन्द जी सुशील कुमार जी डूंगरवाल, थाँवला, पूज्य आचार्य भगवन्त के दर्शन हेतु जन्मतिथि एवं बहिन की सर्विस के उपलक्ष्य में भेंट।

५००/- श्री पदमचन्द जी ढड्ढा, जयपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री उमरावमल जी ढड्ढा का स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

५००/- श्री अशोक कुमार जी बंशीलाल जी कर्णावट, सौ. वनिता जी, कु. साक्षी जी एवं दर्शना जी, विमलाबाई जी नन्दलाल जी चोरडिया, निफाड़ के द्वारा पूज्य आचार्य भगवन्त के दर्शनलाभ होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री पदमचन्द जी सुरेशचन्द जी बाफना, भोपालगढ़, हालमुकाम जोधपुर, श्रीमती शांतिदेवी धर्मपत्नी श्री पदमचन्द जी बाफना एवं श्रीमती संतोष जी धर्मपत्नी श्री प्रवीण कुमार जी बाफना के ९ की तपस्या एवं श्रीमती सरिता धर्मपत्नी श्री अरविन्द जी बाफना के ८ की तपस्या के उपलक्ष्य में।

५००/- श्री कनकमल जी दौलतमल जी चोरडिया, चेन्नई, उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ एवं महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. के पीपाड़ में दर्शन करने एवं ११ की तपस्या करने के उपलक्ष्य में।

३००/- श्री श्रीपाल सा मेहता, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती शान्ति जी मेहता की पुण्यतिथि के अवसर पर भेंट।

२५१/- श्री हंसराज जी जैन, सवाईमाधोपुर।

२५१/- श्री गौतमचन्द जी भंडारी, मदुराई, अपने पूज्य पिताजी श्री माणकचन्द जी भंडारी का दिनांक ३.८.०६ को देहावसान होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

२५१/- श्री के.सी. डोसी., ब्यावर, स्व. श्रीमती रेखा जी डोसी धर्मपत्नी श्री शैलेन्द्र जी डोसी की चतुर्थ पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

२५१/- श्रीमती सरला जी राजेश जी भण्डारी, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री अमित जी भण्डारी के वर्ष २००६ में एम.बी.ए. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने एवं एच.डी.एफ.सी. बैंक में नियुक्ति पाने की खुशी में भेंट।

२५१/- श्री उम्मेदमल जी जैन, चौथ का बरवाड़ा, अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

२५०/- श्री श्रीपाल जी मेहता, जोधपुर।

जीवदया हेतु साभार

११०१/- श्रीमान कुशलचद जी कमलेश जी बागरेचा मेहता, पल्लीपट्ट (तमि.), निवास स्थान क्रीत भवन में आवश्यक परिवर्तन करवाने एवं भवन का नामकरण 'पारस' करने के उपलक्ष्य में भेंट।

११००/- श्री संदीप जी धीरज जी भण्डारी, फरीदाबाद, श्री राजेन्द्र जी भण्डारी की पुण्यस्मृति में भेंट।

५०१/- श्री रूपराज राजेन्द्रकुमार सुरेश जी मेहता, जोधपुर वाले, मुम्बई, चि. अंकित मेहता के तेले की तपस्या का पारणा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

५००/- श्री महावीरचन्द जी सिंघवी, जोधपुर।

५००/- श्रीमती चाँद जी एवं श्री सुरेश जी भण्डारी, जोधपुर, अपनी सुपुत्री दिव्या सांड धर्मपत्नी श्री रीतेश जी सांड के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में।

५००/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, आगोलाई।

५००/- श्री जैन श्री संघ, मांडल।

३०१/- श्री भंवरलाल जी, प्रदीप जी, पारस जी डोसी, हैदराबाद, श्रीमती विजयलक्ष्मी जी धर्मपत्नी श्री पारसकुमार जी डोसी के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

२५१/- श्री गौतमचन्द जी भंडारी, मदुराई, अपने पूज्य पिताजी श्री माणकचन्द जी भंडारी का दिनांक ३.८.०६ को देहावसान होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

२५१/- श्री देवेन्द्रनाथ जी मोदी, जोधपुर, अपनी बहन स्व. श्रीमती विमलाबाई जी भंडारी धर्मपत्नी स्व. श्री रणजीतसिंह जी भण्डारी की १६वीं पुण्यतिथि संवत्सरी पर स्मरणांजलि स्वरूप भेंट।

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार

५०१/- श्री दिलीप जी भंडारी, रत्नागिरी, स्व. श्री सुगनचन्द जी भंडारी की प्रथम पुण्यतिथि दिनांक १७.८.२००६ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

३०१/- श्री भंवरलाल जी, प्रदीप जी, पारस जी डोसी, हैदराबाद, श्रीमती विजयलक्ष्मी जी धर्मपत्नी श्री पारसकुमार जी डोसी के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

स्वाध्याय संघ, शाखा बजरिया को प्राप्त साभार

५०१/- श्री उच्छबचन्द जी पारसचन्द जी 'एण्डवा वाले', बजरिया, सवाईमाधोपुर, सुपुत्र के शुभ विवाहोपलक्ष्य में भेंट।

५०१/- श्री प्रेमराज जी जैन, सवाईमाधोपुर, चि. पारसचन्द के शुभ विवाहोपलक्ष्य में भेंट।

आगामी पर्व

आश्विन कृष्णा १४	गुरुवार, २१.०९.२००६	चतुर्दशी, पक्खी
आश्विन शुक्ला ७	शुक्रवार, २९.०९.२००६	आयंबिल ओली प्रारम्भ
आश्विन शुक्ला ८	शनिवार, ३०.०९.२००६	अष्टमी
आश्विन शुक्ला १०	सोमवार, ०२.१०.२००६	दशहरा, पूज्य आचार्य श्री भूधर जी म.सा. की पुण्यतिथि
आश्विन शुक्ला १४	शुक्रवार, ०६.१०.२००६	चतुर्दशी, पक्खी
आश्विन शुक्ला १५	शनिवार, ०७.१०.२००६	आयंबिल ओली पूर्ण
कार्तिक कृष्णा १	शनिवार, ०७.१०.२००६	पूज्य आचार्य श्री हमीरमल जी म.सा. की १५३वीं पुण्यतिथि
कार्तिक कृष्णा ८	शनिवार, १४.१०.२००६	अष्टमी, पूज्य आचार्य श्री गुमानचन्द्र जी म.सा. की २०५वीं पुण्यतिथि

हार्दिक क्षमायाचना

सम्वत्सरी महापर्व के पावन अवसर पर समस्त विद्वान् लेखकों एवं पाठकों से विगत वर्ष में हुई ज्ञात-अज्ञात भूलों के लिए हार्दिक क्षमायाचना।

-सम्पादक

दीक्षा महोत्सव, संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं की कार्यकारिणी एवं वार्षिक साधारण सभा की सूचना

कार्यक्रम

रविवार ८ अक्टूबर २००६

संघ-संरक्षक मण्डल, शासन सेवा समिति एवं संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारियों की बैठक — मध्याह्न २ बजे से

संघ-संरक्षक मण्डल की बैठक — सायं ८ बजे से

कार्यकारिणी बैठकें

सोमवार, ९ अक्टूबर २००६

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल — मध्याह्न १२ से ३ बजे

अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल — प्रातः ७.३० बजे से

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् — प्रातः ७.३० बजे से

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड — अपराह्न ३ बजे से

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ — अपराह्न ३ बजे से

गुणी अभिनन्दन एवं सम्मान समारोह

सोमवार, ९ अक्टूबर २००६ — सायं ७.३० बजे से

वार्षिक साधारण सभा संयुक्त

मंगलवार, १० अक्टूबर २००६ — मध्याह्न १२ से ३ बजे

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ

कार्यकर्ता सम्मान समारोह

मंगलवार, १० अक्टूबर २००६ — अपराह्न ३.३० बजे से

अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

दीक्षार्थी सम्मान समारोह

मंगलवार १० अक्टूबर २००६ दीक्षार्थी बहिनें व दीक्षार्थी परिवार — सायं ७ बजे से

वरघोड़ा एवं दीक्षा

बुधवार, ११ अक्टूबर २००६ दीक्षार्थी बहिनों की शोभायात्रा — प्रातः ७ बजे से

बुधवार, ११ अक्टूबर २००६ दीक्षा महोत्सव — प्रातः १० बजे से

-नवरतन डागा, महामंत्री

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर

समता मोक्ष का साधन है तो उसका उलटा 'तामस' नरक का द्वार है। - आचार्य श्री हस्ती

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, Chandrappan Street
Chennai-600079(T.N.)
Ph.# 25258436, 25298130

Branches:

Bhagawan Motors, Chennai-53, Ph.# 26251960
Bhagawan Cars, Chennai-53, Ph.# 26243455/66
Balaji Motors, Chennai-50, Ph.# 26247077
Padmavati Motors, Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.# 24854526

JAI GURU HASTI

JAI GURU HEERAMAN

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Live & Let Live

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A DIVISION OF PRITHVI SOFTECH LIMITED

REGD. OFFICE : 33, Montieth Road, Egmore, Channai-600008

CHENNAI	:	**044-28553185, 52145478**
BANGALORE	:	**080-22103267, 22103268**
HYDERABAD	:	**040-23414333, 23414777**
GOA	:	**0832-2420675, 2231190**

www.prithvifx.com

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD — **NAVARATHAN KAVAD**

RAVINDRA KAVAD — **ASHOK KAVAD**

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056
Phone No.: 044-2627 3165, 2627 4165

Jai Guru Hasti ! Jai Mahaveer ! Jai Guru Heera Maan !

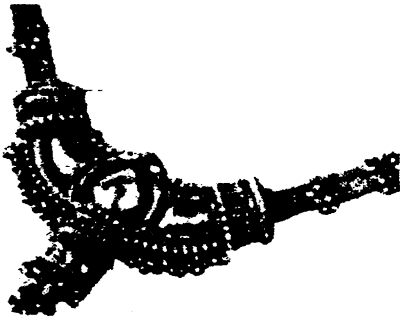

Best Compliments from

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916.KDM)

22 Ct. Gold! 24 Ct. Trust!

No.4, Car Street,
Poonamallee, Chennai - 600 056.
Phone : 26272609, 55666555.

गुरु हस्ती के दो फरमान।
सामायिक स्वाध्याय महान॥

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

No.5, Car Street,
Poonamallee, Chennai - 600 056.
Phone : 26272906, 55689588.

जीवन को बनाने या बिगाड़ने का
सारा दायित्व चरित्र पर ही निर्भर है।
—आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

BRIGHT STAR DIAMOND CO., LTD.

Diamond & Precious Stones

Ghisalal Gyanchand Prakashchand Bamb

410 The Executive House,
12th Floor, Suite 160-161,
Suriwongse Road,
BANGKOK 10500, Thailand
G.P.O. Box No. 2088

Tel : 237-8051, 237-8052
234-7648
Fax : (662) 237-6110
Res : 437-0910
Mobile : 01-6285733

Gurudev

SURANA

INDUSTRIES LIMITED

Manufacturers & Exporters of

Symbolises the Aspiration of Discerning Steel Buyers !

Premium Quality Steels, viz., HSD / CTD Bars, MS Rounds Structurals Like Flats, Channels Angles and Squares

Always Use SURANA STEELS to Highlight your House/Industry

Regd. Cum Corporate Head Office

29, Whites Road, II Floor Royapettah, Chennai 600 014.
Grams : **GURUHASTI**
Phone : 28525127 (3 Lines) Fax : 044 28521143
E-mail : suranast@vsnl.com
Website : www.suranaind.com

Works

F-67, 68 & 69 SIPCOT Industrial Complex
Gummidipoondi 601 201, Tiruvallur Dist. Tamilnadu
Phone : 954119 222881 Telefax : 954119 222880

Sales Yard

30, G.N.T. Road, Madhavaram,
Chennai 600 110
Phone : 25375531/32/33 Fax : 044 25375400

Jai Guru Hasti Jai Guru Heera Jai Guru Man

विश्व को आज शस्त्रधारी सैनिकों की नहीं अपितु शास्त्रधारी सैनिकों की आवश्यकता है।

आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliment From :

NARENDRA HIRAWAT

Flat No. 1, Building No. 2
Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg,
Matunga (West), Mumbai-400016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-56669707, 24370713
Opera House Office : 022-30024281
Mobile : 98210-40899

जो संघ में भक्ति रखता है और शासन की उन्नति करता है,
वह प्रभावक श्रावक है।
आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा.

With Best Compliments From :

MJ

MAHENDRA
JEWELLERS

No. 1000-1001.
Thiruvottiyur High Road
Kaladipet, Chennai-600 019

Phone : (O) 044-25991313, 25992300, 25992400
Fax : 044-25994466
Phone : (R) 044-25993671, 25993101, 25995588

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08

Presenting
Premium properties by Kalpataru

KALPATARU ROYALE

Near Cine Planet, Off Sion Circle,
Sion

KALPATARU ESTATE

Opp. Fantasyland,
Andheri (E)

SIDDHACHAL

Pokhran Road No.2,
Thane (W)

Other Projects :

Kalpataru Habitat, **Parel** • Kalpataru Gardens, **Kandivli (E)**
Tarangan, **Thane (W)** • Kamdhenu, **Mulund (E)**
Kalpataru Regency II, **Pune**

KALPA-TARU

111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai - 400 021. India
Tel.: 022-2282 2888, 2281 7171 • Fax: 022-2204 1548, 2288 4778
Email : sales@kalpataru.com • Website : www.kalpataru.com

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।